

सुडाबहोतेरी

वारता.

चोपाई तथा दूरवछाया

साथे.

मुंबई मध्यें

जगदीश्वर छापखानामां

छपावी छे.

संवत् १९४१

सने १८८५.

सुंदर ब्रामदारनी वारता.

॥ श्रीगणेशायनमः ॥ ॥ श्रीशारदायैनमः ॥ ॥
॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ ॥ श्रीगोपीजनवल्लभायनमः
॥ ॥ अथ सुंदर ब्रामदारनी वारता प्रारंभः ॥ ॥
पूरव छाया ॥ ॥ प्रथम शारदा वरणवुं ॥ गणपति
लागुं पाय ॥ अविचल वाणी आपजो ॥ मया करो तमे न
माय ॥१॥ आख्यान कहुं सुंदर तणुं ॥ जे सत्यवादी कहे
वाय ॥ सांभळतां सुख उपजे ॥ मानो नाशा पुरी था
य ॥२॥ वैताल कहे तमे सांभळो ॥ सदगुणी राजा वीर
॥ सुणीने उत्तर दिजो ॥ आख्यान कहुं छुं धीर ॥३॥
नगर एक कनकावती ॥ त्यां कनकसेन राजन ॥ राज
ज्ञाति रणियामणुं ॥ जोईने हरखे मन ॥४॥ ॥
चोपाई ॥ ॥ ते नगरी छे उत्तर दिशे ॥ तेमां वरण
अढारे वसे ॥ राजकुळवासे छत्रीश ॥ ब्राम्हण वसे स
हस्त्र बत्रीश ॥ वेहेवारीआ वसे सहस्त्र अढार ॥ क्ष
त्री वसे त्यां सहस्त्र चार ॥ पांच सहस्त्र घर साळवी
तणां ॥ छीपावा सो वसे त्यां घणा ॥५॥ अ० सहस्त्र
वसे सोनी कंसार ॥ रंगारा त्यां सहस्त्र चार ॥ सात
सहस्त्र घर कायस्त तणां ॥ वणजारा वसे छे घणा ॥
॥६॥ लाटने धीतारा वसे छे सार ॥ वणजाराने व
णीरे लुहार ॥ घांची मोची रहे छे सुतार ॥ तेमां वसे
छे वरण अढार ॥७॥ ते नगरी वखाणवी नव जाय ॥
त्यां कनकसेन राजाय ॥ पुत्र चार राजाने छेय ॥ महा
बुध्धिवंत नाहानो तेह ॥८॥ ॥ पूरव छाया ॥ ॥
कनकसेन राजा सही ॥ तेने चार छे तन ॥ पद्मावती
नारी सही ॥ वैलोचिन परधान ॥१०॥ ॥ चोपाई ॥

॥ सजणसेन मोटानुं नाम ॥ मानसेन बीजानुं नाम ॥ धे
रमसेन त्रीजो कहेवाय ॥ सुंदरसेन तो चोथो राय ॥१४॥
॥ ॥पुरव छाया॥ ॥एक दिवस तेने समे ॥ सल
रीराजन ॥ सहु छे ...आवीआ॥ चारे ने निज तन ॥
॥१२॥ ॥चोपाइ॥ ॥मारा पुत्रने पुछे राजन ॥
कोने नशीजे तमे तुम जन ॥ जुठुं बोले तेने मारी जाण
॥ साचुं कहुं छुं तुने परमाण ॥१३॥ ॥पुरव छाया॥
॥कुंवर वीचारी बोलीआ ॥ धीरज राखी मनमां ॥तम नशीजे
तमी ... सही पीताजी आपुं अंन ॥१४॥ जाम छोरुं तम त
णा ॥जुठुं नहीं लगार ॥सत्य वचन तमने कहुं ॥ साचुं मानो
राय ॥१५॥ ॥चोपाइ॥ ॥तेडयो बीजे पोतानो तं
न ॥ तेने जइ कह्युं वचन ॥ साची वात कहो आदन ॥ कोने
नशीजे तमे तु जन ॥१६॥ नथी जुठुं मांहे शो लगार ॥ सा
ची वात कहो नीरधार ॥ जुठुं बोलने कहुं नीरधाण ॥ नहिं
तो तुजने मारी जाय ॥१७॥ ॥पुरव छाया॥ ॥
बीजे पुत्र बोल्यो सही ॥ सुणो पीताजी वचन ॥ तम नशी
जे तमे ... सही ॥ पीताजी आपुं अंन ॥१८॥ मेहेडी मांहि
तने मारी आ ॥ एवां वचन लगार ॥ तम नशीजे लोणवुं
॥ साचुं कहुं नीरधार ॥१९॥ ॥चोपाइ॥ ॥
त्रीजे पुत्र तेणी वार ॥ राजा बोल्यो मुजथी वीचार ॥
साचुं कुंवर वदे वचन ॥ कोने नशीजे तमे तु जन ॥२०॥
तेतो पुत्र वदे तेणी वार ॥ सांभळो पीताजी कहुं रे वीचार
॥ तम थकी आवी पारो जाय ॥ ते माटे बोलुं नव बोलाय
॥२१॥ आपुं छुं तमारी गात्र ॥ तेमां जन ते कोण न
मात्र ॥ एम कहीने भाय ॥ तेडयो चोथो ते सुंदर राय ॥
॥२२॥ ॥पुरव छायो॥ ॥रायें सुंदर ते
डीओ ॥ नानडीयो ते कुमार ॥ तेने रायें पुछीयुं ॥ साचुं क

हि आणीयार ॥२३॥ लाड कयायो पुत्र सही ॥ सायुं जोलो न
वचन ॥ ते माटे नमने डर्‍ं ॥ डेने नशीजे नमे तुं अंन ॥२४
॥ वचन अेवां सांलणी ॥ सुंदर जोल्यो तेणीवार ॥ पीता
मुरुज दीसे सही ॥ धीड धीड अवतार ॥२५॥ ॥ थो
पाठे ॥ ॥ सुंदर जोल्यो मुजथी न... ॥ पीताजी डांडे
मन सुन्लण ॥ नशीज सरवना लेणांतात ॥ तेमां जोटी न
हिं डांडे वात ॥२६॥ अहंडार डांडे नव आणीअे मन ॥
सहुने आपनारो कुगन्नवन ॥ ओदरमां नयरहे छे -
न्यार ॥२६॥ डरे छे देव मोरार ॥२७॥ आगणथी दुध
ताने होय ॥ पछी नन्म त्यां पामे सोय ॥ प्राणी माथे ड.
पाडे लार ॥ जोटी थाय तेनो अवतार ॥२८॥ नन्न हि
यो तमे मने तात ॥ नशीज डरे ने साची वात ॥ नानो पु
त्र अेम जोल्यो वाण ॥ पीता सायुं मानो प्रमाण ॥२९॥
॥ ॥ पुरव छायो ॥ ॥ वयन अेवां सांलणी ॥
त्यारे थई रायने रीश ॥ चरण डेरी आंगळीथी ॥ न्याळा
ओही शीश ॥३०॥ छे डोई अही हानर सही ॥ आना ओ
तारो शणगार ॥ डाढो मारी नजर थकी ॥ नव रहे नग
र मांन्नर ॥३१॥ आप डरमी अेनो सही ॥ नेनुं पार जुं
नण ॥ आडी वात ने डोई डरे ॥ तेने मारी आण ॥३२
॥ डाढ्यो डुंवरने त्यां थडी ॥ ते आव्यो माता पास ॥ आ
जुं मुज हेजी डरी ॥ मायने मुज्यो नीसवास ॥३३॥
॥ योपाई ॥ ॥ माता मुजथी जोली वाण ॥ सां
लण पुत्र तुं चतुर सुन्लण ॥ होणे डुल्यो ते तुजने ता
त ॥ साची डहीने मुजने वात ॥३४॥ जोल्या सुंदर मु
जथी सोय ॥ डरमे लज्युं ते पाछुं न होय ॥ पीताजे डा
ढ्यो मुजने जहार ॥ डुं तो जईश वनमोझार ॥३५॥
वचन सुतनां अेवां सांलणी ॥ राणी मनमां थायुं डण

कणी ॥ राजाने कहे करी परणाम, ॥ शुं गुनो छे पुत्रनो ज
स्वाम ॥३६॥ राजाए क्रोध कर्यो तेणी वार ॥ काढ-
जो नीशा तो तुने मारीश ठार ॥३७॥ ॥पूरवछा
यो ॥ ॥त्यारे रुदन करे नारी घणुं ॥ जोतां ते-
णी वार ॥ पुत्र संघारे वन वीशे ॥ प्राण तजुं आवार ॥
॥३८॥ ॥चोपाई॥ ॥त्रोटक राणी बोली
वाण ॥ सांभळो राजा चतुर सुजाण ॥ हवे हुं तजुं मा
रा प्राण ॥ पुत्र विना न रहुं निरवाण ॥३९॥ पुत्र विना अ
कधुं जोतें जन ॥ पुत्र समुं नहिं कोई धन ॥ राणी करे अति
रुदन ॥ पुत्र विना घर जेवुं वन ॥४०॥ पुत्र विना पिहर ना
हिं मान ॥ पुत्र विना मंदिर समशान ॥ पुत्र विना ऊजड घ
र रान ॥४१॥ मारे रीसाई जाय छे रतन ॥ मेहेर करो
तुं जुग जवन ॥ एम कहीने सुंदर साथे जुवे ॥ सुतने कं
ठ वळगाने रुवे ॥४२॥ सुंदर माताने लाग्यो पाय ॥ आ
शीश घोने तमो मारी माय ॥ तव वचने सहु सीधी था
य ॥ आज्ञा द्यो वनमां जउं माय ॥४३॥ वळी कहे छे
माताने वात ॥ कोनी मात अने कोनो तात ॥ साथे आव
शे पुन्य ने पाप ॥ अमे तो वनमां चालशुं आप ॥४४॥
प्राणी गर्व करे छे जे कोय ॥ पाछळथी तेने पस्तावो -
होय ॥ हुं तो जीवुं कोईथी लगार ॥ मारे पण मरवुं
एकवार ॥४५॥ खोटे खोटो छे आ संसार ॥ ते माटे
लज्जा लेजो करतार ॥ कुशळ हशे आव्यानो श्री हरि ॥ तो
मणाशुं मात तमने फरी ॥४६॥ ॥पूरवछायो॥
॥ शीख आपो मुजने मावडी ॥ हुं छउं वन मझार ॥ जो
जीवशुं तो आवीशुं ॥ नहिं तो कोटिक जुहार ॥४७॥ मा
ता वळती एम वदे ॥ तुज विण नव रहेवाय ॥ नेन प
डे छे नीसरी ॥ मारुं काळज कटका थाय ॥४८॥ ॥

चोपाई॥ ॥आशीष देई कहे पेहेला आवजे ॥
जल्दी चार परणी लावजे ॥ अेम माता दिअे आशीश ॥
तमो जीवजो क्रोड वरीश ॥४९॥ चाल्यो अेकलो वनमोझा
र॥ बहार नीसर्यो राजकुमार ॥ शूकन रुडा थया नीर-
धार ॥ चाल्यो कुंवर ते गाममथी बहार ॥५०॥ ॥पू
रव छाया॥ ॥अेक विप्रवदन सुजडे नर्यो॥ घे
नु सवछी नज्ञ ॥ वर कन्या परणी मळ्यां ॥ देखी री-
झ्यो राजकुमार ॥५१॥ मालण पुष्प लेई मळी ॥ पुत्र-
वती अेक नार ॥ शूकन सहु सारा थया ॥ जोई हरख्यो
ते ठार ॥५२॥ ॥चोपाई॥ ॥ हरख पाम्यो ते
राजकुमार ॥ चाल्यो वेगथी वनमोझार ॥ हाथ मुद्रिका
रही छे जेह ॥ वाटखर्चीमां आपी छे तेह ॥५३॥ शूकन
वंदी चाल्यो जेटले ॥ प्रधान पुत्र मळ्यो तेटले ॥ स्नेही
मित्र ते सुंदरनो थाय ॥ पुछे शा खेद थया क्यां राय
॥५४॥ वात विस्तारी कहो मुज आज ॥ तव कुंवर बो
ल्यो साक्षात ॥ देशवटो दिधो राजन ॥ तेथी हवे जा
शुं अमे वन ॥५५॥ तव प्रधान पुत्र बोल्यो वाण ॥
अमे लेणा आवीशुं जाण ॥ तुज विना ते केम रहेवाय
॥ घडी अेक वरसनी थाय ॥५६॥ सुंदर कहे पाछा जा
ओ तमे वीर ॥ वनमां वेठवुं दुःख शरीर ॥ सुणी मि
त्र बोल्यो त्यां वचन ॥ लेणो आवीश हुं तो राजन ॥
॥५७॥ बेउ मळी चाल्या जेटले ॥ वणकर पुत्र मळ्यो
तेटले ॥ तमे सा खेद थया क्यां भाई ॥ तव मुखथी
बोल्या राय ॥५८॥ देशवटो दीधो रे तात ॥ मांडीने क
हे सरवे वात ॥ वचन कुवरना अेम सांभळी ॥ हुं तो
लेणो आवीश वळी ॥५९॥ त्रण जण मळी चाल्या जेट
ले ॥ कोटवाण पुत्र मळ्यो तेटले ॥ तेणे जुहार कर्यो

महाराज ॥ साजत ज्यां थया तमे ज्ञान ॥ १० ॥ तेनुं उर
रंग शुं छे मन ॥ जम जागण कहो मे वचन ॥ त्यारे कुंव
र बोल्यो मुजथी वाणु ॥ देशवटो दीधो तातें जाण ॥ ११
॥ माटे अमे ते वन चालशुं ॥ कोल्याण पुन्य कहे लेणा-
आवशुं ॥ पछी रत्न कुंवरे त्यां कही ॥ माने नहीं अमे आ
वशुं सही ॥ १२ ॥ चार जण त्यां लेणा थई ॥ वन मां
चाल्या ने त्यां सही ॥ जोजन एक चाल्या जेटले ॥ त्यां-
अचरत दीठुं तेटले ॥ १३ ॥ त्यां सरीता वहे सवणी ॥ ना
हातां पाप जाए सहु जणी ॥ त्यां देवळ शीवनुं सही ॥
चारे कुंवर त्यां आव्या वही ॥ १४ ॥ उत्तम स्थळ जोई ऊ
तर्या त्यांहां ॥ रजनी वासो रहीशुं इहां ॥ चारे कहे गमी
ए वात ॥ स्नान थईने जोठा लवी भात ॥ १५ ॥ एक जी
न मत्ये महीं वाणु ॥ कोई पासे धन नथी जाण ॥ राज-
कुंवरने हाथे जेह ॥ मुद्रिका हती केमनी तेह ॥ १६ ॥ ते ले
ईने वेचवा जाय ॥ द्रव्य लेई आव्या ते राय ॥ त्यां आवी
कीधुं भोजन ॥ चारे जण सुता ते दन ॥ राजकुंवर निद्रा
वश थया ॥ चार जण विचारन कर्यो ॥ १७ ॥ ॥
पूरव छायो ॥ ॥ धन नथी कोई नीकने ॥ जमवुं-
कोईए सार ॥ वनमां दुःख अति घणुं ॥ एम विचारे
नीरधार ॥ १८ ॥ सुतो सुंदर मेहेलीओ ॥ त्रण ऊठी-
जाय ॥ प्रभाते सुंदर ऊठीयो ॥ त्रणे नव देखे कांय ॥ १९
॥ पछे कुंवर चीतें चालीओ ॥ शोच करतो मन ॥ वेला
ए कोईकनुं नथी ॥ एम विचारे मन ॥ २० ॥ ॥
चोपाई ॥ ॥ पछे मुद्रिका वेची जेह ॥ हवे तेनुं
उपन्युं नेह ॥ लई कुंवर त्यांथी चालीयो ॥ त्यांथी सुंदर
पंथे पड्यो ॥ २१ ॥ पछे मास जे चालतां थाय ॥ छे पो
होत्यो ते सुंदर राय ॥ जरथी आवी रही त्यां जण ॥ अ

मवास त्रण थया निरवाण ॥७२॥ अेक नगर आव्युं छे
जय ॥ रतनपुर तेतो कहेवाय ॥ तेमां रतनसेन राज
न ॥ तेजपाल नामें प्रधान ॥ ७३॥ ते नगर ढुकडुं आ
व्युं सार ॥ त्यारे सुंदरे कर्यो वीचार ॥ नहीं जावा मा
हरी पास ॥ मुने त्रण थया उपवास ॥७४॥ त्यारे -
विचार कीधो सार ॥ अेक जाच्यो काष्ठनो भार ॥ ते भा
रो लई उरचर्यो ॥ नगर समीपे जई नीसर्यो ॥७५॥
॥भलो भलो तुं दीन दयाळ ॥ के दहाडे न उपाड्यो भा
र ॥ आव्यो नगर पासे जेटले ॥ शुकन कं थया तेट-
ले ॥७६॥ ॥पूरव छाया॥ ॥शुकन राज
ने केरा थया ॥ वर कन्या परणी जाय ॥ ब्राह्मण वेद
भणे घणा ॥ बोले जय जय कार ॥७७॥ नगरनी शो
भा अति घणी ॥ मुखथी नव कहेवाय ॥ सुवर्ण कण
शे नारीओ ॥ नीर भरीने जाय ॥७८॥ सुंदर चाल्यो
ते नगरमां ॥ आव्यो चौटा मोझार ॥ भारो हेठे मेलो
रह्यो ॥ जोतां तेणे ठार ॥७९॥ ॥चोपाई॥ ॥
सुंदर ऊभो ते चौटा मोझार ॥ भणावे त्यां पंड्यो नीशा
ळ ॥ पंड्यो बोलतो मुखथी वाण ॥ सुंदर केरा भा
रने जाण ॥८०॥ साद कराव्यो जेटले ॥ सुंदर आवी ऊभो-
लो तेटले ॥ भारानुं मूल करीने तमो ॥ जे मागो ते आपुं-
अमो ॥८१॥ त्यारे सुंदर बोल्यो वाण ॥ मुने अन्न जोईओ
नीरवाण ॥ जेट कहुं अंनन जमुं ॥ भारो आपीने जम-
तो रे जमुं ॥८२॥ त्यारे पंड्यो बोल्यो जेह ॥ पेटवडीए -
राख्यो तेह ॥ त्यां तो सुंदर रातज रहे ॥ सुख दुःख जे पडे
ते सहे ॥८३॥ ॥पूरव छाया॥ ॥पछी पेट-
वडीए राख्यो सही ॥ सुंदर तेणी वार ॥ आणे पीजे दि-
ननी रगमे ॥ नित्य लावे काष्ठनो भार ॥८४॥ हाथमां कड

णे पड्यां ॥ त्यारे पंड्यो बोल्यो वचंन ॥ कोमल काया दिसे,
घणी ॥ ए सुखीओ दिसे तन ॥८५॥ ॥चोपाई॥
॥ ॥सुखीयो दिसे एतो रे तंन ॥ एम पंड्यो बो
ल्यो वचन ॥ आप्यु नवा ए काम ॥ निशाळनुं तुं कर-
जे काम ॥८६॥ सुंदर सो ए नव जोसे लगार ॥ सुरजो
नाम पाड्युं तेणी वार ॥ ते निशाळियाने मन लावे ॥ सु
रजो सुरजो कहीने बोलावे ॥८७॥ ॥पूरवछाया॥
॥ ॥सुरजो सुरजो सरवे कहे ॥ वहालो लागे अपार
॥बत्रीश लक्षणो छे खरो ॥ पण जोसे नहीं लगार ॥८८॥
तन थडो तेजपाळनो ॥ भणे निशाळे सार ॥ भाव भावो पं
ड्या तणो ॥ ते राय तणो कामदार ॥८९॥ रतनसेन रा
जसही ॥ तेनी पुत्री एक ॥ ते नीशाळे भणे सही ॥ कुण
वंती नामे तेह ॥९०॥ ॥चोपाई॥ ॥ कुण
वंती भणे ते निशाळ ॥ ते तो रतनसेननी रे बाळ ॥ रु-
पवंतीने कळा अपार ॥ अंतरपट बांधी भणे नीर
धार ॥९१॥ पंडाने मन लावे अपार ॥ जे तेज तणो
अंबार ॥ त्यां भणे तेजपाळनो कुमार ॥ भावे भणे कु
णवंती नार ॥९२॥ ॥पूरवछाया॥ ॥
घणा दिवस एम वही गया ॥ भणतां तेणे ठार ॥ अंत
रपट जीर्णो कर्यो ॥ दीठो तेजपाळ कुमार ॥९३॥ नजरे
नजर भेळी थई ॥ मोह पाम्या बेहु जण ॥ मांहो मां
हे समजी रह्यां ॥ भणतां ते परमाण ॥९४॥ नेन पदार
थ नेनं रस ॥ नेने नेन मिलंत ॥ त्यारे थाय छे प्रीत
डी ॥ त्यारे प्रथम नेन करंत ॥९५॥ प्रीत बंधाणी प्रे
मशुं ॥ नजर थातां एक ॥ जीवन प्राण छे माहरो ॥
वहालो सुजनने विशेक ॥९६॥ नजर कड लागी रही ॥
सामा बेठां सेण ॥ हरख्युं राजे काळजी ॥ पण कडप ना

जे नेण ॥९७॥ सज्जन साथे प्रीतडी ॥ मन बांध्युं ते
साथ ॥ स्नेहे बांध्यो घणो अंगमां ॥ नगमे बीजी वात
॥९८॥ हवे तो हुं शुं करूं ॥ ए विना नव रेहेवाय ॥ जो ए
ने देखुं नहिं ॥ तो प्राण मारो जाय ॥९९॥ जे घडी ए
में जोतीओ ॥ दीठी पडदा मांहे ॥ ते घडीनो चटकडो ॥
मुने लाग्यो हईआ मांय ॥१००॥ एटला दिवस आ लग
या ॥ में ओळख्यो कामदार ॥ हवे उपाय करूं सही ॥ ए
म विचारे नार ॥१०१॥ ॥चोपाई॥ ॥हवे
प्रीत लागी तेणी वार ॥ गुणवंतीए कर्यो विचार ॥ साध
कर्यो सूरजाने जाण ॥ आले पाटलो नीरवाण ॥१०२॥
गुणवंतीए दीठो लगार ॥ पाडयो थयो नथी मोकल्यो सा
र ॥ पाटीमां लख्यो ए विचार ॥ तुं मारो प्राण आधार
॥१०३॥ पाटी आपी सूरजाने तेणी वार ॥ आपुं जे तेज
पाल कुमार ॥ सुरजे हाथमां लीधी सोय ॥ मनमां वां
चीने विस्मे होय ॥१०४॥ आतो प्रित जणाणी अपार
॥ सूरजो मनमां करे विचार ॥ जोउं पारखुं एनुं सो-
य ॥ तेमां बीजो नव जाणे कोय ॥१०५॥ लइ पाटीने सु
रजो जाय ॥ तेजपाल कुंवरने आपी त्यांय ॥ धनपाल छे
तेनुं नाम ॥ वडो नीशाळीओ ते ठाम ॥१०६॥ पाटीमां ल
खीयो वीचार ॥ तुं मारो प्राण आधार ॥ मारूं तुज शुं जं
घाणुं मन ॥ जलो जलो तेजपालनो तन ॥१०७॥ तुज
विना में घडी नव रहेवाय ॥ एक घडी एक वरसनी थाय
॥ तमारा मननी जाणो तमो ॥ आगली वात शुं कहीए अ-
मो ॥१०८॥ सुरजे पाटी आपी सार ॥ तेमां जाणो ते सर्व
विचार ॥ पछे पाछो उत्तर तेह ॥ कामदारे लखीयो एह ॥
॥१०९॥ ॥ पूरव छाया ॥ ॥ पाछो आंकन मां
डीओ ॥ सांभळ रे तुं नार ॥ तमे लख्युं ते समजजो ॥ ह

रज पाम्यो अपार ॥१४०॥ पण अनेक कौतीक छे जइंए
ने जाणे मारो बाप ॥ तो सुजनाथी दुःज ऊपजे ॥ थाय
घणो संताप ॥१४१॥ अमे अने चाणीयां ॥ तमारे ता
त राजन ॥ ते माटे तमने कहुं ॥ विचारी जो जो मंन॥१४२
॥ पण अेक वात तमने कहुं ॥ धीर तणुं नहिं काम ॥ अे
वात गुपत राखवी ॥ अेता जोणे काम ॥१४३॥ ॥
चोपाई॥ ॥जाती पाटी ने आपी हाथ ॥ सुरजो म
नमां समज्यो वात ॥ सुरजे पाटी दीधी जाण ॥ कुणवती
ने हाथ परमाण ॥१४४॥ कुणवंतीअे वांच्यो वीचार ॥
जे ते लख्युं ते पाण कुमार ॥ पाछुं तेज लख्युं परमाण
॥ मारा जीव समो तुं जाण ॥१४५॥ मारे करवो अेक ऊपा
य ॥ जेम कांई न जाणे राय ॥ मारो पीता कहाये जेह ॥
तेने लाडकवाई हुं तेह ॥१४६॥ नव लीये तारुं कोय नाम ॥
ते माटे नीश्चे करवुं तेम ॥ तुं तो मारो प्राण आधार ॥ अेक
घडी नव मेलुं आवार ॥१४७॥ ते माटे करवो परपंच ॥ के
मां न आवे कोईने अंच ॥ ते माटे अेक कहुं छुं ऊपाय ॥ आ
पणे जेम सुजतुं थाय ॥१४८॥ ॥पूरवछाया॥ ॥
सुज थाय छे जेम आपणे ॥ अेक कहुं ऊपाय ॥ ईश्वर दे
हेरुं छे सही ॥ त्यां तमो आवो राय ॥१४९॥ दीठो ईश्वर
घेन आगळो ॥ तमा जाने तेणे ठाम ॥ राते हुं आवुं स
ही ॥ करी पोतानुं काम ॥१५०॥ घडीया सांढे जेशी करी
॥ घडीअे जाय जोजन चार ॥ अे प्रयाण छे आपणो ॥
हुं आवुं तेणे ठार ॥१५१॥ ॥चोपाई॥ ॥
हुं आवुं छुं प्राणजीवन ॥ सामग्री करजो जाणे हंन ॥ अे
भाटीमां लजीयो आंक ॥ सुरजाने आपी आपी निशंक ॥
॥१५२॥ सूरजे मनमां वांच्युं तेणी वार ॥ ते नव जाणे
कुणवंती नार ॥ पाटी दीधी ने शेठने हाथ ॥ वांची मनमां

समज्यो वात ॥१२३॥पोतानी सामथी त्यां थाय ॥ मुर
जो पंड्यानी पासे जाय ॥ पंड्या शीख दीधो जशुं घेर ॥ व
ळी आवशुं पाछा फेर ॥१२४॥ ॥पूरव छाया॥
॥ ॥ गुरुए जे राज थई कह्युं ॥ जाओ घेर नीरधार ॥
आज्ञा लईने आवीओ ॥ तेजपालने द्वार ॥१२५॥ कहे
वा लाग्यो मुज मळी ॥ मुरजो तेणी वार ॥ जे सुज ईर
छो आपशु ॥ चेती ल्यो आवार ॥१२६॥ जनरे जेलमें
नीरजाव्यो ॥ कीधो जेक विचार ॥ रुपवंती धनपाळ-
ने ॥ निकळी जशे जरूर ॥१२७॥ साले कबवाणसे स
ही ॥ आज जे जोतां जाय ॥ माटे चेतो आ घडी ॥ जेथी
रुडुं थाय ॥१२८॥ जे मानो नहिं मारूं ॥ जुवो पुत्रनी
पेर ॥ साचुं जुठुं जाणशो ॥ पोताके रे घेर ॥१२९॥ जे
तां साचुं निकळ्युं ॥ कजन कर्यो तेवार ॥ नाणुं कई मां
गी पुरीओ ॥ पोतानो कुमार ॥१३०॥ ऊतरीने ते आवी
ओ ॥ वेग मुरजा पास ॥ मुठी जरी रुपीआ तणी ॥ आ
पी कह्युं साजाश ॥१३१॥ ॥चोपाई॥ ॥
आव्यो आव्यो मेहलथी बहार ॥ जे छे तेजपाल कामदा
र ॥ मुठी भरी रुपीआनी आपुं तुने ॥ लाभ थयुं छे चेता
व्यो मने ॥१३२॥ कोईने कहिश नहिं जे वात ॥ उपकार
मानुं तुज जात ॥ मुरजो कहे मने छे सहु भान ॥ वात
कोईने नकईं प्रधान ॥१३३॥ जेम कहीने चाल्यो तेणी
वार ॥ आवी ऊलो ते मध्य बजार ॥ गुजरीमां छे वस्त्र
अपार ॥ जोईए ते वां नीरधार ॥१३४॥ वणी लीधां जी
जं हथीयार ॥ चाली नीकळ्यो नगरथी बहार ॥ प्रीते क
रसुं शीवपूजन ॥ चाल्यो सुंदर तेणे दन ॥१३५॥ ॥
पूरव छाया॥ ॥ बहार नीसर्यो ते सही ॥ आव्यो-
शीव मंदिर ॥ पूजा कीधी प्रेमशुं ॥ मनमां राखी धीर ॥१३६

॥स्तुति कीधी अति घणी ॥तो तूठ्या श्री त्रिपुरार ॥त्रण सादकरे ने मुने ॥फूल दीधी अपार ॥ १३७॥फूल करी जे ठो सही ॥सत पडी नीरवाण ॥कुणवंती तत जद थई ॥ तत क्षण आवी आण ॥ १३८॥ घडीयां जोजन सांढणी ॥ लीधी तेणी वार ॥ वेगे चढीने चालीयां ॥ साथे लीधी रतुकार ॥ १३९॥ चढीने चाली सही ॥ मनमां घणुं रळीआत ॥ चाल चाले वेगे सही ॥ दशा शुं करती ख्यात ॥ १३८ ॥ मित्र वाट जुए जरी ॥ तेजपालनो कुमार ॥ असुर थयुं कट चालीआं ॥ पहोंच्या शीघ्र ते ठार ॥ १४०॥ ॥चोपाई॥ ॥ एटले आव्या देवळ मोजार ॥ साद दीधो त्यां तेणी वार ॥ साद दीधा त्रण ज्यारे ॥ जीभी जेठो थयो तेरले ॥ १४१॥ सांढ कुंवारी रतुकार ॥ चडी जेठो सुंदर तेणी वार ॥ महा वनमां चारे जण ॥ त्यांथी चाल्यां ते नीरवाण ॥ १४२॥ ॥ पूरव छाया ॥ ॥ पछम जेठो भुरजो ॥ आगळ तेरतुकार ॥ वचमां राणी ते कुणवंती ॥ सांढ हांठी ते वार ॥ १४३॥ पवन वेगी ते सांढणी ॥ अधर चाली जाय ॥ मनमां आनंद अति घणो ॥ पीनरअंगन माय ॥ १४४॥ आशा पोहोती अति घणी ॥ हर्ख्डे हरज अपार ॥ जाने लायग अमतणुं ॥ कुं पामीए लरथार ॥ १४५ ॥ ॥ चोपाई ॥ ॥ घड घड सांढ हलकारी जाय ॥ अघोर वनने ते मारग धाय ॥ पवन वेगी सांढ अपार ॥ नीसरी जकुपंथ मोजार ॥ १४६॥ त्यारे कुणवंती जोली प्रकाश ॥ आव्या आव्या जोजन पंचाश ॥ शेन जोलो ते भीणा निवन ॥ भाई तम मां वळग्युं मन ॥ १४७॥ आजी रात त्यां रहीने जय ॥ तमारा मनमां कांई नव थाय ॥ एम जोली कुणवंती नार ॥ सांभळो तेजपाल कुमार ॥ १४८ ॥ वात करोने मुजथी सार ॥ शुं मनकमां करो विचार ॥

જીક કોની ધરે છે મંન ॥નથી બોલતા મુખથી વચન ॥
॥૧૪૯॥ સુરજો બોલ્યો નહીંરે લગાર ॥ત્યારે બોલી તેરતુ
કાર ॥તમો છાનાં રહો મારી માત ॥હમણાં એતાં થાશે પ્ર
ભાત ॥૧૫૦॥ ॥પૂરવછાયા॥ ॥રતુકાર બોલી
સહી ॥સાંભળો ગુણવતી નાર ॥વણીક કેરો બેટડો ॥જી
હીક ધરે અપાર ॥૧૫૧॥ રાત અંધારી ઊપરે ॥ચોર હશે
કોઈ જણ ॥તે માટે જાઈ બોલે નહિં ॥એ છે ચતુર સુજા
ણ ॥૧૫૨॥ ॥ચોપાઈ॥ ॥ચતુર હોય વણિક
નો તંન ॥માટે નથી બોલતો વચન ॥આપણે નારીના
નેરાં જાણ ॥ચોર મળે તો થાય જંજાળ ॥૧૫૩॥ કોઈ લુ
ટી લીએ આપણું ધન ॥એમ મુજથી બોલે કામન ॥ તે
માટે છાની રહે માત ॥વનમાં એકલી નાકરીએ વાત ॥૧૫૪
॥વાત કરેને સાંઢ ચાલી જાય ॥ત્યારે બોલી ગુણવંતી ત્યાં
ય ॥જીક કોની ધરો છો મન ॥બોલો બોલો પ્રાણજીવ
ન ॥૧૫૫॥ વાત કરેને સાંઢ ચાલી જાય ॥પ્રાતઃકાળની વે
ળા થાય ॥વીતી રજનીને ઉગ્યો દિન ॥ત્યારે સુરજેં કુ-
જકાવ્યું વદન ॥૧૫૬॥ ત્યારે બોલી ગુણવંતી નાર ॥ તું તો સાં
ભળ રતુકાર ॥આ તો નહોય તેજપાળનો કુમાર ॥ સુરજો
ચર બોળજ્યો તેણીવાર ॥૧૫૭॥ કટ કટ પાપણી વીધા
ત ॥મુને દુઃખ તણી તું દાત ॥ગુણવંતીને થઈ મુરછાય ॥
પડી ગઈ ત્યાં પૃથ્વી માય ॥૧૫૮॥ છાતી શું ચાંપી રતુકા
ર ॥જમા જમા તુજને જકુનાર ॥નેત્રથી આંસુપાતજ-
થાય ॥મુજથી કાંઈ નવરે બોલાય ॥૧૫૯॥ ॥
પૂરવછાયા॥ ॥જમાજમા દાશી કહે ॥ લીકી તે શ
દિયા માંય ॥ઘટિકા બે સુધે સહી ॥ટણી ત્યાંહાં મુરછા
ય ॥૧૬૦॥ વળતી તે કોપે ચઢી ॥ગુણવંતી બોલી વાણ ॥
મુજ નવ જોઈ મુરજનું ॥કુ ળંકુ મારો માણ ॥૧૬૧॥ રી

स घणी पीडी नारने ॥ जोशी मुजने चार ॥ आंसु पडे अ
हु आंजथी ॥ काढी पगनी पेंजर ॥१६२॥ एनुं मुज दे
खुं नहिं ॥ पापीओ कहेवाय ॥ वाहाल वछोयो ए सही ॥
क्यारे एहांथी जाय ॥१६३॥ काढ काढ एने सही ॥ मोढुं-
एनुं जाण ॥ ते माटे तुजने कहुं ॥ एने हे उतार ॥१६४॥
त्यारे मुरजो जोशीओ ॥ कोण आवे तुज साथ ॥ शीवने
देहेरे आवीने ॥ कीधी मुजने घात ॥१६५॥ कुमुज करवा-
आवीयो ॥ सदाशीवनी नेह ॥ जाग पीधी मतीहां ॥ घा
तज कीधो तेह ॥१६६॥ गाम ठाम मुकावियुं ॥ मुकाव्यो निशा
ण ॥ अवगुण कीधो ते सही ॥ वणी दे छे मुजने गाळ ॥१६७
॥ ॥ चोपाई ॥ ॥ एम कहीने चाल्यो तेणी
वार ॥ त्यारे जोशीने रतुकार ॥ आपणे ऊलां एकला
वन ॥ चोर मले तो लई जाये धन ॥१६८॥ पुरुष विना केम
रेहेवाय ॥ रांड्युं अन्न अस्त्री कहेवाय ॥ जे धानक नारी
जाय ॥ पृथ्वी तेने जाया धाय ॥१६९॥ एम कहेतीते र
तुकार ॥ जे पापीने मार पेंजर ॥ एने देजी व्यापे मुने
काळ ॥ माहारा नजरेथी मोढुं जाण ॥१७०॥ पछे मुरजो
चाल्यो तेणी वार ॥ लखो लखो तुं विश्वाधार ॥ दामो
दर छबीं तमारो दास ॥ सेवकने घणो विश्वास ॥१७१॥
माटे वाहार करो मुज स्वाम ॥ हुं तो लपुं रे तमारुं नाम ॥ त
मे लक्ष तणा प्रतिपाळ ॥ मारुं दुःख कापो गोपाळ ॥१७२॥
॥ ॥ पूरव छाया ॥ ॥ दास भलु छबीं तम तणो
॥ करुणानिधि केशवराय ॥ एम केहेतो चालीयो ॥ शोक
करतां जाय ॥१७३॥ सुंदर चाल्यो वन विषे ॥ जोशी सां
हां रतुकार ॥ जा छोक्ल कहुं ते सांभळो ॥ साद करुं आवार
॥१७४॥ ॥ चोपाई ॥ ॥ साद करुं छुं एने-
सार ॥ त्यारे जोशी कुलवंती नार ॥ कहुं ताहरुं तुं धरने सा

१ा मुज आगळ म करने ऊभ्यार ॥१७५॥तारे मन आवे
ते करनार ॥त्यारे साद कीधो तेणीवार॥ तुं आव मुरजा
आणे ठाम॥ अेम कहीने बोलाव्यो ते लाम॥१७६॥मु
मुरजो ऊभो रह्यो ते क्षण॥त्यारे बोल्यो मुजथी घा
ण॥ मारो वांक नथी लगार॥तमे तेडी आव्यां वन मो
झार॥१७७॥ थोरा आवीने मुरजा लाई॥तमे रीस
न करशो कांई॥ त्यारे पाछो आव्यो नीरधार॥ सांढ
हकारी तेणीवार॥१७८॥ ॥पूरवछाया॥ ॥
सांढ हकारी त्यां थकी॥ ते पवन वेगें पळाय॥ क्षण क्षण
तुं उरणकी रह्युं॥ अेक नगर अनुपम त्याय॥१७९॥
दिसे जकु रणियामणुं॥ क्षणे होय कैलाश॥ सांढ वे
गे आवी सही॥ तेन नगरनी पास॥१८०॥ अेक फूलवा
डी आवी दीठी सही॥ सांढ हकारी ते मांहे॥ त्यां आ-
वी ऊला रह्या॥ पछे नगर नीरखे त्यांहे॥१८१॥ ऊंचां
मंदिर माळियां॥ शोले तेज प्रकाश॥ हेम घडुले शो-
लती॥नारी मन ऊल्लाश॥१८२॥ ॥चोपा
ई॥ ॥नीरलरती ती नारी सोय॥ तेनुं रूप देखी
मन मोह्यु॥लतां पंथरां शेरीने पोळ॥ सामासामी हा
टनी ओळ॥१८३॥ सींपी लीत कनकनी गार॥नाटा रं
ग त्याहां नृत्य अपार॥बोली दासी प्रत्ये तेणीवार॥धे
जी हरजी गुणवंती नार॥१८४॥गुणवंती बोली वाण
॥सांलळ दासी चितुर सुजाण॥ हवे जीनेरे क्यां न्हाय
॥नेने शूकन रूडा थाय॥१८५॥जर नमणो थाये अ
पार॥ अेम कहे कहेतां गुणवंती नार॥ नण लरती ना
री सोय॥रुडा अेवा शूकन होय॥१८६॥ ॥पूर
वछाया॥ ॥गुणवंती अेम ओचरी॥ सांलळ चु
रतुकार॥क्षुधा लागी ऊदरमां॥ नमवा नहीं लगार॥१८७

॥ तुं मोकल सुरजाने सही ॥ जावानुं लेवा सार ॥ त्यारे
त्यां जोशावीयो ॥ ते वेळा रतुकार ॥१८८॥ लाव जावानुं
तुं तो सही ॥ तुं अचीट मोअर ॥ तव सूरजो सुजथी
जोशीओ ॥ कु पासे धन नहीं लगार ॥१८९॥ ॥
चोपाई ॥ ॥ मुज पासे धन नहीं लगार ॥ त्यारे
जोशी ते रतुकार ॥ धन आपो तमो मोरी माय ॥ अेम सु
रजो बोलमां जाय ॥१९०॥ त्यारे गुणवंती करती जतन ॥
जुगचेथी काढ्युं ते रतन ॥ ते रतन आप्युं सूरजाने त्यां
य ॥ सूरजो लई जेअरे जाय ॥१९१॥ झवेरी हाटे आ
व्यो ते जाण ॥ आवी मुजथी बोल्यो वाण ॥ झवेरी हाट
क्यां हां छे जेह ॥ अेक वाणीयो बोल्यो तेह ॥१९२॥ रा
जद्वारे गया छे सार ॥ झवेरी हाटे नहीं लगार ॥ वणिक-
नारे सुणी वचन ॥ सुरजो विचार करतो मन ॥१९३॥ ॥
पूरव छाया ॥ ॥ विचार त्यां मनमां कर्यो ॥ जणीं
राजने घेर ॥ रतन पारखुं त्यां करीं ॥ जेणीं अेनी पेर ॥१९४
॥ सुंदर पोते आवीओ ॥ राज केरे द्वार ॥ आवीने ऊ
भो रह्यो ॥ कीधो त्यां जुहार ॥१९५॥ ते जयसेन रा
जा जरो ॥ जयावतीनो नरेश ॥ त्यां सुंदर ते आवीयो
॥ जे जन जाळे वेश ॥१९६॥ जुहार कीधो सरवने ॥
बोल्यो सुजथी वाण ॥ मान दई बोसाडीओ ॥ जयसे
न राजन ॥१९७॥ कोण तणा तमे बेटडा ॥ कीयो तमारो
देश ॥ शा कारण तमे आवीआ ॥ अेम पुछे छे नरेश ॥
॥१९८॥ पृथिवी देश अमारडो ॥ तात तो सरज द्वार ॥
शेठ अंन माटे आवीओ ॥ लख्युं हशे कीरतार ॥१९९
॥ ॥ चोपाई ॥ ॥ कीरतारे लख्युं ते होय ॥ न-
आदकुं ओछुं न करे कोय ॥ अेक रतन छे माहारी पास ॥ जु
वे झवेरीने थाय विश्वास ॥२००॥ माटे आव्यो छुं जाणु

॥त्यारे राजा जोल्या वाण ॥ चार रतन छे अमारी पास
॥ अेवा झवेरी आव्या छे मकाश ॥२०१॥ झवेरी बेठा -
छे अहीं ॥ रतन पारखुं करे छे तांहीं ॥ अेर्ड सुंदर -
जोल्यो ते वाण ॥ मनमां समस्या ते सारंगपाण ॥२०२॥
प्रभु दामोदर जाणमुकुंद ॥ देवकीनंदन आनंदकंद ॥ मा
रे वचन साचुं थाय ॥ तमे त्रुठो अे वईकुंठराय ॥२०३
॥ ॥पूरवछाया॥ ॥ वईकुंठवासी छो त
मे ॥ स्वामी दीन दयाल ॥ वचन साचुं होय सही ॥ तो की
धी मुज संभाल ॥२०४॥ झवेरी प्रत्ये जोलीअे ॥ सुंदर
साथी वाण ॥ रतन जे जोटां सही ॥ जे साच्यां नीरधाण
॥२०५॥ अे तमे मानो सही ॥ तो पारखुं कीने सार ॥ अेर
ण अेक मंगावीअे ॥ जजर न पडे नीरधार ॥२०६॥ ॥
चोपाई॥ ॥जजर पडे त्यां साथी नीरधार ॥ पेरी
अे अेरण मोजार ॥ ते तो साचुं निश्चे कहेवाय ॥ जोटां
ना तो कटका थाय ॥२०७॥ मंगावी अेरण तेवार ॥ पाक
रवाने तेड्यो लुहार ॥ रतन मुक्युं अेरणपर अेह ॥ घण
पड्यो कटका थयुं तेह ॥२०८॥ बीजुं रत्न मुक्युं तेणीवा
र ॥ अेरणमां पेठुं नीरधार ॥ सरवे अेर्ठ ते अचरत होय
॥ अेवो पुरुष न दीठो कोय ॥२०९॥ झवेरी झांखा पडीआ
मन ॥ घणी रीस चढी राजन ॥ राजा कहे परिक्षा करी केवी
॥ झवेरी जुठा पडीया तेवी ॥२१०॥ ॥पूरवछा
या॥ ॥राजा रीस करे घणी ॥ झवेरीने तेवार ॥
बंधीजाने मोकलो ॥ लुटी ल्यो घरजार ॥२११॥ सुंदर प-
स्तायो घणुं ॥ विचार्युं निज मन ॥ समजावी पोते कहे सुणो
चतुर राजन ॥२१२॥ नगर सहुनी चिंता भली ॥ लूंटे मोटा ज
न ॥ मारे माहेन कीजीअे ॥ रीस न धरीअे मन ॥२१३॥
॥ ॥चोपाई॥ ॥ नेक राजा न करीअे रीस

॥ મુકો ઝવેરી દીજે આશીશ ॥ તમ વચને રાજા કહે અનુ
કી દેણી ॥ નહી મારીને દંડ લેણી ॥૨૧૪॥ ઝવેરી મુક્યા
તેણી વાર ॥ તેતો કરજ ઘરે અપાર ॥ કોઈ આવ્યા મુલ
કરાય ॥ વિચાર મનમાં તે કરતાં જાય ॥૨૧૫॥ રતન હતું
પોતાની સાથ ॥ તે લેઈ દીધું ઝવેરીને હાથ ॥ તે રતન અ
મૂલ્ય કહેવાય ॥ તેનું મૂલ કોણે નવ થાય ॥૨૧૬॥ ઘરેણે
મુક્યું તેતો જાણ ॥ લાખ રૂપૈઆ લીધા પ્રમાણ ॥ રતન દિ
ધું ઝવેરીને હાથ ॥ લાખ રૂપૈઆ લીધા સાથ ॥૨૧૭॥ ॥
પૂરવછાયા॥ ॥ લાખ રૂપીઆ તે ઘડી ॥ લીધા
પોતે સાથ ॥ દશ હજાર ત્યાં રાયને ॥ આપ્યા હાથોહાથ ॥
॥૨૧૮॥ રાજા જકુ રાજી થયા ॥ સુંદરને કહે વચન ॥ કા
મ કાજ હોય તમ તણું ॥ મુને કહો આણે દિન ॥૨૧૯॥
સુંદર વળતો બોલીઓ ॥ રાજા પ્રત્યે કહે વાત ॥ મોહો
લ એક જોઈએ જસો ॥ અપાવો તમે હાથ ॥૨૨૦॥ ઘ
ન જેસે તે આપશું ॥ જોતાં તેણી વાર ॥ શુધ્ય કરીશું તે
સહી ॥ એવો મોહોલ તઈઆર ॥૨૨૧॥ ॥
ચોપાઈ॥ ॥ મોહોલ અપાવ્યો એવો તઈઆ
ર ॥ ટાંકુ કુવાને માંહી કોઠાર ॥ સરવે વસ્તુ ઘરમાં હો-
ય ॥ બાહાર જાવું ન પડે કોય ॥૨૨૨॥ એમને મોહોલ
એવો જોઈએ સોય ॥ વસ્તુ સરવે ભરી ત્યાં હોય ॥ તવ
રાજા બોલ્યો તેણી વાર ॥ ઢલીત તેડાવ્યા જે ચાર ॥૨૨૩॥
કહેતાં આવી કીધો જુહાર ॥ કહે સાહેબ હમ હે તઈઆર
॥ જે કામ કહો સો હમ કીને ॥ હુકમ ફરમાવો શીર લીને
॥૨૨૪॥ કહોતો પકડલાવે શાહુકાર ॥ ઝવેરીકું મારે ગર
॥ તવ રાજા બોલ્યો તેણી વાર ॥ મોહોલ રૂડો જોઈએ ત
ઈઆર ॥૨૨૫॥ ॥પૂરવછાયા॥ ઘ
મોહોલ જોઈએ ઝાઝો તમો ॥ સુંદર તેડી સાથ ॥ જે જોઈએ તે

આવજે ॥ વેગે તેને હાથ ॥ ૨૨૬ ॥ ઢળીત ચાલ્યા ત્યાંથકી
॥ સુંદર લેઈ જાય ॥ શેરી પોળ જોતો જશે ॥ ઊલટ
અંગન માય ॥ ૨૨૭ ॥ ॥ ચોપાઈ. ॥
ઊલટ સુંદર ના મન માંન માય ॥ મેડી મોહોલ તે જોતો
જાય ॥ જોતાં એકુ દીઠો રે આવાસ ॥ સુંદર આવ્યો તેની પા
સ ॥ ૨૨૮ ॥ તે ઊંચાં મંદિર માળિયાં ॥ છજાં ઝરૂખાને જા
ળીયાં ॥ હટીઓ વણજારો રેહે તે ત્યાંહે ॥ સુંદરે પુછ્યું ઢ
ળીતને ત્યાંહે ॥ ૨૨૯ ॥ આ કેનો મેહેલ કેહેવાય ॥ વસતો ઢ
ળીત બોલ્યો તેતાંહે ॥ હટીયા વણજારા ઐસમેં રહે ॥ ઢળી
ત સુંદરને એમ કહે ॥ ૨૩૦ ॥ આવ્યા મોહોલ પાસે તે જાણ
॥ ઢળીત બોલ્યા મુજથી વાણ ॥ ચલજે ચલજે હટીયા તુ
આજ ॥ તુજકું બોલાવે જસસેન રાજ ॥ ૨૩૧ ॥ કોપ જુદકા
તુજકું હોય ॥ ઐસે ગુન્હા નહી તેરા કોય ॥ હમને રાજની
જાણી ॥ હુકમ તુજકુ કેહેતે હે ભાઈ ॥ ૨૩૨ ॥ ॥
પૂરવ છાયા ॥ ॥ વચન એવાં સાંભળી ॥ થર
થર કંપે મન ॥ દાણ ચોરી કીધી નથી ॥ શાને તેડે રાજ-
ન ॥ ૨૩૩ ॥ ભેળભીને સુતો સહી ॥ ડગડગ્યો જહુ મન મા
ય ॥ પેહેરણું તો પડે નીસરી ॥ વણજારો ઊભ્યો ત્યાંહે ॥
॥ ૨૩૪ ॥ ફાળ પડી જહુ પેટમાં ॥ હોઠ કંઠ સુકાય ॥ બોલે
બોલ અવળું સહી ॥ સવળું તેન બોલાય ॥ ૨૩૫ ॥ ફાંદ
મોટી પર સેવો ઘણો ॥ પાઘડી પડી જાય ॥ શું થાશે ભ-
ગવાનજી ॥ આ તે શું કેહેવાય ॥ ૨૩૬ ॥ ॥ ચોપા
ઈ ॥ ॥ અરે પ્રભુજી આ શું કેહેવાય ॥ તેની થર થ
ર ધ્રુજે કાય ॥ તેડી લાવ્યા તે રાજદુવાર ॥ આવી રાજને-
કર્યો જુહાર ॥ ૨૩૭ ॥ રાજા પ્રત્યે બોલ્યો વચન ॥ શું ગુ
ન્હો મારો રાજન ॥ શે કામે તેડ્યો મહારાજ ॥ સાચું કહો
ને અમને આજ ॥ ૨૩૮ ॥ જસસેન ત્યાં બોલ્યા એહ ॥ મ

होल कहीजे तमारो तेह ॥ सुंदरने आपो ते तमो ॥ जेवुं वचन कहीजे छे अमो ॥२३७॥ ॥पूरव छाया॥ ॥ मान वचन हठीया सही ॥ कहुं तुजने नीरधार ॥ मेहेल सुंदरने आपीजे ॥नीकळो घरथी जहार ॥ ॥२४०॥ जे साटे जीभुं आपशुं ॥ मेहेल तुजने होय ॥ सुणतां चिंता ऊपजी ॥ गीलो त्यां जह रोय ॥२४१॥ थर थर ते कंपे घणो ॥ वणजारो त्यां जाण ॥ शुं पज रही शरीरनी ॥ जाणे हमणां जशे प्राण ॥२४२॥ ॥चोपाई॥ ॥ वणजारो कहे तेणीवार ॥ अमे जशुं नगरथी जाहार ॥ वाड गीहीने चीलडांरे जाय ॥ राजा तेम तीहांकेम रहेवाय ॥२४३॥ तव राजा रीसे रातो थाय ॥ चीत आवे तो हमणां जाय ॥ शुं लबारी करे तुं आज ॥ जी सत्या विना नवसरे काज ॥२४४॥ माल धन आभूषण होय ॥ वेहेला लईने नीसरो सोय ॥ हठीयो रोतो रोतो त्यां जाय ॥ पासे आव्यो ते सुंदर राय ॥२४५॥ ॥पूरव छाया॥ ॥ सुंदर जोल्यो मुज थकी ॥ सुण हठीआ मुज वात ॥ केटलुं धन जेहुं हशे ॥ मुने साचुं कहेने वात ॥२४६॥ पांच हजार ने पांचशे ॥ ऊपर ते पंचाश ॥ जां ते मेहेल कीधो सही ॥ रेहेवानी घणी आश ॥२४७॥ होंश हुती हईडा विषे ॥ भोगववा घरजार ॥ कोप करी तमे काढमो ॥ जुं थी थ्यो आवार ॥२४८॥ आशा सहुना मन विषे ॥ होय सघलर पुर ॥ सत्यवाडी तोडे नहिं ॥ समज ए होय जगीर ॥२४९॥ ॥चोपाई॥ ॥ त्यारे सुंदर जोल्यो वचन ॥ सरवे छुटी पड्युं तुज धन ॥ राजा कांई न आपे धन ॥ हवे हठ तणुं नहीं काम ॥२५०॥ कहे तो राजा पासे हुं जाउं ॥ कांईक अपावी जो शीगणुं थाउं ॥ त्यारे हठीयो जोल्यो वाण ॥ सांभळ सुंदर चतुर

सुन्नण ॥१५१॥ ने तमारा मनमां आवे सही ॥ एम कु
ठीजे वांणी कही ॥ त्यारे रैपैआ सात हजार ॥ ते सुंदरे
आप्या तेणी वार ॥ १५२ ॥ माल जन्ननो लई नीसर्यो
जहार ॥ जीने मंदिर गयो नीरधार ॥ जीन्न रैपीआ
कुता नेह ॥ साहुकारने आप्या तेह ॥ १५३ ॥ तेनुं सदा
व्रत मांड्युं सार ॥ जाडी रैपीआ छाशी हजार ॥ तेनुं
तो त्यां पुण्य थाय ॥ सुंदर कहे तेटलुं करे राय ॥ १५४
॥ ॥ पूरवछाया ॥ ॥ राजप्रत्यें जोती
ओ ॥ सुंदर मुज वचन ॥ वेहेल एक आणो सही ॥
तो तेडी लावो मन ॥ १५५ ॥ फुलवाडीमां जेठ सही ॥ ह
सीने जीज नार ॥ वेहेल आपी तेडी तीहां ॥ आव्यो ते
णी ठार ॥ १५६ ॥ रतुकार नेई करी ॥ कुलवंती केहेवा
ण ॥ मुरजो प्राक्रम छे जरो ॥ दिसे चतुर सुजाण ॥
॥ १५७ ॥ कुलवंती जेठी वेहेलमां ॥ आव्या नगर मो
न्नर ॥ त्यां आवी ऊलाशह्या ॥ हठीआ केरे द्वार ॥ १५८
॥ ऊंच्यां मंदीर माळियां ॥ नळ हळ ज्योत प्रकाश ॥
ते नेईने विस्मे थई ॥ ने कुळवंती नार ॥ १५९ ॥ मन
मां ते समज रही ॥ नव जोले मुज वाण ॥ घणु घणी
मनमां लरी ॥ पोते चतुर सुजाण ॥ १६० ॥ मोहोलपा
से आवी सही ॥ गया घर मोन्नर ॥ नेईने त्यां विस्मे
थयां ॥ लस्या सरव लंकार ॥ १६१ ॥ ॥ चोपा
ई ॥ ॥ आव्या आव्या ते घर मोन्नर ॥ केडी दि
से छे आ दरजार ॥ हिंडोला जाट जांधी छे सही ॥ न
ई कुळवंती जेठी तही ॥ १६२ ॥ नाना विधनां वस्त्र दिसे
छे सार ॥ वासण तरेह तरेहनां अपार ॥ घृत जांड सा
कर अनेक ॥ नेतां कांई न आवे छेक ॥ १६३ ॥ सुंदर
मंदीर कला अपार ॥ ते नेईने रीझी रतुकार ॥ ने नेठ

અને તે સરવે તાંહે ॥ કુવો ટાંકુ છે મેહેલની માંહે ॥૨૬૪॥
જ્યાં જુવે ત્યાં રૂપ ભરાય ॥ તે કુલવંતી જોતાં જાય ॥ વછો
પડો મુજ ભરથાર ॥ જે પાપીને માર પેંભર ॥૨૬૫॥ પ-
છી બોલી તે કામન ॥ હસી તું રાંધે ભોજન ॥ ભૂખ લા-
ગી છે મુજને અપાર ॥ એમ કહેતી કુળવંતી નાર ॥૨૬૬
॥ રસોઈ કીધી જુગતે કામન ॥ નાના વિધનાં તે રાંધ્યાં
અન્ન ॥ બત્રીશાં ભોજન છતન પાક ॥ ઘણી જાતનાં કી
ધાં છે શાક ॥૨૬૭॥ બહુ જાતનાં કીધાં છે અંથાર ॥ બર
ણી ભરી ઘર મોઝાર ॥ આદું લીંબુ દિસે છે ઘણાં ॥ અ-
થાણામાં નહિં કાંઈ મણા ॥૨૬૮॥ કેરી રાયતાં કરમઘં
કેર ॥ પાંપડના ગોળા ભરી આપેર ॥ દુઝે મહિષીને વ
ળી ગાય ॥ તેનું દુધ ઘણેરૂં થાય ॥૨૬૯॥ છપન ભોગ
થયો છે તઈઆર ॥ ઊઠી જમવા કુળવંતી નાર ॥ ઊને પા
ણીએ નાહાઈ કામન ॥ બેઠી કરવાને ભોજન ॥૨૭૦॥ -
જમી ઊઠ્યાં કુળવંતી નાર ॥ વળી જમી તે રતુકાર ॥ મુજ
વાસ કરો છે સાર ॥ તતો આવો મુજ મોઝાર ॥૨૭૧॥ ॥
પુરવ છાયા ॥ ॥ રતુકાર વળતી વદે ॥ તું સાં
ભળ રે કામન ॥ મુરજો ભૂંજ્યો છે સહી ॥ હવે કરાવી
એ ભોજન ॥૨૭૨॥ કુળવંતી વળતી એમ વદે ॥ દેજી ચા
પે કાળ ॥ નામ લેઈશ તું મુજ કને ॥ મોદું એનું જાણ ॥
॥૨૭૩॥ લેતાં સહી તું ત્યાં થકી ॥ એહું જુકું અન્ન ॥
નાંજ મુઠી મીગતણી ॥ દે કરવા ભોજન ॥૨૭૪॥ જેથી
ર પાપડ તે સહી ॥ સહુ લેવું દિધું જાણ ॥ મુઠી જે મીગ
તણી ॥ નાજી તે પરમાણ ॥૨૭૫॥ ॥ ચોપા
ઈ ॥ ॥ તાં સળી લીધી તે કર મોઝાર ॥ આગળ
મેહેલી તે રતુકાર ॥ જમો જમો તમે મુરજાવીર ॥ જમી-
શીતલ પીજે નીર ॥૨૭૬॥ સુંદરે કચલ ભર્યો ઝેરલે ॥

જુહાર નીસરી પડી તેટલે ॥ ઉપર પાણી પીધું સાર ॥ પે
છે કુવલ જસ્યા જે ચાર ॥૨૭૭॥ ભલો ભલો રે તું દિન દ
યાળ ॥ તું તો જગત તણો પ્રતિપાળ ॥ જમી ઉઠ્યો ત પર-
માણ ॥ તેડું આવ્યું ત્યાંહાં રાજન ॥૨૭૮॥ સુંદર આવ્યો
તે સભા મોઝાર ॥ આવી રાજાને કર્યો જુહાર ॥ રાજાએ
દિધું ઘણું માન ॥ પાસે જઈ બેઠો પરધાન ॥૨૭૯॥ એવ
હાલો લાગે રાજાને અપાર ॥ સુંદર વિના ન ચાલે લગાર ॥
મધ્યાન થયીને લાગી ભીજ ॥ વનમાં કુણવંતીની ઘણી જી
ક ॥૨૮૦॥ સુંદર ત્યાં થકી ઘેર જાય ॥ તે રાજા પછે શું થા
ય ॥ રસ્તે જતાં કરે છે વિચાર ॥ જસી દાસી છે રતુકાર
॥૨૮૧॥ ॥ પુરવ છાયા ॥ ॥ જીકુ ઘ
રંતો આવીઓ ॥ વેગે ઘર મોઝાર ॥ જસી દાસી જણી તુ
ન ઉપરે ॥ એમ વદે રતુકાર ॥૨૮૨॥ સુંદર મોહોલમાં
આવીઓ ॥ પર સાલે ઉભો જાણ ॥ રતુકાર કહે રાણી
ને ॥ બોલે મધુરી વાણ ॥૨૮૩॥ મુરખો બેઠો આંગણે
॥ ભોજનની શી પેર ॥ કુણવંતી બોલી સહી ॥ તેના મન
માં છે ઝેર ॥૨૮૪॥ ચાહાલાં વછોહે આવીઓ ॥ ચડે છે
મનમાં રીસ ॥ શું કરૂં તે ચાલે નહીં ॥ નહીં તર છેદું શીશ
॥૨૮૫॥ ॥ ચોપાઈ ॥ ॥ એમ મુજથી
બોલે કામન ॥ ઝેર આણીને જકુ મન ॥ એ વાત મકર-
વાર મવાર ॥ મુવા એને મારો પૈજાર ॥૨૮૬॥ એકું જુદું જે
હોય અન્ન ॥ તેમાં મીઠું નાખે કામન ॥ તાંસલી પડી ચો
ક મોઝાર ॥ તેમાં આપ તું રતુકાર ॥૨૮૭॥ પછે તાંસ
લીમાં પીરશું અન્ન ॥ આણી આગળ મુક્યું ભોજન ॥
જમો જમો રે મોરા ભ્રાત ॥ શું કહું તમને કાલ્કી વાત ॥
॥૨૮૮॥ જેવો સમો તેવું સાવધાન ॥ આંખો મીચીને જ
મીજે અન્ન ॥ સુંદર કહે સુણ રતુકાર ॥ ભૂજ નથી લા

गीरे लगार ॥२८ज॥ ॥पूरवछायो॥ ॥ लुज नथी मुनने कंई ॥ सांलण कहुं छुं सोय ॥ गंघ घणी जावी मुने ॥ कांईक पाथरण आपो मुने न्हेय ॥ ॥२ज०॥ पछी रतुकार गई घर विषे ॥ त्यां कुळवंती नार ॥ पाथरण मागे मुरजो ॥ एम कहे रतुकार ॥२ज१॥ शीतल आपी गोदडी ॥ मांहे लडकलां जार ॥ जंजेरीने पाथरी ॥ मांहे घूळजरी शेर चार ॥२ज२॥ पाछो मेहल्यो जोशीकडे ॥ मुजथी कहु कामन ॥ सुंदर न्हेई एम जोली ओ ॥ लसोनुं मुगलवन ॥२ज३॥ ॥योपाई ॥ ॥ पाथरी गोदडी लडकलां छे जार ॥ त्यारे जोली रतुकार ॥ तमे केम दियो मुरजाने छेह ॥ कईक विचार करीने तेह ॥२ज४॥ एवुं सुणीने काढी पैन्नर ॥ घसीने मारी जे चार ॥ छानी मानी ते सांजी रही ॥ गोदडी लेई त्यांथी गई ॥२ज५॥ ते लई आवी सुंदर केरी पास ॥ मुजे नाजती जकुनी सवास ॥ लाई मारे नथी एनेर ॥ मुने मारी एम मारे ढोर ॥२ज६॥ गोदडी पाथरी तेणी वार ॥ मांहे घूळ पडी शेर चार ॥ शीतल लडकलां छे जार ॥ जाटकी पाथरी तेणीवार ॥२ज७॥ पुरवछायो॥ ॥ सुंदर न्हेई विस्मय थयो ॥ लसो तुं दिन दयाळ ॥ जा गोदडी कईवरसनी ॥ क्यां राजी नगपाळ ॥२ज८॥ एम कही सुतो जरो ॥ सुंदर तेणी वार ॥ नींद्रा तो आवे नहिं ॥ मांहे थांपिड करे चटकार ॥२ज९॥ आजी रात एम वही गई ॥ थयो प्रातःकाळ ॥ मुज मार्नन कीधुं सही ॥ समस्या दीन दयाळ ॥३००॥ ॥योपाई॥ ॥ समस्या समस्या श्री दिन दयाळ ॥ गया सला मांहे ततकाळ ॥ सला लरी जे गेरानन ॥ तेतो करे छे मुजमारतन ॥३०१॥ दिठो सुं-

दर तेणी वार ॥ रायें कीडी कीधो कुहार ॥ लेला जे शीक
सुं जारे लीध ॥ सुजडी जे मुज मीठां रे कीध ॥३०२॥ पो
होर दिवस चढ्यो नीरधार ॥ रत्न मागी कीधो कुहार ॥
सुंदर आव्यो ते घर मोझार ॥ सामी डाली छे रतुकार ॥
॥३०३॥ ॥ पूरव छाया ॥ ॥ जलीहारी तु
न उपरे ॥ रसोई करीने जाय ॥ लोजन छे मन लावतां
ने तुजने गमे ते जाय ॥३०४॥ सुंदर आव्यो घर विषे ॥
सभरे नगर जवन ॥ रतुकार घरमां गइ छे ॥ त्यां बेठी ती
काभन ॥३०५॥ ॥ चोपाई ॥ ॥ घरमां
आवी ते रतुकार ॥ त्यां बेठी कुळवंती नार ॥ जाई सुर
जो आव्यो ते घेर ॥ हवे लोजन नीशी पेर ॥३०६॥ जमी
ने सुती ते काभन ॥ घणो सांभरे तेन पालनो तन ॥ न
यने आंसु चुवे नीरधार ॥ लुंडी कीधी तें कामदार ॥३०७
॥ में जाण्युं आवुं नव होय ॥ विधात्रा मारी वेरण होय
॥ कुं मात तातने त्यां मेली ॥ परदेशमां आवी एकली ॥
॥३०८॥ घणो शोक आणे मन नार ॥ एटले आवी रतुका
र ॥ जाई सुरजो आव्यो छे घेर ॥ तेनी लोजन नीशी पे
र ॥३०९॥ ॥ पूरव छाया ॥ ॥ रीस क
रे जहु कुळवती ॥ एक ठोठ मारी रतुकार ॥ तने रंडा छे कां
थडी ॥ ने पड्युं हते आहार ॥३१०॥ जीचड पापड अन्न
ने ॥ भीडुं नांजते मांहे ॥ तांसणी आपतुं एहने ॥ सुर
जो लईने जाय ॥३११॥ पासे आवी उभी रही ॥ तांस-
ली मेहेली पास ॥ सुंदर अन्न थाजी मुवो ॥ मुजे करती
नीसवास ॥३१२॥ भीडु जहु नाख्युं सही ॥ लावे नहिं
लगार ॥ कवल लख्या ते जे सही ॥ जीम्युं दीधुं नार ॥३१३
॥ ते दिवस एम वही गयो ॥ रात पडी छे त्यांहे ॥ सुवाक
रे दाणुं थयुं ॥ सुरजो जोल्यो त्यांहे ॥३१४॥ पाथरणां

આપતું મુજને ॥ સાંભળતું રતુકાર ॥ ટાઢલ આપીને
હડી ॥ માંહે ધૂળ જરી શેર ચાર ॥૩૧૫॥ ખાટકી જ્યારે
પાથરી ॥ માંહે લડકુલાં જાર ॥ સુંદર કહે શ્રીનાથજી ॥
નો ધારો આધાર ॥૩૧૬॥ લઈ રતુકાર પાથરી ॥ પાશા
ણ ઓશીકે હોય ॥ સુંદર ત્યા જેઠો સહી ॥ દગમગ સા
મું જોય ॥૩૧૭॥ ભલા ભગતિ ભગવાનકી ॥ ભક્ત તણા
પ્રતિપાળ ॥ તમ વિનાનો કોણ કરે ॥ વેગે જુન સંભાળ ॥
॥૩૧૮॥ સુંદર સુતો સાથરે ॥ ઊંઘ ન આવે લગાર ॥ ઊ
ઠીને જેઠો થયો ॥ ચિંતવણ કરે ચરકાર ॥૩૧૯॥ ॥
ચોપાઈ ॥ ॥ ચિંતવણ કરે અતિ ચટકાર ॥ તેણે
ઊંઘ ન આવે લગાર ॥ આજી રાત એમ વહીને જાય ॥ પ્રા
તઃકાળની વેળા રે થાય ॥૩૨૦॥ મુખ માર્જન કર્યું તેણી
વાર ॥ પછે ચાલ્યો તે રાજદ્વાર ॥ સુંદર આવ્યો તે સભા-
મોઝાર ॥ આવી રાજાને કીધી જુહાર ॥૩૨૧॥ આજ સું
દર સમો નહીં કોય ॥ મારે પુત્ર સમોવડ હોય ॥ પુછીને કા
મ સરવ કરે ॥ સુંદર કહે તે કાને ધરે ॥૩૨૨॥ દિન પ્રત્યે
અધિક થાય ॥ ઘણા દિવસ એમ વહીને જાય ॥ પછે કા
મદાર રાજાનો નેહ ॥ ત્યાંતો મૃત્યુ પામ્યો તેહ ॥૩૨૩॥ તે-
ને થયા માસ જે ચાર ॥ પછે રાજાએ કર્યો વિચાર ॥ મા
રૂ ન સકુ ત્યાં લેવું હોય ॥ રાજાએ તેડાવ્યા સહુને કોય ॥
॥૩૨૪॥ રાજા મુખથી બોલ્યો વાત ॥ સાંભળો તમે સ-
રવે સાથ ॥ કામદાર હવે કોણ કરશું ॥ તમે કહો તે કાને
ધરશું ॥૩૨૫॥ ॥ પૂરવ છાયા ॥ ॥
ભાઈ ન વળતું એમ વદે ॥ સાંભળો જે રાજન ॥ રૂડુ મા
ણસ જોઈ કરી ॥ તેને કરો દિવાન ॥૩૨૬॥ રાજન વળતુ
એમ કહે ॥ સાંભળો કહું વિચાર ॥ કામદાર રૂડો નવ મળે
॥ સુંદર રૂડો સાર ॥૩૨૭॥ મહાજનને તો ભેગમે ॥ તેન

કરૂં કુકામ ॥ નગર શેઠ ત્યાં એમ કહે ॥ સુંદરનું શુભ ના
મ ॥૩૨૮॥ તતક્ષણ કરી પેરામણી ॥ કડાં ભીતરી સાર ॥
મહાજન સરવે દેખતાં ॥ સુંદર કર્યો કામદાર ॥૩૨૯॥
દશાહજાર રાજ્યોત સહી ॥ સુંદરને કરે સલામ ॥ જમા
જમા સરવે કહે ॥ ભલો ભલો દેશ દિવાન ॥૩૩૦॥ ॥
ચોપાઈ ॥ ॥ બહુ માગણ ગુણ તાહાં ગાય ॥ ઢો
લ દદામા ધુસકા થાય ॥ શરણાઈ ભાજને ભેરી ॥ શ-
ણગારી બજારની શેરી ॥૩૩૧॥ સુંદર ઘોડે થયો અસ-
વાર ॥ આગળ ભળી મહાજનની હાર ॥ સોના રૂપાના છ-
ડીદાર જેહ ॥ આગળ નકી પોકારે તેહ ॥૩૩૨॥ જમાબ
મતુને કામદાર ॥ ઘોડા ચડીઆ દશ હજાર ॥ સુંદર મો
હોલ પોતાને જાય ॥ આગળ નાચરંગ બહુ થાય ॥૩૩૩
॥ સુંદર રૂપતણો અવતાર ॥ શેરીએ જુવે નગરની
નાર ॥ જોઈ સુંદરની શોભાય ॥ રઈયત સહુ રાજી થા
ય ॥૩૩૪॥ ॥ પૂરવ છાયા ॥ ॥ નારીની
રજે નગરની ॥ સુંદર અસ્વારી જાય ॥ મહાજન સહુ-
ભેળું થયું ॥ વળી સાથે છે રાય ॥૩૩૫॥ સુંદર આવ્યો
ઘર વિષે ॥ સહુને કર્યો જુહાર ॥ ઠગ થયો રૂપીઆ ત
ણો ॥ તે જુવે રતુકાર ॥૩૩૬॥ શ્રીરૂપની સંખ્યા નહીં
॥ મોહોલ ભરાણો અપાર ॥ મહાજન સહુ ભેળું થયું
॥ વળી કર્યા જુહાર ॥૩૩૭॥ બંદિજન આવ્યા માગવા
॥ તેને દીધાં દાન ॥ ભાટ ચારણ ગાંધર્વ ॥ રઈઅત સ
રવે એમ કહે ॥ ભલો ભલો સુંદર કામદાર ॥૩૩૮॥
મહાજન સહુ પાછું વળ્યું ॥ વધાવી દઈ જાય ॥ રાજા પ
ણ પાછો વળ્યો ॥ આવ્યો રાજસભાય ॥૩૩૯॥ લોક સ
રવડો એમ કહે ॥ ભલો સુંદર કામદાર ॥ કરે અતિ વ
જાણ સુંદર જેવો કોઈ નહીં ॥ દાન સતો દાતાર ॥૩૪૦॥

मछे वणती ओथरी ॥ दासी ते चतुरनार ॥३४१॥ पाणी
वणती करी गयां ॥ करी गयां त्यां अन्न ॥ मंदीर पधारो
महेता ॥ सार जुवे कामन ॥३४२॥ त्यारे सहु पाछा
वळ्या ॥ मनमां करे वीचार ॥ दासी जेनी चतुर छे ॥ सु
घड हसे घरनार ॥३४३॥ ॥ चोपाई ॥ ॥
सुंदर आव्यो ते घर मोझार ॥ जोई ऊठी ते चतुरनार ॥ त
मे सांभळो गुणवंती नार ॥ आज सुंदर थयो अमदार ॥
॥३४४॥ भोजन आपो केडी पेर ॥ मनमां आणीने -
कुंठ मेहेर ॥ आज थयो राजनो जे दिवान ॥ माटे श्री
तेथी आपो मान ॥३४५॥ अेवुं सुणतां मात तत्क्षण ॥
त्यारे पगथी मस्तक ऊठी ज्याण ॥ घडी घडी शुं लेशुं अेनुं
नाम ॥ जाणीवणा करी तुं काम ॥३४६॥ मारा पग तणी
पेजार ॥ शुं जाणुं जे कोण कामदार ॥ घणा करीश जेतुं व
खाण ॥ जे पापीनो लेवुं प्राण ॥३४७॥ आज कामदारी
जेने होय ॥ भीक्षु जाणुं नाज जे सोय ॥ तांसळी वच्चमां
पडी जेह ॥ लई अन्न नाजो आपी तेह ॥३४८॥ मांहे जी
वड पापड प्रमाण ॥ लई तांसळी आपी नीरवाण ॥
तेतो मेहेली सुंदरनी पास ॥ घणो नाजे दासी नीसवा-
स ॥३४९॥ ॥ पूरव छाया ॥ ॥ नीस
वास मुके कामनी ॥ मारे न चाले जोर ॥ सुंदर मुजथी
जोलीजो ॥ ईगट शो करवो शोर ॥३५०॥ अेम कहु
जेठो सही ॥ कुवल लस्या जे चार ॥ नीसासो मेहे
ली कहे ॥ तुं लसो विश्वासार ॥३५१॥ शटल जीछा
वी गोदडी ॥ जेमां लडकलां जार ॥ अटकारो कीधो
सही ॥ त्यां धूळ जरी शेर चार ॥३५२॥ ॥ चो
पाई ॥ ॥ पाषाण जोशिके मुज्यासार ॥ मांहे
चांपीक करे चटकार ॥ सुंदर समरे श्रीगोपाल ॥ धन्य

धन्य जगत प्रतिपाल ॥३५३॥ प्रभु दामोदर बाल मु-
कुंद ॥ नरक निवारण आनंदकंद ॥ प्रभु करोने तमे म-
हारी सहाय ॥ जेथी दुःख सहु दूर पलाय ॥३५४॥
मारा कोटी अपराध जे होय ॥ तमे मनमां न धरशो
सोय ॥ एम कहीने प्रभुने लागे पाय ॥ स्तुति करतां-
रेणी विती जाय ॥३५५॥ तमे भक्तवत्सल हरि कहा-
वो ॥ माटे दास करे छे दावो ॥ मारी अरज सुणी भ-
गवान ॥ तमे राखो सेवकनुं मान ॥३५६॥ ॥
पूरव छाया ॥ ॥ रेणी त्यां वीती गई ॥ थयो-
प्रातःकाळ ॥ सुंदर नव ऊठ्यो सही ॥ समरी दिनदया-
ळ ॥३५७॥ जमा जमा सहु आविया ॥ जंही जन आ-
गाय ॥ करे सलाम सहु स्नेहथी ॥ थया त्यांहां तईआर
॥३५८॥ चाकर सहु भेळा थया ॥ चाल्या त्यांहां काम-
दार ॥ घोडा ऊपर बेसता ॥ नकी करे पोकार ॥३५९॥
॥ ॥ चोपाई ॥ ॥ सुंदर घोडे थयो अ-
सवार ॥ आवी ऊतर्या राज दुवार ॥ राजाए घणा
दिधा मान ॥ आवो आवोने कहे दिवान ॥३६०॥ सुं-
दर विना घडी नव रहेवाय ॥ सुंदर करे ते त्यां थाय ॥
राजानी राणी करे विचार ॥ केवी हशे सुंदरनी नार ॥
॥३६१॥ तेडी वालंद केरी कामन ॥ जातुं सुंदर केरे भु-
वन ॥ नख ऊतारवा मसे करी ॥ ऊतारो जोई आव-
जे फरी ॥३६२॥ ॥ पूरव छाया ॥ ॥
वालंद केरी नारी सही ॥ आवी ते सुंदर दुवार ॥ जोतां सु-
रजी मन विषे ॥ मुखे कर्यो उच्चार ॥३६३॥ रतुकवर
ने जोई करी ॥ दीठुं रूप अपार ॥ निज मनमां विचारि-
युं ॥ आ हशे सुंदरनी नार ॥३६४॥ आवो नख ऊता-
रीए ॥ एम कहेती कामन ॥ पद्मास राणीए मोक-

ની ॥ કું આવી તમ જોવન ॥૩૬૫॥ ॥ ચોપાઈ ॥ ॥ એમ કહે વાલંદ કેરી નાર ॥ ત્યારે જોલી તે રતુકાર ॥ હું તો હશી માણસ પ્રમાણ ॥ મારી રાણી છે મોહોલમાં જાણ ॥૩૬૬॥ એમ કહી ચાલી રતુકાર ॥ આવી કુલવતી પાસે નાર ॥ જાઈ વાલંદકેરી કામન ॥ મોકલી રાણીએ આપણે જોબન ॥૩૬૭॥ કુલવતી કહે લાગ આકાર ॥ પછે લાવી તિહાં રતુકાર ॥ તેનું રૂપ જોઈ વિસ્મય હોય ॥ એનું તેજ ન જમાયે કોય ॥૩૬૮॥ મુજથી ન લેવું છે જાણ ॥ કવિ કહે કેમ કરે વખાણ ॥ જેટી દીઠી તે કામની ॥ ન હોય જૂતળ એવી ભામિની ॥૩૬૯॥ ચંદ્રવદન નેણા છે વાંકા ॥ સિંહ ઉરે કટીનો લાંક ॥ હુંસાગત ગજગામિની ॥ જાણે શરદ શોભે ભામની ॥૩૭૦॥ જેવી પુષ્પલતાની વેલ ॥ જાણે વાડીમાં શોભે કેલ ॥ જેવી દિસે ચંપા કેરી કળી ॥ જાણે આકાશમાંની વીજળી ॥૩૭૧॥ જેવી ઈંદ્ર કેરી અપછરા ॥ માનુની મદ ભરી મછરા ॥ દીઠે વાગે તે મોહનું જાણ ॥ કવિ તેનું શું કરે વખાણ ॥૩૭૨॥ ॥ પૂરવ છાયા ॥ ॥ વખાણ તેનું શું કરૂં ॥ મોહ પામી ઘણી નાર ॥ આંહે આલી ઘેલી કરી ॥ પછે જોલી રતુકાર ॥૩૭૩॥ શુધ્ય શરીરની નવ રહી ॥ ત્યાંથી ચાલી કામન ॥ રાણી પાસે આવી સહી ॥ રાય તણે જોવન ॥૩૭૪॥ આવી ત્યાં ઘેલી રહી ॥ દીધા સમાચાર ॥ પચાસ રાણી તમે સહી ॥ તેમાં એક ન એવી નાર ॥૩૭૫॥ એક દાસી એહની ॥ તે જેવી ન હોય કોય ॥ તન જમાં તણા ત્યાં સહુ ॥ મેં મન વિચાર્યું હોય ॥૩૭૬॥ જો તમે માનો નહિ ॥ જુવો એની પેર ॥ શુધ્ય બુધ્ય મારી જાતાં ગઈ ॥ તેમેં જોજો જઈ ઘેર ॥૩૭૭॥ એમ કહીને સંચરી ॥ પોતાને થાનક જાય ॥ રાણી સહુ વિસ્મે-

થઈ ॥ આતે શું કહેવાય ॥ ૩૭૮ ॥ મુરછા પામી કામની
॥ વાલંદ કેરી નાર ॥ એવું રૂપ છે જેહનું ॥ એવી તે નીર
ધાર ॥ ૩૭૯ ॥ ॥ ચોપાઈ ॥ ॥ રાણી
સઘણીએ કર્યો વિચાર ॥ હવે નિશ્ચે એવી નાર ॥ આ
પણે તીહાં કેમ જવાય ॥ તે સમજવી જોઈ રાય ॥ ૩૮૦
॥ એ વાત રહી એટલે ॥ સુંદર વિચાર કરે તેટલે ॥ મધ્યા
ન્હ કાળ થયો ત્યાં જાણ ॥ ત્યારે ભુજની જોડ્યો વાણ ॥
॥ ૩૮૧ ॥ જુહાર અમારો માની લીજીયે ॥ આજ્ઞા તે અ
મોને દીજીએ ॥ એમ કહીને ઊઠે તેવાર ॥ નગારે દેવરા
વ્યું કામદાર ॥ ૩૮૨ ॥ સેન્યા ચડી ઊભી થાય ॥ સુંદર
ની વાટ સહુ જોય ॥ સુંદર ઘોડે થયો અસવાર ॥ પાજ
રિયા ચાલ્યા દશ હજાર ॥ ૩૮૩ ॥ ધજ નેજા આગળ ની
શાન ॥ તતક્ષણ આવ્યો પોતાને ધામ ॥ આવી ઊત
ર્યો ત્યાં કામદાર ॥ સરવે ચાકર કરે છે જુહાર ॥ ૩૮૪
॥ ॥ પૂરવ છાયા ॥ ॥ જુહાર સર
વે કીધો સહી ॥ પાછા વળ્યા તે વાર ॥ ઊપર લૂણ ઊતા
રતી ॥ દાસી તે રતુકાર ॥ ૩૮૫ ॥ ભલે પધાર્યા વિર
જી ॥ કુંજણી જલીહાર ॥ મધુર વચન એમ બોલતી ॥
આવીઓ ઘર મોઝાર ॥ ૩૮૬ ॥ ॥ ચોપાઈ ॥
॥ ॥ સુંદર આવ્યો ઘર મોઝાર ॥ રાણી પાસે
ગઈ રતુકાર ॥ જાઈ આવ્યો રે દેશ દીવાન ॥ એને આ
પણ દીજીએ માન ॥ ૩૮૭ ॥ ભોજન આપો એને ભર
પુર ॥ ભોજનને થયું ઘણું આતુર ॥ ત્યારે બોલી કુ
લવંતી નાર ॥ એ મુવાને મારું પૈજાર ॥ ૩૮૮ ॥ મુજ આ
ગળ માં લે એનું નામ ॥ નહિં તો મારું તુજને જાગમ
॥ તાહરે મન એ તો કામદાર ॥ મારા પગ તણી પૈજાર ॥
॥ ૩૮૯ ॥ ॥ પૂરવ છાયા ॥ ॥ પૈજાર

मारा पगतणी ॥ गमे न ओछुं वदन ॥ तां भलो लेईने आप
तुं ॥ ओहुं भुडुं अन्न ॥३७०॥ सुणतां कथयाई घणुं ॥ दास
मन अपारना ॥ अरे भलु साभु भुओ ॥ दुःजीओ छे काम
दार ॥३७१॥ भुकार करे शुं करीं ॥ मारे न चाले भेर ॥
जोल्यानो कंई लाग नथी ॥ हवे शुं करवो सोर ॥३७२॥
॥ ॥ चोपाई ॥ ॥ पछे आंभली ली
धी काभन ॥ मांहे जीचड पापड अन्न ॥ सुंदर जोले न
हीं लगार ॥ बेठे कपल भस्या जेचार ॥३७३॥ सुंदर-
धीरज राजे मन ॥ भलुं करशे भगजीवन ॥ अेवी मनमां
विचारे वात ॥ पछे पडी त्यां वेगे रात ॥३७४॥ सज्या
कीधी छे सुंदर कान ॥ फुलवंतीने घणी दास ॥ कारल
गोदडी छे सार ॥ मांही दीसे भडकुलां जार ॥३७५॥ ॥
पूरव छाया ॥ ॥ जंजेरी ते पाथरी ॥ धूल
ळीडी शेर च्यार ॥ सुंदर त्यां भेठे रह्यो ॥ मांहे भडकुलां
जार ॥३७६॥ ते पर कीधो साथरो ॥ पाशाण ओशीके
होय ॥ जीछानुं करीयुं सही ॥ सुंदर ऊलो भेय ॥३७७
॥ भलो भलो भगवानजी ॥ लाल राजन्ने शाम ॥ भकतव
स्सल श्रीभूधरा ॥ दुःज तणो विश्राम ॥३७८॥ सुंदर सु
तो घर विषे ॥ राज मोहोलडा मांहे ॥ सुज सज्यामां-
पोढीआ ॥ राणी तसां से पाय ॥३७९॥ ॥
चोपाई ॥ ॥ राणी आवी सरवे पास ॥ आ
वी जीली त्यांहां पंचाश ॥ भेसी मळीने करे छे वात ॥
तमे सांभळो मारा नाथ ॥३८०॥ सुंदर नारी कहीओ भे
ह ॥ अमने देजाडोने तेह ॥ वालंदनी स्त्री कहीरे भण ॥
तेने वाग्यां मोहनां बाण ॥३८१॥ सुवछ पामीने ते व-
णी ॥ तेनी शुध्य शरीरनी टळी ॥ अेवी रूपवती छे नार ॥
अमने देजाडो भरथार ॥३८२॥ अेम कही पगताण्यो

નાર ॥ તમને સુવા ન દઈયેં લગાર ॥ ત્યારે ચણતા જોવ્યા
ત્યાં રાય ॥ અમે જોશું એક ન્યાય ॥૪૦૩॥ હમણાં નિ-
દ્રા આવે અપાર ॥ માટે સુઈ રહેવા દોની નાર ॥ તો એક
મની ન મુકે કેડ ॥ વારે ઘડીએ કરે જાકુ છેડ ॥૪૦૪॥
॥ ॥ પૂરવછાયા ॥ ॥ દુઃખ દીએ કામ
ની ॥ ત્યારે રાજા જોવ્યો વાણ ॥ પેટ લખ્યું છે માહરે ॥
જાય છેં મારા પ્રાણ ॥૪૦૫॥ નારી તો મુકે નહિ ॥ રાજા
ને ચડે રીશ ॥ તમને કહાડી મુકું જશો ॥ નહિંતર છેદું
શીશ ॥૪૦૬॥ નારી મુજથી એમ કહે ॥ અમને કંઈ નહી
લાજ ॥ વેચીશું નઈ લાકડાં ॥ લાજશો તમે મહારાજ
॥૪૦૭॥ ત્યારે રાજા એમ વદે ॥ મેહેલો આણે દન ॥ એક
વાર જોયાં કું જશો ॥ પછે દેજાઉં કામ ॥૪૦૮॥ ॥
ચોપાઈ ॥ ॥ એમ રાજાએ કહ્યો બોલ ॥ નારી
કહે તમે આપો કોલ ॥ પછે કોલ રાજાએં દીધ ॥ ત્યારે
થયા પ્રાતઃકાળે સિધ્ય ॥૪૦૯॥ તવ રાજા કરે છે વિ-
ચાર ॥ પ્રપંચ્ય કરીં કું સાર ॥ જેમ કુલાય નહિ કામદા-
ર ॥ દિવસ ચડીયો ઘડી બે ચાર ॥૪૧૦॥ પછે આવ્યો
તિહાં કામદાર ॥ રાજસભામાં તેણી વાર ॥ આદરમા-
ન દિધું રાજન ॥ આવો પધારો દેશ દિવાન ॥૪૧૧॥
॥ ॥ પૂરવછાયા ॥ ॥ રાજા કહે ભલે આ-
વીઆ ॥ એક મનની પુરો હામ ॥ ચોપટ રમીએ બેકુ
સહી ॥ આપુ તમ શું કામ ॥૪૧૨॥ નવો પ્રધાન થા-
એ જશો ॥ તે રમે અમારી સાથ ॥ આનંદમાં દિવસ
નીસરે ॥ એ માનો મુજ વાત ॥૪૧૩॥ ॥ ચો-
પાઈ ॥ ॥ સુંદર આવો શોગટે રમીએ ॥ જેહ પ-
રે તેને ઘેર જમીએ ॥ તેની નારી તે પીરસે અન્ન ॥ એમ જ
ચરે તેની કામન ॥૪૧૪॥ આપણે એટલી કરવી હોડ ॥

ताहरे पोहोंचे मनना कोड ॥ त्यारे सुंदर बोल्यो वचन ॥
हुं छउं तमारो रे तन ॥२१५॥ तेनी केम पीसें कामन ॥
तेज केम मुके राजन ॥ पुत्र जमे माताने हाथ ॥ ते तो जा-
णे छे सरवे वात ॥२१६॥ घरतुं होय तेम रमाय ॥ सा-
चुं वचन कहुं छुं राय ॥ तो अे राजा बोल्यो वाण ॥ सां-
भळ सुंदर चतुर सुजाण ॥२१७॥ अे लग्नमां होय
त्यारे थाय ॥ वहु रांधेने ससरो जाय ॥ ते माटे आपण-
रमीअे ॥ जे हारे तेने घेर जमिये ॥२१८॥ सुंदर आंजु
मुज त्यारे थाय ॥ पांसा लीधा हाथमां राय ॥ अेवुं रा-
जाअे कह्युं त्यांय ॥ ततक्षण नाख्या पांसाय ॥२१९॥
॥ ॥ पूरव छाया ॥ ॥ सुंदर मुज आंजु
थयुं ॥ त्यां जत्यो राजंन ॥ घरमां पेठानो ठाम नहिं ॥ सु-
कीधुं जगजीवन ॥२२०॥ हवे तो हुं शुं करूं ॥ केम करूं हुं
काज ॥ में जाण्युं सुज पामशुं ॥ मरण आव्युं महाराज ॥
॥२२१॥ अेम कहीने नीसर्यो ॥ कल्पांत करतो मंन ॥-
आंजु मुज देजो करी ॥ तव बोल्यो राजंन ॥२२२॥ ॥
॥ चोपाई ॥ ॥ राजा मुजथी बोल्यो वच-
न ॥ सुंदर सांभळ रे नारा तन ॥ कांआंजुं थयुं रे वद-
न ॥ कांई चिंता मां करशो रे मन ॥२२३॥ हवे घेर तुं वे-
हेलो रे जाय ॥ लोकजनने ते अजसुरज थाय ॥ त्यारे सुंद-
र बोल्यो वाण ॥ काल जमवा आव्यो राजन ॥२२४॥
अेम कहीने वीलो त्यां थाय ॥ सुंदर पोताने घेर जाय ॥
अश्व उपर थयो असवार ॥ दुंदुभी वाग्यां तेणी वार ॥
॥२२५॥ ॥ पूरव छाया ॥ ॥ सुंदर
त्यांथी चालीओ ॥ नीशाने वाज्यो घाय ॥ ढोल दमामा
गडगडे ॥ जमा जमा करताय ॥२२६॥ सुंदर आव्यो घ-
र आंगणे ॥ सरवने कर्यो जुहार ॥ बलीहारी जणींतु

જીપરે ॥ જેમ કહેતી રતુકાર ॥૪૨૭॥ ચિંતાતુર દીસે
જરા ॥ વળી તમો કરો વાત ॥ જેહેવું હોય તેહેવું કહો
॥ સુંદર મારા ભ્રાત ॥૪૨૮॥ વચન એવું સાંભળી ॥
મુજ મુક્યો નીસવાસ ॥ મરણ આવ્યું હવે ઢુકડું ॥ લા
ગી મનની આશ ॥૪૨૯॥ મેં જાણ્યું હવે જીવશું ॥ દુ:
જનો ન આવે અંત ॥ રાજ તે હઠે ચડ્યો ॥ ઘણો જેને
મન ખંત ॥૪૩૦॥ ચોપાટ રમીઆ રાયજી ॥ જોલ્યા શે
ડી પેર ॥ રમત રમતાં હારે સહી ॥ જઈએ તેને ઘેર ॥
॥૪૩૧॥ એવું વચન રાયે કહ્યું ॥ ને તેનો થયો વિચાર
॥ તે માટે તમે જાણજો ॥ મોત આવ્યું રતુકાર ॥૪૩૨॥
ઊગરવાનો ઉપાય નહીં ॥ કહ્યું ન માને નાર ॥ સમજાવી
સમજે નહીં ॥ રતનસેનની કુમાર ॥૪૩૩॥ રતુકાર કું
શું કહું ॥ મુજથી કહ્યું નવ જાય ॥ છેતરીયો મુને રાય
જી ॥ તે ચિંતા નવ સમાય ॥૪૩૪॥ તારી મોટી આશ
છે ॥ તું વિના ન રાજ કાય ॥ તે કરતાં લાજ્યું હશે ॥ તે
નો ઘોજો ન હોય ॥૪૩૫॥ મેહેર વણી ઘણી કરી ॥ ક
હ્યું ન માને લગાર ॥ હતું તીહાં સરવે સહી ॥ મરણ આ
વ્યું હવે નાર ॥૪૩૬॥ ॥ ચોપાઈ ॥ ॥
સુંદર બોલ્યો તેણી વાર ॥ હવે મરણ આવ્યું નિરધાર
॥ તું તો સાંભળ રે રતુકાર ॥ હામ રહી તે હઈઆ મો
ઝાર ॥૪૩૭॥ તારી રાણી ન પીરસે અન્ન ॥ જમતાં તે
નાવે રાજન ॥ ને માટે મરવું જાણે દન ॥ હામ હઈઆ
માં રહી ઠામન ॥૪૩૮॥ આજ રે તો મારી જાજે સાર
॥ સાચું માન તું રતુકાર ॥ હવે મારે પેટ કટાર ॥ હામ
રહિ હઈઆમાં સાર ॥૪૩૯॥ તારા ગુણનો ન આવે પા
ર ॥ સાચી વાત કહું છું નાર ॥ મારા ચામની શીવડાવું
પેંજાર ॥ હામ રહી હઈઆમાં સાર ॥૪૪૦॥ પાણી પે

હેસી ખાંધું પાણ ।। મુવાઉપર ખીજે નહીં ગાણ ।। તે મૂ
ટે મરૂં આવાર ।। હામ રહી હઈઆમાં સાર ।।૪૪૧।।
એમ કહીને સુંદર રોય ।। રતુકાર ઊભી ટગમગ જોય ।।
છેક કરી આંસુ લુવે ત્યાંય ।। હામ રહી હઈઆમાંની મા
ય ।।૪૪૨।। વળતી બોલી રતુકાર ।। નઈ સંભળાવું ગુ
ણવંતી નાર ।। તું તો દુઃખ ધરે લગાર ।। ધીરજ મનમાં રા
ખીયેં સાર ।।૪૪૩।। તું તો દુઃખ પામે છે અપાર ।। સુ
ખી કરશે જગદાધાર ।। એમ કહે છે તે રતુકાર ।। ધીર-
જ મનમાં રાખો કામદાર ।।૪૪૪।। એમ કહીને ઊઠી
કામન ।। લજ્જ રાખજે જગજીવન ।। ઘર મધ્યે ગઈ કા
મન ।। ત્યારે હરખ્યો સુંદર મન ।।૪૪૫।। ।।
પૂરવ છાયા ।। ।। ધીરજ મનમાં રાખજો સહી
।। કહે છે રતુકાર ।। કાંઈએક પરપંચે કરી ।। સમજાવું
એ નાર ।।૪૪૬।। એમ કહીને સંચરી ।। ગઈ કુલવતી
ની પાસ ।। કરજોડી કરે વિનતી ।। હું છઉં તમારી દાસ ।।
।।૪૪૭।। ।। ચોપાઈ ।। ।। બાઈ કહું-
છું એકજ વાત ।। તમે રીસ માં કરશો માત ।। સૂરજો
મરે આણીવાર ।। પછે આપણે થાશું ખુવાર ।।૪૪૮।।
રાજા નમવા આવે આપણે ઘેર ।। માટે રસોઈ નીશી પે
ર ।। જો તમે કરશો નાકાર ।। તો મરે રાજાનો કામદાર ।।
।।૪૪૯।। ત્યારે કુલવંતી બોલી વાણ ।। સુરજો મરે તો
થાય કલ્યાણ ।। એનું મુખ દેખે થાય પાપ ।। એ મરે તો-
મટે સંતાપ ।।૪૫૦।। પણ ઓસડે રોગ ન જાય ।। તીખું
કડવું તો કોણ ન ખાય ।। એવું કરે જો શ્રીકમ રાય ।। તો
તો આપણે સુખડું થાય ।।૪૫૧।। ।। પૂરવ
છાયા ।। ।। સુખ થાય તે આપણે ।। એમ કહે
ત્યાં નાર ।। વચન એવાં સાંભળી ।। તવ બોલી રતુકાર ।।

॥૪૫૨॥ અરે જાઈ એ શું કરયું ॥ વિચારો કહે મનડા મ
ન ॥ ભૂરજો મરે દુઃખ ઊપને ॥ લુટી લીયે રાય ધન ॥
॥૪૫૩॥ ॥ ચોપાઈ ॥ ॥ નિશ્ચેં લુટી
લીયે રાય ધન ॥ ત્યારે ઓરતો કરશે મન ॥ તવ આપણું
નહીં કાંઈ જોર ॥ ભુંડા હાલ થાશે જેમ ચોર ॥૪૫૪॥ સા
રે સમજ કુલવંતી નાર ॥ જુવો ચીર મંગાવો ચાર ॥
તું પેટ ભરાને કહે નાર ॥ તું સાંભળ રે રતુકાર ॥૪૫૫॥
ચાર ચૂડલા મંગાવો જાણ ॥ તેમાં જુજવા રંગ પ્રમાણ
॥ કાળો ને કે કોલર જેહ ॥ કુચકડાને સુવરણનો તેહ ॥
॥૪૫૬॥ એવા ચુડલા મંગાવો ચાર ॥ આભૂષણ જુજ
વાં તે સાર ॥ જુજવી ભાતના વળી સાચો ચાર ॥ ઘણા
કીણા અમૂલખ હાર ॥૪૫૭॥ નારી કુંનરનો એક સાર
॥ બીજે સોનેરી નિરધાર ॥ ત્રીજે વળી જંગાળી ઘાટ ॥
ચોથો જો લાવે તે માટ ॥૪૫૮॥ એવા જુજવા ચા
રે રંગ ॥ એવાં વચન કહ્યાં કામન ॥ હાસીને ઊછરંગ
જક મન ॥ ૪૫૯ ॥ જ્યાહાં જેઠ છે કામદાર ॥ મુજ
થકી જો તે રતુકાર ॥ તુજ ઊપર જાણી જલી હાર ॥ તમે
ચીન મંગાવો ચાર ॥૪૬૦॥ ચાર ચુડલા મંગાવો જાણ
॥ જુજવા રંગના પરમાણ ॥ જે લાવો અકોટની જોડ
॥ એક નથને બીજો મોર ॥૪૬૧॥ બીજાં આભૂષણ
છે અતિ ઘણાં ॥ તે તણી નહીં કાંઈ મણા ॥ એવો જો
લ રતુકારે કહ્યો ॥ સુંદર મનમાં ઘણો રાજ થયો ॥
॥૪૬૨॥ ॥ પૂરવ છાયા ॥ ॥ વચન
એવાં સાંભળી ॥ હરખ પામ્યો અપાર ॥ જારે ઊલો ર
હી કરી ॥ તેડ્યા ઠળીત તે ચાર ॥૪૬૩॥ શીવચંદને ચ-
લી મુલચંદ ॥ મોતીચંદ કહેવાય ॥ અવેર ચંદને તેડજો
॥ એમ કહે સુંદર રાય ॥૪૬૪॥ તત્ક્ષણ ત્યાંથી ચાલી

जा ॥ आव्या तेणे ठार ॥ चलोजे चलोजे एम कहे प्र
जोतावे कामदार ॥ ३९॥ ॥ चोपाई ॥ ॥
चलोजे चलोजे तुम साहुकार ॥ तुमकुं जोतावे काम
दार ॥ हम कहे तेह जलदी करो ॥ नहिं तो मार जाईने-
मरो ॥ ३९॥ तुम कह्या करो कामदार ॥ चलो नहिं तो जा
ओगे मार ॥ हम चाकर माणस जाई ॥ हमने रोटी छे
नुकी जाई ॥ ३०॥ ॥ पूरव छाया ॥ ॥
शीवचंद मूलचंद एम कहे ॥ आटाणे शुं काम ॥ रात
होड पोहोर गई जरी ॥ केम तेडे दीवान ॥ ३८॥ चारे
जण लेजा थया ॥ थर थर धूजे देह ॥ पोतीयां पडे छे-
नीसरी ॥ पडे छे पाघडी ते तेड ॥ ३९॥ नवो कामदार
थयो सही ॥ आपणने डंडे जण ॥ आटाणे तेडुं मोक-
ल्युं ॥ कांईक चुक छे नीरवाण ॥ ७०॥ हवे आपणे शुं
घटे ॥ जेशी करयां परियाण ॥ ते गमे ते आपशुं ॥ ए
म मुजथी जोल्या वाण ॥ ७१ ॥ ॥ चोपाई
॥ ॥ चारे लेला मळीने जाय ॥ आव्या ज्यां
छे सुंदर राय ॥ त्यां आवीने कर्यो प्रणाम ॥ त्यारे सुं
दरे दिधां मान ॥ ७२॥ लाव गदल तुं रतुकार ॥ पाथ
री जेसारो शाहुकार ॥ दासी गई ते घर मोझार ॥ गो
थां जाती जाती ते नार ॥ ७३॥ मनमां विचार क-
रती सोय ॥ रजे कुलवंती सांतले कोय ॥ तो तो काम
जशीने जाय ॥ भांड भांड कही छे हाय ॥ ७४॥ वसी
सुंदर जोल्यो नेह ॥ लाव लाव पाथरवाने तेह ॥ त्यारे
जोल्या त्यांहां शाहुकार ॥ अमने हीकर नथी रेलगार ॥
॥ ७५॥ एम कहीने जेठा शाहुकार ॥ हवे शुं कहो छो
कामदार ॥ त्यारे सुंदर जोल्यो नेह ॥ एक काम करोने
तेह ॥ ७६॥ चार चूडला लावो नीरधार ॥ आणी आ

ઘોરૈડાં ચીર ચાર ॥ રંગે જુજવા જાત જે હોય ॥ તેતો સ્ત્ર
ણી આપો સોય ॥૪૭૭॥ અડોટ ઝાલ સુવરણની -
જણ ॥ જડાવ નથને પુર પ્રમાણ ॥ આણી કુમણાં આપો
તે સાર ॥ એમ કહેવા લાગ્યો કામદાર ॥૪૭૮॥ ગમશે
તો અમો રાજશું ॥ એનું મૂલ થશે તે આપશું ॥ ણીઠોક
કું તમને આણી ઘડી ॥ તમે ચાર માલગાડશો ઘડી॥
॥૪૭૯॥ ॥ પૂરવ છાયા ॥ ॥શેઠ
અતિ રાજી થયા ॥ ગઈ તે સઘળી ઘાત ॥ મારગ ચાલ્યા
માનપતા ॥ કહે માંહો માંહે વાત ॥૪૮૦॥ ધરમ રાખ્યો પ
રમેશ્વરે ॥ હતી મનમાં ફાળ ॥ વિઘન કશું નડીયું નહીં
॥ તે કૃપા દીન દયાળ ॥૪૮૧॥ ઘેર પોતાને આવી આ
॥ કર્યો મનમાં વિચાર ॥ ચાલો સ્ટર જઈ લાવીએ
॥ ચઉટેથી નિરધાર ॥૪૮૨॥ એમ વિચારી નિકલ્યા
॥ ધન રાજી નિજ પાસ ॥ કહ્યા પ્રમાણે ચોરીયું ॥ જેતાં
પોહોચે આશ ॥૪૮૩॥ વસ્તુ સરવે લેઈ કરી ॥ આવ્યા
સુંદર પાસ ॥ જોઈ અતિ રાજી થયા ॥ મુજથી કહે સા
બાશ ॥૪૮૪॥ ધન જેહું હોય જેટલું ॥ તે લીને આવા
ર ॥ સમ્ન નહિં એ વાતમાં ॥ એમ કહે કામદાર ॥૪૮૫
॥ જેહું તે મુજથી વધ્યા ॥ શાણા ને શાહુકાર ॥ તેમ પ્ર
માણે આપીયું ॥ ગણું લવ ડીધી ચાર ॥૪૮૬॥ જુહુ
ર કરીને આવીયા ॥ પોતાને અવાસ ॥ મનમાં જકુ
રાજી થયાં ॥ પોહોચી સરવે આશ ॥૪૮૭॥ વસ્તુ સ
રવે લઈ કરી ॥ આવી ત્યાં રતુકાર ॥ જઈ તું વેગે આ
પ્યની ॥ જ્યાં કુલવતી નાર ॥૪૮૮॥ ॥ જ્યો
પાઈ ॥ ॥ તે રજની તેવી જાય ॥ પ્રાતઃકાળ
ની રે વેળા થાય ॥ રાત પાછલી ઘટિકા ચાર ॥ ત્યારે
ઊઠી કુલવતી નાર ॥૪૮૯॥ રસોઈ કરે રૂડી તે જઈ યા

र ॥ चतुर नारीने तेणीवार ॥ छप्पन भोग कीधां छे-
कामन ॥ तेतो राजन करायां भोजन ॥४९०॥ तरे तरे
ना कीधां छे शाक ॥ तेमां चूक नहीं रे नराक ॥ भक्ष्य
गरमा गरम छे अपार ॥ वली रायतां कीधां निरधार
॥४९१॥ लींबु केरी नागोरे आचार ॥ सरवे राख्या-
तिहां तईआर ॥ पछे कहे कुलवती नार ॥ तुं तो सां-
भलने रतुकार ॥४९२॥ छ दिवस चढ्यो घडी चार ॥
राजने तेडावो आणी वार ॥ सामग्री सरवे तईआर
॥ माटे मुजराने कहुं निरधार ॥४९३॥ सुणी कुलव-
तीना वचन ॥ रतुकार थई छे प्रसन्न ॥ आवी सुंदरने
कहे छे वात ॥ तुं तो सांभळ मारा भ्रात ॥४९४॥ सरवे
रसोई तईआरज थई ॥ तेडी लावो राजने जई ॥ आ-
ज तुठ्या छे श्री भगवान ॥ राख्युं तमारुं आदर ने मा-
न ॥४९५॥ मारे पधारो तेडवा वीर ॥ राजीने हृदया-
मां धीर ॥ तेडी आवो झट तमे साथ ॥ वार करशो न-
हिं रे लगार ॥४९६॥ एवुं सुणतामां कामदार ॥ मन
मां राजी थयो अपार ॥ मारा भाग्य तणो नहीं पार ॥
आज समज कुलवती नार ॥४९७॥ ॥ पूरव
छाया ॥ ॥ सुंदर त्यांथी चालीयो ॥ आव्यो
रायने द्वार ॥ प्रीत करी पधारीए ॥ भोजन थयां तई-
यार ॥४९८॥ माटे वेगे ऊठीए ॥ होंसीला महाराज ॥
पुत्र घेर पधारिये ॥ भोजन करवा काज ॥४९९॥ ॥
चोपाई ॥ ॥ चालो चालो आपणे द्वार ॥ भो-
जन थयुं तिहां तईआर ॥ सुंदरे एवां कह्यां वचन ॥ ज-
मवाने चालो राजन ॥५००॥ राज घोडे थयो असवा-
र ॥ चालो चालो करे तेणी वार ॥ आव्या ततक्षण घेर
कामदार ॥ सामी मीली छे रतुकार ॥५०१॥ ॥

પૂરવ છાયા ॥ ॥ દાસી દોડી ઘર વિષે ॥ જાઈ
આવ્યો તે રાજન ॥ ભૂપજો તેડી લાવીઓ ॥ કરાવો દરે
લોજન ॥૫૦૨॥ કુલવતી વળતી એમ વદે ॥ પરસાળે તે
ડી લાવ ॥ આસન આપતું બેસવા ॥ દેઈને આદરભા
વ ॥૫૦૩॥ પછે રાજા આવીઆ ॥ લીડાવ્યા ત્યાં દ્વાર
॥ પરસાળે બેઠા સહી ॥ પાસે બેઠા કામદાર ॥૫૦૪॥
રતુકાર વળતી એમ કહે ॥ તમે ભલે પધારા રાજન ॥
રાજા વળતા બોઈ રહ્યા ॥ ધન્ય ધન્ય એ કામન ॥૫૦૫॥
જેની દાસી ચતુર છે ॥ તેથી ઉત્તમ નાર ॥ ધિક ધિક
મારો મનજો ॥ ધિક પડયા સંસાર ॥૫૦૬॥ ॥
ચોપાઈ ॥ ॥ ત્યાંતો જમવા બેઠા રાજન ॥
કુલવતીએ દીધા બહુ માન ॥ પેહેર્યો ચુડો સુવરણ
નો જેહ ॥ ઓઢ્યું ચીર અનુપમ તેહ ॥૫૦૭॥ પેહેરાં
ઝાંઝર ઉત્તમ સાર ॥ કડલાં કાંબી તણો ઠમકાર ॥ કા
ને સુવર્ણ કેરી ઝાલ ॥ નાકે મોર અમૂલક માળ ॥૫૦૮
॥ રૂડી રાજડી શોભે વળી ॥ ઓગનીઆં પાસે વાદળી ॥
એસેરી યુને ગોફણી સાર ॥ ફરતી ઘુઘરી કેરો ઘમકા
ર ॥૫૦૯॥ ચીણમાળા ગળામાં સાર ॥ કુમકુ પટ જા
ણું તેવાર ॥ કંઠે મુગતા કેરો છે હાર ॥ હીરા રતન તણો
ચલકાર ॥૫૧૦॥ હાથે કંકણ બાજુબંધ ॥ મહા કામી
જોઈ થાએ અંધ ॥ શોળ શણગાર સજ્યાં તે નાર ॥
કર લીધી બાજટ ભમરી જાર ॥૫૧૧॥ હેમ બાજટ
મુક્યો છે પાસ ॥ જોને રૂપાનો તેની પાસ ॥ હેમ બાજ
ટ હીરા જડિયા ॥ કીયા જડીઆ એ રૂડા જડીયા ॥૫૧૨
॥ ફૂદડી ફરતી તેમાં સોય ॥ વળી ઝાંઝર રૂડો થાય ॥
રૂપા કેરો બાજટ ત્યાંહે ॥ હેમ ઘુઘરી ટાંકી તે માંહે ॥૫૧૩
॥ કીયા કારીગરે તે ઘડીયા ॥ હીરા રતન અમૂલક જડી

યા ॥ વળી ગહેલ જે લીધાં સાર. ॥ તેતો જેસવાને નિર
ધાર ॥૫૧૪॥ પાંચ પટોળી કહે જે નેહ ॥ તેના ગાહલાં
લીધાં તેહ ॥ તે ગાહલ આપે રતુકાર ॥ લઈ પાછસ્યાં તે
ણી વાર ॥૫૧૫॥ પછે તતપર થઈ કામિની ॥ વેગેં ચાલી
ગજગામિની ॥ ઘરમાંથી નીસરી જહાર ॥ તેમાં કોઈ ન
લાગી વાર ॥૫૧૬॥ રમઝમ કરતી નીસરી ॥ જાણે ઇં
દ્રપુરીની પરી ॥ જાનટ મુક્યો રાજાની પાસ. ॥ મનમાં-
થઈ બહુ ઉલ્લાસ ॥૫૧૭॥ જીજે જાનટ રૂપાનો નેહ
॥ સુંદર આગળ મુક્યો તેહ ॥ અવલે હાથ મુક્યો કામ
ન ॥ મુજ અવે નહિં લાભન ॥૫૧૮॥ રાજા મનમાં કરે વિ
ચાર ॥ લક્ષણવતી દિસે છે નાર ॥ મહા રૂપ તણો અવતા
ર ॥ તેમાં ખામી નહિં રે લગાર ॥૫૧૯॥ ॥ પૂર
વછાયા ॥ ॥ રાજા ને વિસ્મે થયો ॥ ધન્ય ધ
ન્ય એ કામન ॥ ભાગ્ય મોટું સુંદર તણું ॥ એ નારી રૂ
પ રતન ॥૫૨૦॥ પચાસ રાણી છે જરી ॥ મારા ઘરમાં
સોય ॥ એવું રૂપ દીઠું નહીં ॥ જન્મારમાં નહીં કોય ॥
॥૫૨૧॥ ॥ ચોપાઈ ॥ ॥ પછી કુલ
વંતી ઘરમાં રે ગઈ ॥ ઉતાર્યાં આભૂષણો ત્યાં સહી ॥
જીણાં વસ્ત્ર પેહેર્યાં તેણી વાર ॥ જાદલીયા સરવે શણ
ગાર ॥૫૨૨॥ ચુંગ પેહેર્યો કોરેલો જાણ ॥ દક્ષિણી ચી
ર ઓઢ્યું નિરવાણ ॥ હાથમાં ભોજન કેરો થાલ ॥ ભર
ભોજન છે મછરાલ ॥૫૨૩॥ મેહેલ્યો થાળ બહુવિધ-
કીધ ॥ અવળે હાથે સુંદરને દીધ ॥ નારી કલા કરે છે અ
પાર ॥ તેનો કોઈ ન પામે પાર ॥૫૨૪॥ આતો બીજ દીસે
છે કામન ॥ એમ વિચારે મનમાં રાજન ॥ સુંદર તે છે જે
રેડી નાર ॥ એના તેજ તણો નહિં પાર ॥૫૨૫॥ ॥
પૂરવછાયા ॥ ॥ રાજા ત્યાં જોઈ રહ્યો ॥ ભલો

સુંદર કામદાર ॥ સરજે સરજું રૂપ છે ॥ એને જે છે ના
ર ॥૫૨૬॥ કનક વરણ કામની નશી ॥ સોહે શોલ શ
ણગાર ॥ હંસાગમની મૃગલોચની ॥ પદમની પ્રેમ અ-
પાર ॥૫૨૭॥ ભર જોબન વરસ સોળમાં ॥ ગજગામિ-
ની તે નાર ॥ ધિક ધિક અવતાર તે માહરો ॥ એમ રાજા
કરે વિચાર ॥૫૨૮॥ ॥ ચોપાઈ ॥ ॥
રાજા મનમાં કરે વિચાર ॥ પછે ઘરમાં ગઈ તે નાર ॥ તેણે
શણગાર ઉતાર્યો જાણ ॥ પછે પેહેર્યો ત્રીજે પ્રમાણ ॥
॥૫૨૯॥ ડોરો ચૂડલો પેહેર્યો તે સાર ॥ ઓઢી ચૂંદડી
તે નિરધાર ॥ પેહેર્યાં આભૂષણ જીર્ણ જાણ ॥ દીઠે મો
હ ઉપજે નિરવાણ ॥૫૩૦॥ જાણે કન્યા પરણી સાસ
રે જાય ॥ એવું મનમાં વિમાસે રાય ॥ લીધો ભાત ઘૃ-
તને દાલ ॥ જેનો સ્વાદ ઘણો રસાલ ॥૫૩૧॥ ઠમક ઠમ-
ક મુકતી પાય ॥ કામી નરનો તે જીવડો જાય ॥ રાજાને-
વાગ્યું ત્યાં કામબાણ ॥ તેની શુધ ટળી નિરવાણ ॥૫૩૨
॥ વપુ કંપે ને મુખ નવ બોલાય ॥ તેની ગતિ જોતાં એવી
થાય ॥ ગઈ સુંદર કરે ત્યાં વિચાર ॥ રાજા કામી થયો-
નિરધાર ॥૫૩૩॥ ॥ પૂરવ છાયા ॥ ॥
શુધ શરીરની નવ રહી ॥ રાય વિચારે મન ॥ મેં જાણ્યું
સ્ત્રી જે સહી ॥ પણ દિસે છે ત્રણ ॥૫૩૪॥ પચાશ પુરી
પરણીયો ॥ કોઈ નહિં એવી નાર ॥ ધિક ધિક મનજો મા
હરો ॥ ધન્ય સુંદર અવતાર ॥૫૩૫॥ ॥ ચોપાઈ
॥ ॥ એમ રાજા વિચારે મન ॥ વળી ઘરમાં ગ
ઈ તે કામન ॥ ઉતાર્યો વેગેથી શણગાર ॥ નવા જીર્ણ પે
હેર્યા તે નાર ॥૫૩૬॥ કંચકડાનો ચુડો શોભે સાર ॥ જાં
હે જાણુને જે નજા નિરધાર ॥ જાંઘણીની સાડી પેહેરી નિ
રવાણ ॥ નાડેવાળી પેહેરી પ્રમાણ ॥૫૩૭॥ જાણે ગુજરાત

ણની સરી જહાર ॥ હાથમાં ધર્યો દૂધનો થાળ ॥ માંહે
સાકર ભેળી છે સાર ॥ જયફળ એલચી ખુશબો જો ધરી ॥
॥ ૫૩૮ ॥ ॥ પૂરવછાયા ॥ ॥ જાહો
ર નીશારી કામની ॥ હાથમાં દુધનો થાળ ॥ તે રાજા ત્યાં
જોઈ રહ્યો ॥ પડી પેટમાં ફાળ ॥ ૫૩૯ ॥ શુધ બુધ સરવે-
વીસરી ॥ ભાન નહીં લગાર ॥ જે જે લાવણ્ય સુંદર તણું
॥ તે સ્ત્રી છે ચાર ॥ ૫૪૦ ॥ ધન્ય ધન્ય સુંદરનો મનજો ॥
ધન્ય ધન્ય એ કામદાર ॥ ધન્ય ધન્ય રાણી કુલવતી ॥ જેની
દાસી રતુકાર ॥ ૫૪૧ ॥ મુજ ઘર એવી કોઈ નહીં ॥ જેતા-
માં તે નાર ॥ હવે તે હું શું કરૂં ॥ રાજા કરે વિચાર ॥ ૫૪૨
॥ સુંદરને મારૂં સહી ॥ ચારે લેઉં કામન ॥ જેતાં સુંદર ચે
તીઓ ॥ કામી થયો રાજન ॥ ૫૪૩ ॥ ॥ ચોપાઈ ॥
॥ સુંદર સમરે સારંગપાણ ॥ મધુસૂદનજી રાખજે માન
॥ મજુજ પાસું છે તમ તણું ॥ સાચું વચન હું તો ભણું ॥ ૫૪
॥ તમે ઊધર્યા ભક્ત અનેક ॥ તેનો કેહેતાં ન આવે છે
ક ॥ લજ્જા રાખજો કમળાપતિ ॥ એમ સુંદર કરે વીનતિ ॥
॥ ૫૪૫ ॥ સુંદર મનમાં એવી ભક્તિ કરે ॥ તવ રાજાનું મ
ન પાછું ફરે ॥ કેમ મારૂં એ કામદાર ॥ મુજ નિચાસે ન-
હિં લગાર ॥ ૫૪૬ ॥ પાપદૃષ્ટી મારી થઈ ॥ વૃધ્ધપણમાં
બુધ્ધિ કેમ ગઈ ॥ સરપ કરંડને જવડો જાય ॥ ત્યારે સ્ત્રી
લતી ક્યાં થાય ॥ ૫૪૭ ॥ ક્ષણભંગુર તો આ છે દેહ ॥ શરી
ર પડવાનું છે તેહ ॥ મજુજ પાપી એવી બુધ્ધ ॥ ત્યારે રા-
જાના મનમાં થઈ શુધ્ધ ॥ ૫૪૮ ॥ એતો માહારે પુત્ર સમા
ન ॥ એમ રાજાને આવ્યું જ્ઞાન ॥ ખોટી દૃષ્ટી મેં તો કરી ॥
એતો લગની મારી દીકરી ॥ ૫૪૯ ॥ જભી ઊઠ્યો છે તે-
ણી વાર ॥ તેને વાર ન લાગી લગાર ॥ હવે પાડશો
ઓશીંગણ ચાણ ॥ પસલી આપીને આહિંથી જાણ ॥

॥૫૫૦॥ પાંચહજાર રૂપીઆ ચાર ॥ ચાર સ્ત્રીને રતુકા
ર ॥ પગે લાગીને રાજા જાય ॥ તેને ચીચાટ અંગ ન મા
ય ॥૫૫૧॥ ॥ પૂરવછાયા ॥ ॥ રાજા
તતક્ષણ ઊઠીયા ॥ ઘોડે થયા અસવાર ॥ સુંદર લે
ગો ચાલીયો ॥ તે આવ્યા રાજ દુવાર ॥૫૫૨॥ તે દિ
વસ એમ વહીગયો ॥ થયો તે સંધ્યાકાળ ॥ શીખ
માગીને સંચર્યા ॥ સુંદર તે તતકાળ ॥૫૫૩॥ રૂલ
જી આવી ગોદડી ॥ માંહે ઝૂલ જરીગોર ચાર ॥ તે સુ
વાને પાથરી ॥ માંહે લાડુઆ ચાર ॥૫૫૪॥ સુંદર તો
સુતો જઈ ॥ રાજા સુવા જાય ॥ સજ્યામાં પોઢ્યો જ
ઈ ॥ સ્ત્રી તલાંસે પાય ॥૫૫૫॥ પચાસ રાણી ભેળી
થઈ ॥ બોલી મુખથી વચન ॥ સુંદર નારી એઠ આ
વીયા ॥ તે દેખાડો રાજન ॥૫૫૬॥ એમ કહી પગ તા-
ણતી ॥ દુઃખ દેતી નાર ॥ અમે તે એશું સહી ॥ અસ્ત્રી
ને કામધાર ॥૫૫૭॥ ॥ ચોપાઈ ॥ ॥
મુઓ મુઓ કહે રાજન ॥ તમે દુઃખ માંડ્યો કામન ॥ તો એ
નારી ન મુકે કેડ ॥ ઘણી કરતી રાજાની છેડ ॥૫૫૮॥
ત્યારે રાજાને ચઢી ઘણી રીસ ॥ કાઢી મેલું છે દુઃ-
શીશ ॥ ત્યારે નારી બોલી વચન ॥ લજવાશો તમે
સ્વામિન ॥૫૫૯॥ અમે કરશું નીચાં કામ ॥ ત્યારે
જશે તમારૂં નામ ॥ લાકડાં ઘાસ વેચી પેટ ભરશું ॥
તમારા મોહોલ હેઠે નીંદશું ॥૫૬૦॥ પ્રથમ બોલ્યા
તા મુખથી બોલ ॥ તમો આપ્યો તો અમને કોલ ॥ મા
ટે દેખાડો તે નીરધાર ॥ રાજા કહે અસ્ત્રી છે ચાર ॥
॥૫૬૧॥ જેને દેખીને રીઝે મન ॥ તેનું કેમ જોવા એ વ
દન ॥ તમે પચાસ રાણી કામન ॥ કુરમુખણી છે લા
મન ॥૫૬૨॥ ॥ પૂરવછાયા ॥ ॥

રૂપ એનું અદ્ભુત છે ॥ તમે નહિં દાસી રાજતોલ મ
પરપંચે કરી દેજાડશું ॥ એમ રાજ બોલ્યા બોલ ॥૫૬૩
॥ કોલ આપ્યો તે નારને ॥ રાજ થઈ અપાર ॥ આતુર
તા મળવા તણી ॥ સમરે નગદાધાર ॥૫૬૪॥ ॥
ચોપાઈ ॥ ॥ રાજ ઊઠ્યો તે પ્રાતઃકાળ ॥ સું
દર આવ્યો સભા મોઝાર ॥ ત્યાર રાજાએ દીધાં માન ॥
ભલે આવ્યા તમે પરધાન ॥૫૬૫॥ આજ રાતે મેં દીઠો
ખેલ ॥ તેતો તમને કહું છુ પહેલ ॥ એક નારી તે નીલે વા
ન ॥ તેતો દીસે રૂપ નિધાન ॥૫૬૬॥ તેણે ધાજલી ઓ
ઢી શાશ ॥ જાણે કરે છે ઘણેરી રીસ ॥ એક ત્રિશૂલ કર
મોઝાર ॥ સિંદૂર તિલક કર્યું નિરધાર ॥૫૬૭॥ ॥
પૂરવ છાયા ॥ ॥ સિંદૂર તિલક તે કર્યું ॥ ભેસ્વ
ને દીઠી નાર ॥ ખપર હાથે તે ખરે ॥ મુજ કરતી પોકાર
॥૫૬૮॥ જાણું જાણું રાજ તુજને ॥ જાણે તુજને પરધાન
॥ નીવેર મારા નવ કરો ॥ સમજુ થઈ રાજન ॥૫૬૯॥
ઊજાણી કરો માહરી ॥ ભદ્રકાલી છે નામ ॥ માહાકા
લેશ્વર શીવ સહી ॥ તમે આવો તેણે ઠામ ॥૫૭૦॥ તે મા
ટે તમે સાંભળો ॥ સોપ્યા મુજ ઠામ દાર ॥ ઊંટ ઢંઢેરો ફેર-
વો સહી ॥ આવે સહુ નરને નાર ॥૫૭૧॥ ॥ ચો
પાઈ ॥ ॥ સહુ આવે ત્યાં નરને નાર ॥ પડો વજડા
વ્યો આણી વાર ॥ ત્યારે સુંદર બોલ્યો પ્રાણ ॥ એમાં સર
વેનું થાય કલ્યાણ ॥૫૭૨॥ ઢંઢેરો ફેરવ્યો તે ઘડી ॥ તેને વ
ર ન લાગી વડી ॥ ગામ મધ્યે જે નરને નાર ॥ ઊજાણી જવ
થાજો તઈઆર ॥૫૭૩॥ ભદ્રકાળી માતા છે જ્યાહાં ॥
બાળ ગોપાળ આવજો ત્યાહાં ॥ એમ ફરી આવ્યો પાછો
ઠામ ॥ આવી ઢેઢે કર્યો પ્રણામ ॥૫૭૪॥ અને ફરીને આ
વ્યા રાય ॥ પછે પોતાને ઘેર જાય ॥ રાજા બોલ્યો તેણી

॥ તું તો સાંભળ મુજ કામદાર ॥૫૭૫॥ હવે વાત કહું છું
અમો ॥ કુંદન તેડી લાવો તમો ॥ તમે કોઈ ન લગાડશો
વાર ॥ અજો સામગ્રી કરો તઈઆર ॥૫૭૬॥ ॥
પૂરવ છાયા ॥ ॥ ત્યારે સુંદર વળતું બોલીઓ ॥
તમે સાંભળો મારી વાત ॥ હું સાચું તમને કહું ॥ જોદું ન
જોડું તાત ॥૫૭૭॥ તમ સાથે અમે આવશું ॥ આ-
વી ન શકે કામન ॥ ચારે ને કુંજે સહી ॥ કોઈ નવ માગે
અન્ન ॥૫૭૮॥ એકને તાપ આવે સહી ॥ બીજો વમન
કરે અપાર ॥ ત્રીજાનું માથું દુખતું ॥ ચોથીને નથી કરા-
ર ॥૫૭૯॥ ॥ ચોપાઈ ॥ ॥ સુંદરે
એવાં કહ્યાં વચન ॥ રાજાનું નવ માન્યું મન ॥ સુંદર
એમ ન હાંવે લગાર ॥ જેમ તેમ બોલી તડો તાર ॥૫૮૦
॥ વેહેલમાં જેશી ચારે આવે ॥ ત્યારે રાણીઓ મન ઘણું
લાવે ॥ સુંદર ફેર વાણી કરે અપાર ॥ એર ચાલે ન-
હીં લગાર ॥૫૮૧॥ રાજા કહે હવે વેહેલા થાજો ॥
તમે પોતાને મંદીર જાજો ॥ સુંદર ત્યાંથી ઉઠ્યો તેણી
વાર ॥ પછે ઘોડે થયો અસવાર ॥૫૮૨॥ વાગ્યાં ન-
ગારાં ઢોલ નીશાન ॥ નકી પોકારે મુખથી વાણ ॥ જા-
ન સુંદર સમો નહિં કોય ॥ એવી વાત નગરમાં હોય
॥૫૮૩॥ ॥ પૂરવ છાયા ॥ ॥ સુંદર
આવ્યો ઘર વિશે ॥ સરવને કરી જુહાર ॥ ચાકર સહુ
પાછા વળ્યા ॥ ત્યારે બોલી રખુકાર ॥૫૮૪॥ આવો
આવો વીર માહરા ॥ ભોજન કરી તજાવ ॥ પાણી ઉ-
નાં છે સહી ॥ ઝટપટ વેહેલા નાવ ॥૫૮૫॥ સુંદર મો-
હોલમાં આવીઓ ॥ ત્યારે ભીડ્યાં દવાર ॥ રખુકાર ઘર
માં ગઈ ॥ ભોજન નીરી વાર ॥૫૮૬॥ કુલવંતી બોલી
સહી ॥ તુજને એવડું શું થાય ॥ આંસલી પડી છે પોક-

मां ॥ तुं त्यां लईने जाय ॥ ५८७ ॥ ॥ चोपाई ॥
॥ ॥ त्रांसली लीधी त्यां कामन ॥ मांहे जीवड
पापड जन्न ॥ ते त्रांसली लईने चाली दास ॥ जान
वी ऊभी सुंदरनी पास ॥ ५८८ ॥ नमो नमो मारा धी
न ॥ कुंतो लामणां लेणां ताहरां ॥ सुंदर जोले नहिं ल
गार ॥ आजु मुज दीठुं तेणी वार ॥ ५८९ ॥ साचुं कहोने
मारा नाथ ॥ जे होय तारा मनमां वात ॥ त्यारे सुंदर
कहे छे त्यो जुहार ॥ मारे मरवुं नक्की आ वार ॥ ५९० ॥
॥ पूरव छाया ॥ ॥ राजाजे मुजने क
ह्युं ॥ जीजणी करवी सार ॥ वेहेले जेशी आयजे ॥ तमो
नरने नार ॥ ५९१ ॥ पचास राणी माहरी ॥ आवे सरवे
जाण ॥ नगर लोक सरवे आवशे ॥ कह्युं वचन प्रमाण
॥ ५९२ ॥ शेहेरमां ढंढेरो फेरव्यो ॥ काले जशे जाण ॥ ते
माटे तुजने कहुं ॥ मरण आव्युं निरवाण ॥ ५९३ ॥ जा
जरे जशे माहरी ॥ ते माटे मरवुं सार ॥ वचन एवां
सांभली ॥ तव जोली रतुकार ॥ ५९४ ॥ ॥ चो
पाई ॥ ॥ एम कही चाली रतुकार ॥ आवी ज्यां
कुलवंती नार ॥ जाई सांभळो कहुं वचन ॥ मुरजो म
रे छे आणे दन ॥ ५९५ ॥ मुरजो मरे तो आपणे दुःख
होय ॥ राजा कठी लीजे त्यां सोय ॥ दरशन करवा जऊं
कामन ॥ जेमां काई न जेसे धन ॥ ५९६ ॥ तव जोली
कुलवती नार ॥ मुखे वारे वारे करे नंजास ॥ पराणे पु
ण्य आपणे थाय ॥ साचुं कहुं छुं मोरी माय ॥ ५९७ ॥
राड तारे मनजे लावे ॥ त्रण वेहेल मंगावी लावे ॥ एवां
वचन कुलवतीए कह्यां ॥ ते सरवे रतुकारे लह्यां ॥ ५९८
॥ पूरव छाया ॥ ॥ वचन एवां सांभ
ळी ॥ ततक्षण आवी नार ॥ वेहेल त्रण मंगावी सही ॥ जे

મ કહેતી રતુકાર ॥૯૯॥ તે ઘડી વેહેલ મંગાવી ત્યાહાં
॥ છોડી આંગણા મોઝાર ॥ કમાડ ત્યાં લીડાવીઆં ॥ સુ
રજા પાસે તે વાર ॥૧૦૦॥ આજી રાત ઉજાગરો ॥ વે
લ ગુંથાણી હોય ॥ માહ્યાં તેના કાણીઆં ॥ તે કળી ન
શકે કોય ॥૧૦૧॥ માંહે જેકુડી સલ્યા સહી ॥ ત્રણ ત્ર
ણ મણની સાર ॥ હીરા દોરીએ દેજાવી સહી ॥ હિકમ
ત કીધી નાર ॥૧૦૨॥ ॥ ચોપાઈ ॥ ॥ એ
વી હિકમત કીધી નાર ॥ પ્રાતઃકાળ થયો તેણી વાર ॥
ત્યારે મનમાં કર્યો વિચાર ॥ હવે શું કરીએ નિરધાર ॥
॥૧૦૩॥ જાગજ આપણ નઈએ સોય ॥ તેમ વાત પ્ર
ગટ ના હોય ॥ રાત જે ઘરિકા ત્યાં રહી ॥ કુલવતી તે તત
પર થઈ ॥૧૦૪॥ દાતણ પાણી કીધું કામની ॥ જે ઘડિ
કા રહી જામિની ॥ વેહેલ જોતરી તેણી ઘડી ॥ તેમાં કુ
લવંતી બેઠી ચડી ॥૧૦૫॥ ચાર વેહેલ ચાલી એટલે ॥
ગામના ઘોડા ચાલ્યા તેટલે ॥ સાત પોળીઆ છે ત્યાં-
અપાર ॥ સરવે ચાલ્યા નગરથી બાહાર ॥૧૦૬॥ જ
વું છે ત્યાં એક જોજન ॥ માતાના કરવા દરશન ॥ કોઈ
ઘોડે થયા અસવાર ॥ કોઈ વેહેલે બેઠા નિરધાર ॥૧૦
॥ લીધાં શ્રીફળ સુંદર રૂપ ॥ લીધાં ઘાટડી મોડીઆં અ
નુપ ॥ હરજ આણે તે નરને નાર ॥ મેળો માતાનો થ
યો અપાર ॥૧૦૮॥ આજું નગર નીસર્યું બાહાર ॥
સુંદર ઘોડે થયા અસવાર ॥ આવ્યો તેતો રાજકુંવા
ર ॥ રાજા હવે કેટલી વાર ॥૧૦૯॥ વેહેલા ચાલો
તમે રાજન ॥ આગળ ચાલ્યાં અમારા કામન ॥ સુણી
રાજ ઉઠ્યા તેણી વાર ॥ ઘરમાં બોલાવણ કીધી નાર
॥૧૧૦॥ સુંદર નારી આગળ જાય ॥ પછે રાણી ત્યાં ત
નપર થાય ॥ તમને કેમ અસુરજ થાય ॥ એવાં વચ

ન કહે છે રાય ॥૬૫૧॥ ॥પૂરવ છાયા॥ પ
વચન એવાં સાંભળી ॥ ઉતાવળી સરવે થાય ॥ વસ્ત્ર આ
વણાં પેહેરીયાં ॥ આભૂષણ ભુલી જાય ॥૬૫૨॥ કોઈએ
તેલ માંથે ઘાલ્યું નહિં ॥ અંજન આંજે ના હોય ॥ સહુ ટીક
થઈ ઉઠી જરી ॥ વેહેલ મધ્યે બેઠી સોય ॥૬૫૩॥ નગર બ
હાર આવિયાં ॥ વેહેલ ગાડાં હોડ્યાં જાય ॥ તેને જોઈ જ
કુ હરજીઆં ॥ જનસેન રાજાય ॥૬૫૪॥ અસવારી આ
ગળ થઈ ॥ સહુ સેન્ય ચાલ્યું જાય ॥ વેગે વહી સહુ આ
વીઆં ॥ જનકાલી માતાય ॥૬૫૫॥ ॥ ચોપા
ઈ ॥ ॥ જનકાલી માતા કહેવાય ॥ સરવે લોક
તે આવ્યા ત્યાંહે ॥ રસોઈ નીવેદ કરે ત્યાં સોય ॥ સહુને
આનંદ મનમાં હોય ॥૬૫૬॥ દેહેરા ખોલી કીધી માહા-
જન ॥ તંબુ ખડા કીધા રાજન ॥ સુંદર વેહેલ છોડી એ-
કાંત ॥ ચિંતાથી મન નહી કંઈ શાંત ॥૬૫૭॥ રખે ખબર
પડે ત્યાં રાય ॥ આજ રે તો નહિં ઘર માંય ॥ તે માટે બીહે-
છે મન ॥ રખે વાત જાણે રાજન ॥૬૫૮॥ પોત પોતાનું કા
મ થાય ॥ કચેરી ભરી બેઠો રાય ॥ મોટા મોટા શાહુકા
ર આવે ॥ તેનો રાજાને મનડે ભાવે ॥૬૫૯॥ રાગ રંગ થા
એ અપાર ॥ રાજા પાસે બેઠા કામદાર ॥ લોક સરવે કુ
તૂહલ કરે ॥ માતાને જઈ નૈવેદ ધરે ॥૬૬૦॥ ॥
પૂરવ છાયા॥ ॥ નીવેદ નાના વિધ તણાં ॥ જઈ મુ
કે રાજન ॥ સ્તુતિ કીધી અતિ ઘણી ॥ પાસે બેઠા પ્રધા
ન ॥૬૬૧॥ ભક્ષ દીધું ત્યાં સહી ॥ છે આવ્યા સભાય ॥ ક
ચેરીમાં બેઠા સહી ॥ ભોજન તતપર થાય ॥૬૬૨॥ ॥
॥ ચોપાઈ ॥ ॥ રસોઈ થઈ તિહાં રાજન ॥ થાળો
થાળો જમીએ પ્રધાન ॥ સાહુકાર જોળ્યો તેણીવાર ॥-
જમણ તારે જમશે કામદાર ॥૬૬૩॥ અમને ગરીબને દી

चो मान ॥ प्रधान जमवा मेहेलो राजन ॥ मोतीचंद ए
म कहे छे सोय ॥ राजा कहे वात न होय ॥ १२४ ॥ एम
घेर जमे कामदार ॥ त्यारे तेडवा आवी रतुकार ॥ चा-
लो चालो रे मारा भाई ॥ भोजननी तईआरी थई ॥
॥ १२५ ॥ ॥ पूरव छाया ॥ ॥ चालो चा-
लो वीरा माहेरा ॥ करवाने भोजन ॥ रसोई ठरी जाय
छे ॥ वाट जुवे कामन ॥ १२६ ॥ तव राजा मुज जोली-
ओ ॥ ए केम जमे कामदार ॥ भोजन नाना विध तणां
॥ जेने जस्वी छे च्यार ॥ १२७ ॥ हसीने सुंदर परवर्यो
॥ आव्यो पोताने दुवार ॥ जमा जमा वीरा माहेरा ॥ एम
वदती रतुकार ॥ १२८ ॥ ॥ चोपाई ॥ ॥
जमा जमा ते वीर माहरा ॥ कुंती विधन लई ताह
रा ॥ चालो रसोई करीने जाय ॥ आवो आवो रे त
खुमांय ॥ १२९ ॥ सुंदर तखुमां गयो तेणी वार ॥ त्यां
रे जोली कुलवंती नार ॥ मुवाने आघो जेसाड सोय ॥
मुज दयुं तो पाप न होय ॥ १३० ॥ त्रांसली वचमां पडी
छे जाण ॥ आप पीटचाने परमाण ॥ त्रांसली लईने कर
भोजन ॥ तेमां एकुं जुकुं पीरश्युं नार ॥ १३१ ॥ ॥
पूरव छाया ॥ ॥ सुंदर आगण मेहेल्युं स-
ही ॥ मांहे जीचड पापड जाण ॥ सुंदर कवल लरे न
ही ॥ जलो तुं जुणजवन ॥ १३२ ॥ मीठुं आगुं नाखी-
युं ॥ मांहे पाणी नाख्युं सोय ॥ गरीज सरवे जमे जरा
॥ तेणे पण आ दुःख न होय ॥ १३३ ॥ एम कहीने गीठी
ओ ॥ कवल जस्या जे चार ॥ मान दीधुं अन्न देवने ॥
आव्यो सला भोजनर ॥ १३४ ॥ पान सोपारी मुजमां धरी
॥ लवींग एलची सार ॥ ते चावंतो आवीओ ॥ घडी नव-
लागी वार ॥ १३५ ॥ राजा चाणी जोलीआ ॥ शुं जमीआ

કામદાર ॥ વેહેલા વેહેલા આવીઆ ॥ કાંઈ ન લાગી વાર
॥૯૩૬॥ સુંદર કહે સુણો રાયજી ॥ મુજને એક વ્યસન ॥
કસુંબો પીધો નહીં ॥ લાવ્યું નહિ કાંઈ અન્ન ॥૯૩૭॥
॥ ॥ચોપાઈ॥ ॥ એક પડ્યું છે મુજને વ્ય-
સન ॥ કાંઈક હુંગો કરૂં રાજન ॥ ત્યારે મુજને લાવે અન્ન
॥ સત્ય માનીએ મુજ વચન ॥૯૩૮॥ ત્યારે મીઠાઈ દીધી
છે ત્યાંય ॥ શેર જે લઈ સુંદર જાય ॥ જીજી મિંયાંને વેહે-
ચી દીધ ॥ ઘણા દિવસની ભૂખ શાંતી કીધ ॥૯૩૯॥ પ
છે રાજાની રાણીઓ નેહ ॥ કુલવંતીને કહાવે તેહ ॥ ત
મને મળવાની ઘણી છે આશ ॥ અમો આવીએ છૈ તમા
રી પાસ ॥૯૪૦॥ ॥ પૂરવ ગાથા ॥ ॥
કુલવંતીને કહાવિયું ॥ તું સાંભળ ચતુર સુજાણ ॥ સામ-
ગ્રી કરજે તમો ॥ અમો આવું છું પરમાણ ॥૯૪૧॥ ત્યારે
કુંડલાં ચાર મગાવિયાં ॥ ગુલાબે ભરીઆં સાર ॥ હિક
મત ત્યાં એવી કરી ॥ વળી વાંસ મંગાવ્યા ચાર ॥૯૪૨॥
॥ ॥ચોપાઈ॥ ॥ ચાર કુંડલાં મંગાવો-
સાર ॥ વેગ ત્યાં મેહેલાવો નાર ॥ સોમચંદને વીરચંદપા-
લ ॥ કુંડલાં ચાર મંગાવો તતકાળ ॥૯૪૩॥ વેહેલી થા
ઉં ચતુકાર ॥ આવશે અમરસેનની નાર ॥ વાહી નાટક ક-
લા કરવી ॥ તેની આંજ ગુલાબે ભરવી ॥૯૪૪॥ જાણ્યે
કુંડલાં રથપર સોય ॥ એ નારી વિચક્ષણ હોય પ
ચાલતાં સતે છે પરમાણ ॥ કુંડલાં પાસે ભરી મુક્યાં-
જાણ ॥૯૪૫॥ એવે નારી આવી સરવે મળી ॥ રથ-
મંડળી કીધી વળી ॥ ત્યાં આવીને બેઠી સરવે ॥ જો
ને છે મુજથી જાહુ ગરવે ॥૯૪૬॥ વેહેલા થાઓ કુલ
વંતી નાર ॥ નિકળો સ્થળ માંહેથી બાહાર ॥ નવ નિક
ળો ભોજનને પુર ॥ પાળી એમ બુધ કરવા સુરા ॥૯૪૭॥

चीर मुक्ताफळें जड्यो जेह ॥ ओढीने नीसरी छे तेह ॥ कं
चुकी छे हीराओं जडी ॥ रथमांथी बाहेर नीसरी ॥६४८॥
नारी नीसरी रथमांथी बाहार ॥ जाणे वीजळी थयो च
मकार ॥ रतुआर चतुर जेह होय ॥ लीधां तांस भरीने
होय ॥६४९॥ तेतो छमके धरती पाय ॥ गीलरतामां करी
ओ घाय ॥ थयो गुलाल तणो घम घोर ॥ नारी जेह करे
छे सोर ॥६५०॥ रथ कुंवर चडी आमन ॥ कपाळ हाथे ग्र
हीआमन ॥ घा कर्यो गलोलनां सार ॥ गयें त्रीजे रथे-
चडीनार ॥६५१॥ तेम केशरीन ऊपर घाय ॥ कुमेला
में गळलागी जाय ॥ जेह ज्या कुळ धर्ठ छे त्यां नार ॥
तेतो रथ फरी वळी चार ॥६५२॥ नारी कहे सुंदरने धन-
न्य ॥ तेने चार देडी लाभन्य ॥ आपण कुर मुज सरखे
नार ॥ धन्य धन्य सुंदर कामदार ॥६५३॥ राजाए मा
णस मुक्युं जेह ॥ जसकरो हुवे कह्युं तेह ॥ त्यारे पाछी व
ळीआमन ॥ नारी केहती जाए धन्य धन्य ॥६५४॥ ॥
पूरव छाया ॥ ॥ राजा रई ज्ञत सहु जणां ॥
परवर्या ने चार ॥ रथ जोडवी नीसर्या ॥ चाल्या त्यां
कामदार ॥६५५॥ जेतल ओक जातु सही ॥ चाल्यां नर
ने नार ॥ तंग तुट्यो त्यां अश्वनो ॥ केड रह्यो कामदार
॥६५६॥ ॥ चोपाई ॥ ॥ त्यारे पाछळ
रह्यो कामदार ॥ त्यारे चालंद जोव्यो तेणी वार ॥ लाड-
को चालंद राजानो केहेवाय ॥ तेतो आव्यो क्षणमां त्यां
हांय ॥६५७॥ लाग जोईने करतो वात ॥ तमे सांभ
ळो पृथिवी नाथ ॥ सुंदर मान नहीं घरमांय ॥ सांचुं
कहुं छु तमने राय ॥६५८॥ तम्या पछी जमीन केमजा
य ॥ लली रीते नमे ने डोय ॥ परीक्षा जोनी कीधी
में राय ॥ जयोर नीकळे जाय नजोय ॥६५९॥ ज-

स्त्री अन्न पुरुष न आपे ॥ कांतो मुरजो करीने थापे ॥ तमे वि
चार करोने राय ॥ त्यां पछी ते तरत न जवाय ॥ ६६०
॥ ॥ पूरब छाया ॥ ॥ मन जेनां मळतां
नथी ॥ अस्त्री ने पीरशे अन्न ॥ ते माटे करो पारखुं ॥
सत्य कहुं वचन ॥ ६६१ ॥ एक पारखुं छे एहनुं ॥ बेउ
बेसे नरनार ॥ एम कह्युं एने साहु ॥ निश्चे कहे नाकार
॥ ६६२ ॥ तमे पण बेउ बेसजो ॥ राणी कुंवरनी पास ॥ ते प्र
माणे बेसाडीए ॥ सुंदर कुलवंती पास ॥ ६६३ ॥ ॥
चोपाई ॥ ॥ सुंदर आवी पुग्यो ततकाळ ॥ त्यां तो
भुजथी जोड्यो कृपाळ ॥ कुंड केम रह्या दिवान ॥ रा
जाए घणुं दीधुं मान ॥ ६६४ ॥ एक वात कहुं कामदार
॥ बेउं बेउ बेसे नरने नार ॥ नगर तणा ते शेठ शाहुका
र ॥ ते पण बेसे नरने नार ॥ ६६५ ॥ एवां राजाए क-
ह्यां वचन ॥ तव मान्युं सुंदरनुं मन ॥ एवुं केम थाए
राजन ॥ माणसमां थाए हसंन ॥ ६६६ ॥ आपणो -
नहीं एमां तोल ॥ माटे विचारी जोईए बोल ॥ राय
कहे बेसवुं आ घडी ॥ राजा रथ पर बेठो चढी ॥ ६६७ ॥
॥ ॥ पूरब छाया ॥ ॥ राजा बेठो वहेले
चढी ॥ सुंदर करे विचार ॥ आज थई तो बसी जरी ॥ म
रण आव्युं निरधार ॥ ६६८ ॥ राजा वळतुं बोलीओ ॥ नहीं
बेसुं सुंदर कहे ॥ पेंचुटी पडे निरधार ॥ ६६९ ॥ रथमां-
बेसुं रायजी ॥ टळे पेंचुटी ताल ॥ माटे माफ कीजीए
॥ साची मानो वात ॥ ६७० ॥ ॥ चोपाई ॥ ॥
राजा कहे सुणो कामदार ॥ वहेल पर बेशो लगार ॥ सुंद
र नयने आंसु झरे ॥ वाले ह आज मीचारो करे ॥ ६७१ ॥
ते वात वरती रतुकार ॥ ते सांभळ कुलवंती नार ॥ राजा
वहेलमां बेठा सार ॥ तमे वहेले बेसाडो कामदार ॥ कुलवंती

कहे मुजबाण ॥ रंडा घेली दीसे शुं अजाण ॥ ८७३ ॥
स्तुकार कहे घडी तुं बेसाड ॥ तेम आजरे रहे कामदार ॥
मारें वचन मानो तमे सार ॥ नव केहेशो ते मुज नाकार ॥ -
॥ ८७४ ॥ त्यारे कुलवंती कहे सांभलतुं सही ॥ ओने बेसा
र रथमां लई ॥ केने नव लुवे मारा सम्मुं ॥ हुंतो मुज लेई
ने केम जतुं ॥ ८७४ ॥ आडुं लेईने तुं ओने जे तार ॥ ता
रे गमे ते कर तुं नार ॥ मेंतो तारें मान्युं आवार ॥ नहिं
तर मान्युं नहिं रे लगार ॥ ८७५ ॥ त्यारे दासी कहे तेणी
वार ॥ आवो वेहेले बेसो कामदार ॥ नारी ओलावे वार
वार ॥ वेगे आवोने रथ मोझार ॥ ८७६ ॥ तेम विना न -
चाले दाहाडी ॥ तमे बेसोने रथनर चडी ॥ ओम मानदी
धुं स्तुकार ॥ राज्य विस्मे थयो तेणी वार ॥ ८७७ ॥ ॥
पूरव छाया ॥ ॥ आवो आवो वीर भाईरा ॥ कुल -
वंतुन जलाहार ॥ दासी साद करे सही ॥ वेहेले बेसो ज
गार ॥ ८७८ ॥ त्यारे सुंदर वणतो जोतीओ ॥ पेथोरी पडे
जाण ॥ तेनो तुं जाणे जरी ॥ मुज वदे निरवाण ॥ ८७७
॥ ओक घडी बेसो तमो ॥ फीकर नहिं लगार ॥ ओम कही
कर ताणली ॥ पोते ते स्तुकार ॥ ८८० ॥ ॥ चोपाई ॥
॥ ॥ त्यारे वेहेले बेठा कामदार ॥ पग जोडी पोते लगा
र ॥ जे पग पछडे मुक्या जाण ॥ जोडे वेहेल राज्यनी प्रमा
ण ॥ ८८१ ॥ सामा सामी वातो करे ॥ राज्य हुरज जातिने -
घरे ॥ राज्य मुजथी जोल्यो सोय ॥ मांडवीनी ठीलपन्न
कटली होय ॥ ८८२ ॥ गाम विरपुर ते कहेवाय ॥ तेनी ठी
पन कटली थाय ॥ सुंदर जोल्यो तेणी वार ॥ वीरपुरेना
साठ हजार ॥ ८८३ ॥ मांडवीओने ते दाण लेवाय ॥ पांच -
लाखनी ठीपन कहेवाय ॥ वात करे राज्य कामदार ॥ विस्म
य पामी कुलवती नार ॥ ८८४ ॥ ॥ पूरव छाया ॥ ॥

कुलवती विस्मे थई ॥ विचार्युं निज मंन ॥ सुरजो चतुर-
दिसे जरो ॥ मुज तेजुं दीसे राजंन ॥८८६॥ अेम जणीनी
हालीगें ॥ प्याहालो दीठो जण ॥ अेतामां राजा थई ॥ पाम्युं
मोहनुं बाण ॥८८७॥ अेनी पुत्र दीपती ॥ तेनुं सुंज कु
ल होय ॥ अेवुं जोई चटको कर्यो ॥ त्यारे सुंदर चाख्युं जो-
य ॥८८८॥ आ चटको विछी तणो ॥ पाछुं जोयुं तेवार ॥
ते जोई मोह पामी जरी ॥ अचरत पामी नार ॥८८९॥ वृ
दन अति रळियामणुं ॥ मुख चांकडी होय ॥ हेम कडां छे
हाथमां ॥ वेढ वींटी रही सोय ॥८९०॥ नव लजी शो-
भती ॥ हार मोतीअे जडाव ॥ बांहे बाजुबंध जे रजा
॥ मांहे हीरा जडाव ॥८९१॥ काने कुंडल शोभतां ॥ पंच
रंगी वागो सोय ॥ शिरपर पाघ जाधी पेचघुं ॥ ते दे-
खी मनडुं मोय ॥८९२॥ कटारी केहेडे बांकडी ॥ सोनेरी
मुठ तरवार ॥ अेवो दीठो नारीअें ॥ कंदर्पनो अवतार ॥
॥८९३॥ वळी चटकारो कर्यो कामनी ॥ सुंदर मुके नीस-
वास ॥ रजे घडी दे मुजने ॥ तो हमणां थाशे हास्य ॥८९४
॥ अेम करतां कौतक थयुं ॥ राणीनो विसर्यो हार ॥ न-
वलाख मोती तणो ॥ विसार्यो ते ठार ॥८९५॥ देवीना
देवळ विषे ॥ भूली राणी हार ॥ अेवुं सुणीने ऊतार्यो
॥ सुंदर तेणीवार ॥८९६॥ ॥ चोपाई ॥ ॥
त्यारे राजा मुजें कहे वाण ॥ सुंदर सुणो तमे निरवा-
ण ॥ राणीनो हार हतो जेह ॥ भूल्या जरुखालीमां तेह
॥८९७॥ अेवुं सुणी सुंदरे लीडी हाम ॥ आज्ञा द्यो कु
ळजी ते काम ॥ क्षणमां लई आवुं महाराज ॥ अेतो जी
ज तणुं नहिं काज ॥८९८॥ वळी विचार्युं सुंदरे मन ॥ ज-
कुंडीयुं श्रीजुगजीवन ॥ मने कुलवतीनी जीड लागी ॥ सा
न मारी पाडन अे नारी ॥८९९॥ ते भयथी छुट्यो निरधा

૯॥ તોતો ફિરપાછી દેય મોરાર ॥ આજ્ઞા લેઈ દાર લેવાને
લય ॥ પછે કુલવતી રેવે રથ માંય ॥૭૦॥ વળી મુજથી -
બોલે છે એમ ॥ રતુકાર કહે કઈ કેમ ॥ એનાં ગુણનું પા-
રખું નહિં કીધું ॥ મેં તો દુઃખ ઘણેરૂં દીધું ॥૭૧॥ તેં મુને -
કીધો જકુ ઉપદેશ ॥ મેં તો માન્યો નહીં તે લેશ ॥ કહી કી-
ધી ન એ શું વાત ॥ રૂપ ગુણ લક્ષ્યો વિખ્યાત ॥૭૨॥ ॥

સુંદરના વિયોગથી વિલાપ કરે છે ॥ ॥ ચોપાઈ ॥ ॥

રૂદન કરતાં બોલ્યું તે નાર ॥ સાંભળ રે તું રતુકાર ॥ એ લે ગ-
યો મારો અવતાર ॥ કંત વિના સુનો સંસાર ॥૭૩॥ કંથ
વિના ધિક અવતાર ॥ તુને સાચું કહું રતુકાર ॥ ઘેર વેગે આ-
વે નરથાર ॥ ફિરપા કરજે વિચારાધાર ॥૭૪॥ કંથ વિના
સાસરે નહિં માન ॥ કંથ વિના ઉજડ ઘર રાન ॥ કંથ વિ-
ના નેહર સ્મશાન ॥ કંથ વિના નહીં નારીનું માન ॥૭૫॥
કંથ વિના નવ દેહરૂકન ॥ કંથ વિના નવ શોભે તન ॥ ક્યારે
થાએ કંથ દરશન ॥ એમ કરી રૂવે કામન ॥૭૬॥ કંથ-
વિના સુની મુજ દેહ ॥ મેં તો કીધો ન એનું નેહ ॥ કરી આં-
ટાન ચોરીમાં ચાર ॥ જીત્યે આરોગ્યા નહીં રે કંસાર ॥૭૭
એવું સુણી બોલી રતુકાર ॥ તું સાંભળ ઘેલી કુલવતી નાર
॥ શાને દુઃખ ધરો આવાર ॥ એ પાપીને માર પૈજાર ॥૭૮
॥ એહું ત્હું પીરશ્યું અન્ન ॥ પેટ ભરી ન આપ્યું ભોજન ॥
શું રૂદન કરે છ નાર ॥ એ મુરજાને માર પૈજાર ॥૭૯॥ પં-
ક્યાને ઘેર ભણતી તું ન્યાર ॥ તે દાહાડાનો એ મુરજો સાર ॥
તે ઉપર શો આવડો પ્યાર ॥ એ પાપીને માર પૈજાર ॥૮૦
॥ તેનું તું નવ એતી મુજ ॥ તે દીઠે કેમ થાશે સુજ ॥ કૂ-
ટ દુઃખ ધરે નિરધાર ॥ એ પાપીને માર પૈજાર ॥૮૧॥ ॥

॥ ઢરૂવછાયો ॥ ॥ વચન એવાં સાંભળી ॥ બોલી કુ-
લવતી નાર ॥ મેંણો મુજને દેજરી ॥ જીતો તું રતુકાર ॥૭

સુંદર મારો સાહેબજો ॥ હું સુંદરની નાર ॥ સુંદર વિના હું
શું કરૂં ॥ ધિક ધિક મારો અવતાર ॥ ૭૧૩ ॥ મેં આવું એ
જાણ્યું નહિં ॥ સુંદર એ કામદાર ॥ હવે હું એની દાસી-
છું ॥ એ સારો ભરથાર ॥ ૭૧૪ ॥ આવતી હવણાં વરૂં ॥
ફરી વળી ફેરા ચાર ॥ હેતે પ્રીતે લાવશું ॥ એને જમાડું કં
સાર ॥ ૭૧૫ ॥ ॥ ચોપાઈ ॥ ॥ સવારે આવ
શે ભરથાર ॥ એતો લેવા ગયો છે હાર ॥ સામગરી આપણ
તૈ કરીએ ॥ આવે તો વેગે ફેરા ફરીએ ॥ ૭૧૬ ॥ વેહેલી થા-
ને તું ચતુર ॥ પઈસા લેને તું જનની ખબર ॥ તલન વને મા
ઢલં નાડાછડી ॥ લઈ આવની તું જાણી ઘડી ॥ ૭૧૭ ॥ જેહ
વિપ્રને તેડી લાવે ॥ તોતે હાથે વાળો કર મેળાવે ॥ ત્યારે ચતુ
ર કહે સુણ ભામ ॥ એતો ઉતાવળનું નહિ કામ ॥ ૭૧૮
વાત કહું તે મનમાં ધરજે ॥ આવ્યા કેડે ગમે તેમ કરજે ॥
ગતિ ગોવિંદની નવ કળાય ॥ લખ્યા લેખ હોય તે થાય ॥
॥ ૭૧૯ ॥ એમ કહીને કર્યો ઉપદેશ ॥ કુલવંતી સુણે
નહિં લેશ ॥ અતિ આનંદમાં બની ઘેલી ॥ સન્ધ્યા પાથ
રી પુષ્પની ફૂલી ॥ ૭૨૦ ॥ પછી બેઠી રહી ત્યાં વાટ ॥ ન
આવ્યો નાથ થયો ઉચાટ ॥ એકથા રહી એણે ઠામ ॥
ઘણી ગઈ છે ત્યાં વળતી ભામ ॥ ૭૨૧ ॥ સુંદર હાર લઈ પા
છો વળ્યો ॥ કહે છે ફેરા સરવે ફર્યો ॥ રક્ત થાય છે માનશ
કન ॥ ત્યારે પોતે વિચાર્યું મન ॥ ૭૨૨ ॥ જેરાવરીએ તે ર
થ મોજર ॥ જેઠો મારે કોપી હશે નાર ॥ પ્રભુ તુજને ગમે
તે જઈ ॥ હું તો ધ્યાન તમારૂં ધરૂં ॥ ૭૨૩ ॥ ॥ દૂહ
છાયા ॥ ॥ હરણા કાજાં ઉતરે ॥ વરીઅર કાજો
ભેય ॥ કણકણીજો કણકણ કરે ॥ ઘર ઘર મુજને કોય ॥
॥ ૭૨૪ ॥ તો પણ ચાસો આવીજો ॥ પોતે નગરની પાસ
॥ દરવાજે લીધ્યા તીહા ॥ દેજી થયો ઉદાસ ॥ ૭૨૫ ॥ ચ્યા

એમ સહુ કોઈ આવી આણ વેગે સુતા સાર ॥ સાદ કરે સુંદર
ઘણો ॥ જોવે નહિં લગાર ॥૭૨૬॥ ॥ચોપાઈ॥
સુંદર સાદ કરે છે અપાર ॥ પોળીઓ નવ જોવે લગાર
॥ જાગે ને કોઈ ધનનો ધણી ॥ જાગે તેને ચિંતા ઘણી ॥
॥૭૨૭॥ જાગે રાન અંધારી ચોર ॥ જાગે ઘન વરસંતાં મો
ર ॥ જાગે જેના ઘરમાં સાપ ॥ જાગે ને દીકરીનો બાપ ॥
॥૭૨૮॥ જાગે જેને માંયે વેર ॥ જાગે તેને જકુ કીડેર ॥ જા-
ણે જે કોઈ એક ન્નર ॥ જાગે ને સકુલની નાર ॥૭૨૯॥
પોળીઓ જાગ્યો નહિં લગાર ॥ સુંદર ઊભો તેણે ઠાર ॥ એ
મ પડીઓ થાક્યો તે સહી ॥ અરે દેવ જવું તે કહીં ॥૭૩૦
॥ ॥પૂરવછાયા॥ ॥ દોઢ પોહોર રેણી ગઈ ॥
ઊઘડ્યું નહિં સાંકોય ॥ સુંદર આશા છોડીને વિચારે ન
હિં સોય ॥૭૩૧॥ છેલ્લા સાદ કરે સહી ॥ સુણતાં ઊ
ઠે કોય ॥ તો તો કામ સરે સહી ॥ નહિં તો વિપરીત હો
ય ॥૭૩૨॥ ॥ચોપાઈ॥ ॥ સુંદર સાદ કરે
દશ જાર ॥ પોળીઓ ન જોવે લગાર ॥ ત્યારે મનમાં વિ
ચારે વાત ॥ હવે ઘણી ગઈ છે રાત ॥૭૩૩॥ એક રૂડી દી
ઠી પરસાળ ॥ માટે સુઈ રહું ત્યાં લગાર ॥ ઘેર સુવાનું સુ
જન હોય ॥ કોટલ ગોદડી પાથરે સોય ॥૭૩૪॥ અશાલ
પાથર્યાં તેણીવાર ॥ સુંદર સુતો ત્યાં નિરધાર ॥ ઢાલ
તરવાર ઓશીકે મુકી ॥ પછે સુંદર પડીઓ છે ઝુકી ॥
॥૭૩૫॥ ત્યાં ઊંઘી ગયા કામદાર ॥ એક વિઘન થયું તે
ણીવાર ॥ થાકી ગયો હતો પરધાન ॥ નિંદ્રામાં નહીં તેને
ભાન ॥૭૩૬॥ ॥પૂરવછાયા॥ ॥ ચંદા વેરી
વીવાદણાં ॥ જળ વેરી શેવાળ ॥ પુરૂષ વેરી નિદ્રા ઘણી
॥ મછને વેરણ જાળ ॥૭૩૭॥ તેમ સુંદરને નીપજ્યું ॥ નિ
દ્રામાં તે ઠામ ॥ મનની વાત મનમાં રહી ॥ અકળ ગતી-

श्रीराम ॥७३८॥ मणिधर मोटो नीसर्‍यो ॥ फरवा दरथी
जाहार ॥ भूशाजो आवी तेहने ॥ आव्यो तेणे ठार ॥
॥७३९॥ ॥ चोपाई ॥ ॥ त्यां सुंदर कर्‍यो आ
राम ॥ भोरींग आव्यो तेणे ठाम ॥ छातीउपर जोको लणे
॥ जकु लेहेरजातो रमाण ॥७४०॥ सुंदर निद्रा आवी अ
पार ॥ तेतो जगे नहिं लगार ॥ सुवा चंदन प्रेमल अंग ॥
तेणे आणंद पाम्यो भोरींग ॥७४१॥ फणा पछाडी डोले अ
पार ॥ घोर निद्रामां छे कामदार ॥ तेने शुध्य नहिं लगार ॥
पासुं फेरव्युं तेणी वार ॥७४२॥ ॥ पूरव छाया ॥ ॥
सुंदरे पासुं फेरव्युं ॥ कर अलकथी नेवार ॥ भोरंगने वाग्युं
सही ॥ तेणे कर्‍यो चटकार ॥७४३॥ हाथ तणी ले आंग
ळी ॥ तेने करड्यो अपार ॥ हळाहळ चडी गयुं ॥ उछळ्यो
त्यां कामदार ॥७४४॥ ॥ चोपाई ॥ ॥ नेगे उछ
ळी गयो कामदार ॥ लेहेर आवी पड्यो ते ठार ॥ तेनो प
डतामां गयो छुट प्राण ॥ तेतो चाल्यो जोई अे लणे ॥
॥७४५॥ रात अजवाळी चंदनी अपार ॥ सोडताणी सुतो का
मदार ॥ शबवत थई गयुं छे शरीर ॥ तेने कोण पाअे त्यां
नीर ॥७४६॥ अेक औरत काळ सुं होय ॥ गती हरीनी कळे
नहिं कोय ॥ अेक वाणीअ पुत्री नीरधार ॥ तेनो रहे छे न
गरनी जाहार ॥७४७॥ मन्त्र जन्त्र जाणे छे अपार ॥ तेने
त्यागी मुकी भरथार ॥ पासे द्रव्य तणो नहिं पार ॥ मन
मान्यो जोले भरथार ॥७४८॥ तेतो फरवाने नीशरी जा
हार ॥ फरतां फरतां आवी ते ठार ॥ सुतो दीठो पुरुष नीर-
धार ॥ जोई मनमां कर्‍यो विचार ॥७४९॥ कोण पुत्रीअे
छ रीत अपार ॥ ते होय ते मारो भरथार ॥ उली रहीने
त्यां रंग भंग जोई ॥ सोडताणीने सुतो छे सोय ॥७५०॥ ते
तो मुजे जोती तेणीवार ॥ उठो उठोने मुज भरथार ॥ सो

કળીંપી કરી એટલે ॥ સુંદર સુતો દીઠો તેટલે ॥૫૧॥-
આજ સફળ હવો અવતાર ॥ હું તો રૂડો પામી ભરથાર
॥ મારા ભાગ્ય તણો નહિં પાર ॥ આજ ત્રુઠ્યા શ્રીજગદા-
ધાર ॥૫૨॥ ॥ પૂરવછાયો ॥ ॥ હરજી એતાં
મન વિષે ॥ ગા કણ પુત્રી સાર ॥ ફેડલો લઈ ઊંધો કર્યો
॥ દીઠો ત્યાં કામદાર ॥૫૩॥ ભામણીથી આવિયા ॥
ના કાજુ મુજ સ્વામ ॥ બોલો બોલો મુજ થકી ॥ પોહો-
ચે મનનાં હામ ॥૫૪॥ બોલાવ્યો બોલે નહીં ॥ આ-
તે શું કહેવાય ॥ અંગ જપું તે જોઈ વળી ॥ કરડ્યો મણિ-
ધર ત્યાંય ॥૫૫॥ ડંસ કર્યો છે આંગળી ॥ તેને ચોક-
સન ॥ વિજચણું આણી પડી ॥ દૂર કરે વિઘન ॥૫૬॥
॥ ॥ ચોપાઈ ॥ ॥ ડશ્યો દીઠો આંગળીએ ભોરં-
ગ ॥ તેનું ઝેર ચડ્યું છે અંગ ॥ હમણાં જીવતો કરૂં નિરધાર ॥
ઝેર ઉતારું આણી વાર ॥૫૭॥ આંગણી મુજ લઈને સાર ॥ મં-
ત્ર ભણીને ફુંકી તેણી વાર ॥ ઘડીક જે થઈ ત્યાહરે ॥ ભા-
ણ આવ્યો છે દેહમાં તાહરે ॥૫૮॥ બેઠો એઠો થયો કામદા-
ર ॥ જુવે તો પાસે દીઠી નાર ॥ ત્યારે મનમાં કરે વિચાર ॥ ભા-
રી પાસે આ ક્યાંથી નાર ॥૫૯॥ ॥ પૂરવછાયો ॥
॥ ॥ કોણ છે રે તું કામની ॥ સાચું બોલ વચન ॥
ડાકણ શાકણ કે વેતરી ॥ કહેને આણે દન ॥૬૦॥ કર જો-
ડી કહે કામિની ॥ સત્ય કહું આ ઠાર ॥ હું ઘાંચણની દીકરી
॥ પામી તમે ભરથાર ॥૬૧॥ ॥ ચોપાઈ ॥ ॥
સુંદર મુજથી બોલ્યો વાણ ॥ નારી ઘેલી દીસે છે પ્રમા-
ણ ॥ તમે ઘાંચી અમે રાજન ॥ ઘેલી થઈને શું બોલે વચ-
ન ॥૬૨॥ ત્યારે નારી બોલી તેણી વાર ॥ જેમાં કોણ ઘે-
લું ભરથાર ॥ તમને ડશ્યો હતો ભોરંગ ॥ તેનું ઝેર ચડ્યું
તું અંગ ॥૬૩॥ તે તો ઉતાર્યું તે આણી વાર ॥ સંજીવન

कीधा सणगार ।। नहि मानो तो झेर खावुं ।। हुं तो तमारे
घेर आवुं ।।७६४।। त्यारे जीनो जाति कामदार ।। तारे घेर
हुं आवुं नक्क ।। पासे पड्यो दीठो लोरंग ।। तेने झेर चड्युं छे
अंग ।।७६५।। पासरथी वात नेठ कामदार ।। घेर लेई चाली का
मदार ।। ।। पूरव छाया ।। ।। घेर तेडीने संचरी ।।
आवी मेहेल मोझार ।। माता भारी सांभळो ।। हुं तेडी लावी
भरथार ।।७६६।। पोताना माता अकळाने ।। वेगे न लगाडो वा
र ।। थावे हैयाई ... नाडु ... सार ।।७६७।। पछी
माता ... कुंवरी ।। साम ... नार ।। थाळ लीधो
हाथमां ।। कचाने आव्यार ।।७६८।। ।। चोपाई ।। ।।
पछे कीधो जडु आधार ।। पोंजवा आवी घांचाणी नार
।। लीधो थो मुज दीवडो हाथ ।। हरजी घणी मनगनी सा
थ ।।७६९।। धुंराळ कुराण नाछे नेगाउ ।। तेणे पोंजीने सा
हुं नाउ ।। छेडी पीडीने माथे लीध ।। ऊपर हेरवीने नाजी दी
ध ।।७७०।। गळे घाट घालीने ताण्यो ।। झ्या चरने मांहे
रामा आण्यो ।। हाथे मींढळ कंकण पूडो ।। हाथे वाळ्यो सा-
ह्यो रुडो ।।७७१।। पछे छेडा जांध्या छे नार ।। त्यां तो मंग
ळवरत्यां थार ।। परणी जिव्यो ते रुडी रीत ।। पछे तो घणी
लागी प्रीत ।।७७२।। हरज पामी तेनी माय ।। तेने जीलट
तो जहु थाय ।।७७३।। ।। पूरव छाया ।। ।। प्रीत
जं घाणी तेहने ।। आव्यो मेहेल मोझार ।। प्रेमे सज्या पाथ
री ।। हरज पामी ते नार ।।७७४।। सज्या पर आव्यो सही ।।
मुक्ताफळे भरी हार ।। आरती कीधी ते सही ।। ने पोतानो
भरथार ।।७७५।। पछे पुष्पसज्या पाथरी ।। आव्यो त्यां
परधान ।। रंगभोग कर्यो सही ।। हरज पाम्यो मन ।।७७६।।
।। ।। चोपाई ।। ।। पछे हरज पामी जडु नार ।। रं
गरेलवीती त्यां सार ।। प्रातःकाळ थयो जे टले ।। नर नारी

थ्यां तेटले ॥૭૭૭॥ सोनानी झारी कहीजे जेह ॥ स्वामीअ
गळ मुकी तेह ॥ भुजमार्जन कर्युं तेणी वार ॥ पछी बोल्या त्या
हां कामदार ॥૭૭૮॥ नारी जशुं अमारे घेर ॥ लजवार जुवे
छे जकुपेर ॥ नार कहे तमे जोटी थाव ॥ जहीं रहो मन लावे
ते जाजो ॥૭૭૯॥ जवानुं नव लेशो नाम ॥ जे कव्यानुं होने
ये काम ॥ घेर अस्थी तमारे सार ॥ तेवी हुं पण तमारी नार
॥૭૮૦॥ अहिं रहीने लीला करो ॥ हुं चिन ते मनमां धरो॥
तमे तमार करीने काम ॥ पण जवानुं न लेशो नाम ॥૭૮૧॥
आजुं जेरमां करशो राय ॥ थेडे ओरने प्राण जजाय ॥ त्या
रे सुंदरने चडी जकुरीस ॥ हुमणां मारुं के छेदुं शीश
॥૭૮૨॥ ॥पूरव छाया॥ ॥रीस घणी
चडी बालने ॥ त्यारे नारीए कर्यो विचार ॥ जेर कुई हुं जे
सही ॥ तो मारे मुजने सार ॥૭૮૩॥ हवे चरित्र हुं करुं ॥
सांभळो मारा श्याम ॥ हुं नारी छुं तम तणी ॥ तमे पुरो मा
री हाम ॥૭૮૪॥ शिव पूजन में तो कर्युं ॥ अरथी गोरख
अपार ॥ दिन आठ मुजने थयां ॥ हुं पामी तम लन्यार
॥૭૮૫॥ ॥चोपाई॥ ॥तमो सांभळो रे भ
रथार ॥ हुं तो छुं तमारी नार ॥ हजी एक थई छे रात॥
एवी केम करो छो वात ॥૭૮૬॥ दातण पाणी तमे कीधुं रा
य ॥ हवे भोजन ततपर थाय ॥ मुज हाथे करो भोजन ॥
हुं पण छुं तमारी कामन ॥૭૮૭॥ कांई जेर न थाले मा
हुई ॥ स्वामी आपण घर तमारुं ॥ पछी भोजन थयुं-
तई आर ॥ नमया जीगे मारा भरथार ॥૭૮૮॥ पछी भो
जन त्यां कीधुं राय ॥ लस्रावती बीरो बुं थाय ॥ सुता बीज्या
पोते राजन ॥ रेणी वीतीने उग्यो दन ॥૭૮૯॥ जुओ-
घेर आव्यो कामदार ॥ नई ने पुछे तेनी नार ॥ घोडो
हालो आव्यो दुवार ॥ नथी आव्यो ते कामदार ॥૭૯૦॥

जससेनें ते सांभळी वात ॥ शुं थयुं रे दीनानाथ ॥ घोडो कु
म आव्यो रे एकलो घेर ॥ जजर कठावे रुडी पेर ॥७१॥
आडा अवळा खेडया असवार ॥ क्यांये लाध्यो नहिं काम
दार ॥ हाल कल्लोल थयो त्यां जाण ॥ त्यारे राजा बोल्या-
वाण ॥७२॥ जुवो जुवो ए परधान ॥ एने शुं रे थयुं
विघन ॥ प्रधान आवे नहि आ ठाम ॥ तो अन्न जावुं छे
हराम ॥७३॥ नहि तर पाडुं नाकरी काया ॥ अग्निमां-
जाळुं एम कहे राया ॥ आठ दिवसमां आवे नहि ॥ तो अ
ग्निमां जळुं कुं सही ॥७४॥ ॥ पूरवछाया ॥
॥ अग्निमां नीश्चे जळुं ॥ एम विचारो आप ॥ जे प्रति-
ज्ञा माहरी ॥ ब्रह्म हत्यादिक पाप ॥७५॥ एवा सम जा
घा सही ॥ चेन नहिं रे लगार ॥ घरमां कुळवंती रडे ॥ रुवे-
घणुं रतुकार ॥७६॥ रुठे अत सरव कळकळे ॥ शोकातुर
सहु होय ॥ सुंदर जेठो मोहोलमां ॥ कोणी राखे नहिं कोय ॥
॥७७॥ ॥ चोपाई ॥ ॥ सुंदर बेठो मोहोल
मोजार ॥ चोपट रमे छे नरने नार ॥ रात गई छे घडि चा
र ॥ सुंदरना पड्या पोबार ॥७८॥ तेणे समे परदेशी नेह
॥ मोहोल हेठे नीसरीआ तेह ॥ नेतो वात करतां जाय ॥ न
गरमां थयो छे अन्याय ॥७९॥ रमतां रंग मच्यो छे अ
पार ॥ जीत्या सुंदर तेणे ठार ॥ पोते पासा लीधा छे सार ॥
जहु वीघ नाख्या पोबार ॥८०॥ वात करता परदेशी जा-
य ॥ जे नव आवे सुंदर राया ॥ आठ दिवसे वळी प्रमाण ॥
अग्निमां जळशे निरवाण ॥८१॥ नारी सांभळ कहुं छुं तु
ने ॥ हवे शीख देने तुं मुने ॥ त्यारे मुजथी जोती लाभ ॥
मुज दुजणीनो तुं विश्राम ॥८२॥ थनार हशे ते देशुं या
स ॥ पण तमने नही देशुं जवा ॥ तम विना नव रहेवा
य ॥ घडी एक सोचरसनी थाय ॥८३॥ मैं तो राकीधा-

अपराध ॥ संतोज्या नहिं कोई साध ॥ मेंतो डुंगर देवस- जालीयां॥ मेंतो देशथी आरा टाळीयां ॥८०४॥ मेंनो वन कामां पाडीशुं वाट ॥ मेंतो अस्त्रीना छीनाव्या घाट॥ मेंतो टोळामां नाखी जळ॥ कोईने कुडी चढावी आळ॥८०५॥ मेंतो गोत्रमां कीधी सगाई॥ मेंतो पर गाव्यां जेनने भाई॥ मेंतो सारकुन मेहेणा दीधा॥ मेंनो अवां प्रायश्चित्त कीध ॥ ॥८०६॥ ॥ पूरव छाया ॥ ॥ आवाला कु रे कामिना॥ सांभळो मारा स्याम ॥ जेम रहो तमे घर- वीशे ॥ नचानुं मुको नाम ॥८०७॥ सुंदर वाणी बोलीअे ॥ सांभळ रे तुं नार ॥ मन गमे ते करो सही ॥ अमे नथुं रान दुवार ॥८०८॥ जे त्यांहां हुं जगी नहीं ॥ तो राज छां डे भाए ॥ ते माटे तुजने कहुं ॥ थाशे मोहोटी हाण॥८०९ ॥नारी बळती ओचरी॥ राज छांडे काय ॥ तमने नवा नहिं देगी॥ करो कोटी उपाय ॥८१०॥ वली जव जशे तम तणो॥ साथी कहुं छुं वात ॥ रीश घणी चढी मन विशे ॥ सुंदरे मारी लात ॥८११॥ कामिनी कहे मारो तमो, जीने मारो श्याम ॥ तम जवा नहीं देगी ॥ मुको मननी हाम॥ ॥८१२॥ जीने दिवस अेम वही गयो ॥ थयो संध्याका ळ ॥ लाजन लावी आवनां ॥ जरी लावी थाळ॥८१३॥ लोजन करीने उठीयां ॥ सज्या पाथरी नार ॥ आवो स्वा मी माहेरा ॥ पोढाने भरथार॥८१४॥ रंग लोग कीधा घ णो॥ सुज पामी काम न ॥ निद्रा आवी तेहने ॥ पछी सु तो स्वामिन ॥८१५॥ ॥ चोपाई॥ ॥ पछी निद्रा आवी श्यामने ॥ पछी विचार कीधो कामं- ने ॥ माहें केण न माने लगार॥ माटे करछेक करुं प्रकार॥८१६ ॥ त्रण लातनुं हीर लीधुं सार ॥ तेनो दोरडो बांध्यो ते नार ॥ सूतो थयो तिहां प्रधान॥ त्यारे सुज थयुं कमन ॥

॥८१७॥ पोपट कीधो ते कामदार ॥ थयो प्रातःसमो तेणी
वार ॥ पांजरूं हतुं घरमां जेह ॥ तेमां पोपट घाल्यो तेह ॥८१८
॥ कुंवर रांध्यो ते पोते नार ॥ नमो नमो मारा करथार ॥ त्रण
दिवस त्यां वहीने जाय ॥ पोपटने चिंता घणी थाय ॥८१९॥
मनमां एक करतो विचार ॥ कुंवर लईने आवी नार ॥ नमो-
नमो रे पोपट माहरा ॥ थइ दासी चरण सेवुं ताहरा ॥८२०
॥ लटको करवा गई ते नार ॥ कुंवर मुकवा ऊंधुं कीधुं द्वार ॥
पोपट लाग्यो तेणी वार ॥ क्षणमां ते नीकळीओ जाहा
र ॥८२१॥ ॥ पूरव छाया ॥ ॥ पोपट त्यांथी
ऊडी गयो ॥ समणी थई ते नार ॥ वायु वेगें आवियो ॥ त्यां
लखसेन कुमार ॥८२२॥ लखलोजन वरस सोळमां ॥ प्रेमला
वती तेनुं नाम ॥ कुंवारिका तेतो सही ॥ सूडो आव्यो ते ठाम
॥८२३॥ जोणा ऊपर जेठो सही ॥ हाथ करयो नार ॥ अ
रे तुं क्यांथी आवीओ ॥ मने लखो दीधो करतार ॥८२४
॥ ॥ चोपाई ॥ ॥ लखो लखो दीधो करता
र ॥ पछी ऊंधुं जोयुं तेणी वार ॥ एक समणी दीठी त्यां ज
ण ॥ प्रेमलावती जाली मुजवाण ॥८२५॥ ऊड दाजेगीने क
हे तेणी वार ॥ तमे समणीने मारो ठार ॥ घोडो लईने वणी
तेवी धाय ॥ समणी त्यांथी नाठी जाय ॥८२६॥ पोपट सुं
दरते दीठो सार ॥ राधे कृष्ण करे विचार ॥ आज सफल ह
वो अवतार ॥ लखो दीधो मने करतार ॥८२७॥ ॥
पूरव छाया ॥ ॥ पोपट राज्यो प्रेमदा ॥ समणी
जुवे ते जग ॥ प्रेमलावती धीरे नहीं ॥ रावे नहीं कांई लग ॥
॥८२८॥ समणी पाछी वणी गई ॥ मुकी मननी हाम ॥ लं
ग थई कामनी ॥ करती घरनां काम ॥८२९॥ प्रेमलावती ज
कु प्रेमथी ॥ पोपट मुके न लगार ॥ छाती ऊपर राखती ॥ तुं
मारो दिलदार ॥८३०॥ ॥ चोपाई ॥ ॥ पोपट

राज्यो प्रेमदा ॥ आवो आवोरे प्राणजीवन ॥ मारुं तुजशुं
बंधाणुं मन ॥ हुं तो दुःखणी छुं अति लाम ॥ मारा जीव
तणा विशराम ॥८३१॥ पोपट आवोने आपण रमीअे ॥
लेलां बेशीने जेंगनण नमीअे ॥ मध्यान्ह काल थयो
तेणी वार ॥ मोहोले सुती मलयवती नार ॥८३२॥ दासी
कोई नथी तेम पास ॥ अेकांते सुती ते अवास ॥ पोप
ट पासे राख्यो छे सही ॥ तेने लीडे छातीमां लई ॥८३३॥
कांई नमझे पोपटराम ॥ कुर रांधुं कुं आणे ठाम ॥ तेतो न
मोते प्रीते करी ॥ नारीअे सन्या पाथरी ॥८३४॥ आवो
सुईअे ते पोपटराम ॥ मारे बीजानुं छे नहीं काम ॥ छाती
उपर राखे सार ॥ तेने मुके नहिं रे लगार ॥८३५॥ पोहो
र पाछलो दिवस होय ॥ पछे दासी त्यां आवे सोय ॥ पो
पट जोवामां लई बेठी त्याय ॥ अेटले समणी आवी छे
त्यांय ॥८३६॥ दीठी समणीने थई जहुरीस ॥ उठी जागी
अेनुं छे दोरीशा ॥ घोडो लईने ऊठी दासी ॥ धांया पुत्री ग
ई त्यांथी नाशी ॥८३७॥ दीठी घोडो त्यांथी लागी नार ॥
मेंनो जोयो मारो भरथार ॥ पछे आवी ते मंदीर मांय ॥ आ
शा मुकीने बेठी त्यांय ॥८३८॥ बोली मलयवती ते नार ॥
संध्याकाल थयो तेणीवार ॥ मोहोल पोतानो छे अेकांत
॥ तेहे पोपटने थाअे शांत ॥८३९॥ दीपक जले छे था
रे पास ॥ तेणे थई रह्यो जीनश ॥ पोपट कहाड्यो पांज
रेथी बहार ॥ राख पासे आवी ते नार ॥८४०॥ कांई बे
साडी पोपटराम ॥ मारा प्राणतणा विशराम ॥ सुं जगी
लई मुकी ते पास ॥ तमे नमोते मनउल्लास ॥८४१॥
रात पडीने सुती ते नार ॥ अेकली पोहोती मोहोल मो
झार ॥ दीपक जले छे थारे पास ॥ तेना तेजनो जहु प्रका
काश ॥८४२॥ ॥ पूर्वछाया ॥ ॥ प्रत्ता

चली सुती जरी ॥ कुंठडे कनजन भाय ॥ सुडा ऊपर हाथ
दे रच्यो ॥ गळे दोरडो दीधो त्यांय ॥ ८४३॥ दोरीआ रेशम
तणी ॥ नणजी गळाने दाम ॥ कोठे पापी नरनारीओ ॥ ढी
धुं कुडुं काम ॥ ८४४॥ ॥ चोपाई ॥ ॥
दोरी छोडी ते छुटे नहीं ॥ कालरे कापी नाखी तहीं ॥ ओट
ले थई रह्यो छे कामदार ॥ देखी लज्ज पामी घणी नार
॥ ८४५॥ पुंठवाणी कीधो भरतार ॥ मुजथी जोवे नहीं द
गार ॥ नवनारीए विचार्युं मन ॥ सांभळो मारा स्वा-
मिन ॥ ८४६॥ हुं तो छउं तमारी नार ॥ तमे साचा मारा -
भरथार ॥ त्यारे मुजथी जोत्यां कामदार ॥ तुं तो घेली
दिसे छे नार ॥ ८४७॥ अण घटतुं ते केम न होय ॥ सुणी
हांसी करे सहु कोय ॥ ओतो लाज लरेखुं काम ॥ फरी ओवुं
मां लेशो नाम ॥ ८४८॥ ॥ पूरव छाया ॥ ॥
घटे नहिं जे मुजने ॥ करवां कुडां काम ॥ धरम नहिं परधा
ननो ॥ विचारो मन लाभ ॥ ८४९॥ सुणतां बोली सुंदरी
॥ तपी विरहनो ताप ॥ साचा स्वामी छो तमो ॥ अवरला
ईने जाप ॥ ८५०॥ ॥ चोपाई ॥ ॥ साचुं मा
नो तमे कामदार ॥ तमे स्वामिने हुं छउं नार ॥ आवो फरी
ओते अंदचार ॥ लेवां जेशीने तमीए कंसार ॥ ८५१॥
सुंदर बोल्यो ते मुजथी वचन ॥ तुं तो सांभळने कामन ॥
हुं तो रायतणो दिवान ॥ ओवाते पामुं अपमान ॥ ८५२॥
॥ ॥ पूरव छाया ॥ ॥ तमने हुं छोडुं नहीं ॥
साचुं मानो आण ॥ ने ना केहेशो मुजथकी ॥ काढीश मा
रा प्राण ॥ ८५३॥ तमे नहिं अओ अवता ॥ शीद पाडो म
ने फाण ॥ दीठी ओ जन माहरी ॥ मारे आणुं काण ॥ ८५४
॥ ॥ चोपाई ॥ ॥ माटे मानोनी मारी वा-
त ॥ नहिं तो ओणीनी थाशे घात ॥ त्यारे जीनो अहु काम-

દાર ॥ ભલો ભલો રે તું વિશ્વાધાર ॥૮૫૫॥ એવે પુત્રને અ
પ્યું અન્ન ॥ કાટલ ગોદડી કરવા શયન ॥ બીજે ડાકણ પુ-
ત્રી સાર ॥ જેમ કહે તેમ કરે હું નાર ॥૮૫૬॥ એવું સુણતાં ચ
ક થઈ અપાર ॥ આવો આંહ્ય દીકરી ચાર ॥ વણતો મુજથી
બોલ્યો કામદાર ॥ ડાકણ પુત્રીએ પોપટ કીધો તે સાર ॥૮૫૭
॥ દીકરીઓ પૂછે તે ઘડી ॥ તેને વાર ન લાગી વડી ॥ દેને
પ્રીતે જમ્યા કંસાર ॥ બહુ લાડ કરની નાર ॥૮૫૮॥ તેરે
ણી નહીં તે જાય ॥ ત્રીજા દિવસની વેળા થાય ॥ એટલે
પ્રાતઃ થયો તેણી વાર ॥ દાતણ પાણી કરે કામદાર ॥૮૫૯
॥ દાસીને કહ્યું મુકયું આવાર ॥ આવે નહિં કોઠે આણે-
ઠાર ॥ તેની ખબર રાજે મોકલી પેર ॥ નરનારી કીને સુજ જેહે
ર ॥૮૬૦॥ દાતણ કરી રહ્યા કામદાર ॥ એક કડીઓ કી
ધો તઈઆર ॥ પછી નારી કહે તેણી વાર ॥ આમાં બેસો
તમે કામદાર ॥૮૬૧॥ ॥પૂર્વછાયા॥ ॥
રાયે કુંડીઆને જેઈ કરી ॥ બોલ્યા તેણે ઠાર ॥ આમાં પે
ઠેમ ઘાલો તમો ॥ એમ કહે કામદાર ॥૮૬૨॥ વળતી
નારી એમ કહે ॥ તમે સુણો મારા સ્વામ ॥ કુંડીઆમાં બે
સો સહી ॥ ચાર ઘડીનું કામ ॥૮૬૩॥ ॥ચોપાઈ
॥ ॥ જે ચાર ઘડીનું છે કામ ॥ કોને ખબર ન થાએ
સ્વામ ॥ તમને કહેતાં પડે છે વિચાર ॥ મારી ભલ કપું આપ
ણી વાર ॥૮૬૪॥ પછે કુંડીઆમાં પેઠો કામદાર ॥ ઉપર
ઢાંકણું ઢાંક્યું નાર ॥ સુંદર સમરે શારંગપાણ ॥ મધુસૂ-
દનજી રાખજ્યો માન ॥૮૬૫॥ પાંનરેથી છોડ્યો તમે સ્વા
મ ॥ કુંડીઆમાં પેઠો આણે ઠામ ॥ મારા દુઃખનો નાવ્યો
પાર ॥ ભલો ભલો તું વિશ્વાધાર ॥૮૬૬॥ ॥પૂર્વ
છાયા॥ ॥ કુંડીઆમાં પેઠો સહી ॥ ઘડી થઈ જે
ચાર ॥ ડોકડા જેગી જેઈ કરી ॥ રેહેન માંડ્યું નાર ॥૮૬૭॥

पोपट समणी लई गई ॥ तें नवराजी तपास ॥ चेन
पडे नहीं मुजने ॥ न आवीश माहारी पास ॥८६॥
जेम कहीं छीडी जरी ॥ घोडो लीधो नार ॥ हसीने आली
डरी ॥ मारयात्यां जेयार ॥८६॥ ॥चोपाई॥
॥ ॥ आवे त्यां प्रलावतीनी मान ॥ कहे हसी सु
णो मारी वात ॥ जाई नथी अमारो वांक ॥ वणशुने मारी
कुरांक ॥८०॥ वणशुने मारी अमने कह्यानी वात शुं
कहीये तमने ॥ पोपट आव्यो हतो अेक पास ॥ तेने
समणी लई गई आकाश ॥८१॥ कहो अेवडो मारो शो
वांक ॥ वणशुने मारी कुरांक ॥ माता आवी पुत्री अवा
श ॥ कहे माने मारीतें हाश ॥८२॥ प्रलावती जोशीने
वार ॥ रोई पडी त्यां राजकुमार ॥ अेक पोपट आवेनो
अहीं ॥ तेने समणी ते लेई गई ॥८३॥ हसीअें नरा
जीतपास ॥ समणी लईने ऊडी आकाश ॥ तेनी रीश थ
डी मुजने नरी ॥ मारे हाशीने शीक्षा करी ॥८४॥ ॥
पूर्व छाया ॥ ॥ हवे कोई आवे नहिं ॥ माता
मारी पास ॥ रसोई करी हुं थें जमुं ॥ हुं पोताने अवास
॥८५॥ अेक डंडो छे माणियो ॥ लीड्यां तेना हार ॥ लोक
न कीधां लावतां ॥ जमाड्या जरथार ॥८६॥ ॥
चोपाई ॥ ॥ते दिवस अेम वहीने जाय ॥ सं-
ध्याकाळनी वेळा थाय ॥ त्यारे सुंदर वदे वचन ॥ तुं तो-
सांभळने कामन ॥८७॥ राजअें पण लीधुं छे जणा ॥
अग्निमां जळवुं निरवाण ॥ आठ दिवसनो वायदो हो
य ॥ तेमां पांच विति गया सोय ॥८८॥ तेनो छे मुज
ने संताप ॥ निश्चे जळशे तारो जाप ॥ ते माटे हुं जा-
ऊं घेर ॥ आज्ञा द्यो तमे रुडी पेर ॥८९॥ त्यारे कहे
छे हजी नहीं जवा ॥ थनार हशे ते देशुं थवा ॥ तमे रहो

स्वामीजी मुज पास ॥ मुने करशो नहिं निराश ॥ ८० ॥
॥ ॥ पूरव छाया ॥ ॥ मांड्या पासा सो
गठां ॥ ने छे नरने नार ॥ रमत लागी रंगशुं ॥ तेणें
पाड्या पोजार ॥ ८१ ॥ मलावती जीती सही ॥ हार्यो
त्यां कामदार ॥ बीजी वार पछे नाजीआ ॥ वणी पड्या पो-
जार ॥ ८२ ॥ रमत कुड मची रही ॥ ठोका थया अपार ॥
रजवालो जेठा सही ॥ ढळीतो ते र थार ॥ ८३ ॥ ठोका
ने सांभळ्यां ॥ रजवाल पोकारे छे तेह ॥ सांभळतां अचि
रज थया ॥ तेनां मनमां तेह ॥ ८४ ॥ ॥ चोपाई
॥ ॥ सुनोजे सुनोजे तुम यार ॥ ठोका होता है मेहे
ल मोजार ॥ ईस जातर कहते तुमकुं ॥ राज रीस करे अे
हमकुं ॥ ८५ ॥ सावचेत जेठा थई आण ॥ तवने सुंदर
जोत्यो वाण ॥ अवा घोने मुजने नार ॥ हुंतो मानुं त-
मारो उपकार ॥ ८६ ॥ ॥ पूरव छाया ॥ ॥
नारी वळतुं अेम कहे ॥ जरी कहुं छुं वात ॥ तमने अव-
वा नहीं देउं ॥ करशो महा उतपात ॥ ८७ ॥ काला वाला
कीधा घणा ॥ माने नहीं लगार ॥ रीस चढी मने अति घ
णी ॥ घोल मारी जे चार ॥ ८८ ॥ नारी पडी पृथ्वी प-
रे ॥ मारो जीव जाय ॥ तमने अवा नहिं देउं ॥ कहुं छुं
साची वात ॥ ८९ ॥ ॥ चोपाई ॥ ॥
अवा नहिं देउं तमने कंथ ॥ शाने करो छो कलपांत ॥ मा
टे रीस उतारो स्वाम ॥ पुरो मारा ते मननी हाम ॥ ९० ॥
॥ अनेक अेवें चरित्र कीधां अपार ॥ रीस उतारी लरधार
॥ पछे रंगभोग त्यां कीधा ॥ मलावतीने जह सुख दीधा ॥
॥ ९१ ॥ सुंदर कहे छे मन विचार ॥ जेम तेम सुखे रहे
नार ॥ अेटले सुती मलावती आण ॥ जब निन्दा आवी
तेने आण ॥ ९२ ॥ पछे विचारे त्यां कामदार ॥ जरो-

लाग आव्यो निरधार ॥ सुती मुकुं आणे ठार ॥ जरीके
थी वीतई आणी वार ॥८९३॥ ॥ पूरव छाया
॥ . ॥ जेम लणीने वीठीओ ॥ जारीयें आ-
व्यो सोय ॥ राढनुं जे कुन आंधीयुं ॥ तेम न लणे कोय ॥
॥८९४॥ हणवे हुतो वीनस्यो ॥ जेतां तेणी वार ॥ जीज
घणी मनडा विषे ॥ मूके जकु कामघर ॥८९५॥ चोकी
वाळा लगीआ ॥ नेणां तेणे ठाम ॥ लुसाको मारे थयो
॥ जोल्या मुजथी आम ॥८९६॥ . ॥ चोपाई
॥ . ॥ कान जे कोन जे हेजो यारो ॥ सज रहो-
तुम हुशीयारो ॥ कोठे चाकर पडीआ चोक ॥ हेजो रसी
जांघी हे गोज ॥८९७॥ आपण चोकीवालो हे लाई ॥
अपने रोटी राजनी जाई ॥ लेना जरछी ढाल तरवा
र ॥ कमरमें जांधोने कटार ॥८९८॥ चोरे लाग्या वील
जजर ॥ केडे ढलीत थया हुशीआर ॥ चारशें ढलीत
ने कहेवाय ॥ तेतो सुंदर केडे थाय ॥८९९॥ रात जे
पोहोर रहीणई छे जाण ॥ दीठो नगरशेठ परमाण ॥ -
नामुं करे छे पुत्रनुं जाप ॥ दीपक जलेने जेठो छे आप ॥
॥९००॥ मोतीचंद शिवचंद जेनुं नाम ॥ सुंदर आव्यो
तेणे ठाम ॥ त्यांतो आवीने वीलो रह्यो ॥ शेठने समाचा
र मुजे कह्यो ॥९०१॥ ॥ पूरव छाया ॥ ॥
राज राज शेठ मुजने ॥ कुच दया प्रतिपाळ ॥ चोर छ-
वीं राजतणो ॥ तुं मुजने वीगार ॥९०२॥ पुत्र पिता जे
जेई रह्या ॥ हवे केम करशुं आज ॥ शरणागत वीगार
वो ॥ लज्ज राजे महाराज ॥९०३॥ जेम कहीने वीठीआ
॥ आव्या घर मोजार ॥ अस्त्रीने कहे सांभळो ॥ शो क
रवो विचार ॥९०४॥ चोरने लई संताडया ॥ जुवे तपा
शी लाग ॥ वीगाई तुजने जरो ॥ पछी जई तुज लाग्य ॥

॥४५॥ ॥चोपाई॥ ॥विचार करे छे
नर ने नार ॥ एटले हलीने आव्या सो चोर ॥४६॥ जोजो जे
जोजो जे तुम साहुकार ॥ चोर आव्यो तोरे द्वार ॥४७॥
लागो लागो इसका कमाड ॥ एसा काम करे साहुकार ॥ ह
लीत बोल्या तेणी वार ॥ थर थर कंपे ते घर मोझार ॥४८॥
शेठ कहे करवुं एहवुं काम ॥ जेम आपणी रहे वली लाज ॥ प
रपंच करीने उठाडी ॥ माटे पुत्री लेगी सुवाडी ॥४९॥ पछी
चोरने साद ते दीधो ॥ पुत्री जाटला पासे लीधो ॥ त्यारे सुध
र बोल्यो वाणी ॥ कुंतो छगी देह प्रमाण ॥५०॥ त्यारे शेठे
विचार्युं आप ॥ कवण गाई तो जेसे न पाप ॥ त्यारे पुत्री
ए कर्यो विचार ॥ दीधो देह मुने भरथार ॥५१॥ पि
ता कहे ते चडावुं शीश ॥ नहिं तो कुलाय श्री जगदीश ॥
जेम नशीब लख्युं तेम होय ॥ तेमां दोष न देवो कोय ॥५२
॥ पछी पुत्रीने आव्युं ज्ञान ॥ भलुं करशे श्री भगवान ॥
मारा शीरनो ते छत्र जेह ॥ एने अरपुं हुं माहारी
देह ॥५३॥ ॥ दूहा ॥ ॥ पे
ठाड्यो तां चोरने ॥ पुत्री सन्त्या मांहे ॥ शेठे जाहार नी
घाटीयां ॥ हलित आव्या मांहे ॥५४॥ मोतीचंद मुज
थी कहे ॥ चोर नथी आ ठाम ॥ शाद आवे मनमां कहीं ॥
जुवो फरी मुज धाम ॥५५॥ ॥ चोपाई ॥ ॥
सुनजे सुनजे तुं साहुकार ॥ जुठुं बोले तो जाय मा
मान ॥ इस गलीमें आया है चोर ॥ जुठा कया करता
है सोर ॥५६॥ तुं तो है जगीएकी जात ॥ हम करता
है सची जात ॥ मोतीचंद बोल्यो तेणीवार ॥ एक पु
त्री वहु ने नार ॥५६॥ वली हुं पुत्र न माछे ॥ चोर आ
व्यो नहि अहिं भाई ॥ तो मने पेठाते घर मोझार ॥ भेया
पेरी पेटाने ते सार ॥५७॥ भेयां मेहडी मोहोलने-

माण ॥ चोर दीठो नहिं तेणी वार ॥ सुंदर पोढ्यो पलंग
मोझार ॥ थरथर धूजे गोहडां नाख्यां चार ॥१८॥ ठ-
लीत आव्या तेणे अवास ॥ साकर जोई बीली छे पास
॥ कामिनी कहे जोरीकां थाज्यो ॥ सुजीआ होय तेने घे
र जज्यो ॥१९॥ ताव आवे छे कुंथने सोय ॥ गोहडां -
ओढ्यां छे आवी जोय ॥ अहींआं चोर नहींरे लगार ॥
मारा पतिने नथीरे करार ॥२०॥ . ॥ सूरठ छाया
॥ ॥ नारी वलती एम कहे ॥ ईहां नथीरे को-
य ॥ वचिन एवां सांभली ॥ पाछा वळीआ सोय ॥
॥२१॥ ॥चोपाई॥ ॥ चलोजे चलो
जे अपने यार ॥ एतो जुग न जोवे शाहुकार ॥ चोरला
ग गयां ईस ठाम ॥ अजतो जना पीछा मुकाम ॥२२
॥ एम कहीने नीकळीआ बाहार ॥ शेठे लीध्या पोताना
हार ॥ साकर जाई जोती तेणी वार ॥ तमे बीठो मारा भ
रथार ॥२३॥ सुंदर जोल्यो मुजथी वचन ॥ तुं तो घे
ली दीसे कामन ॥ अमे ठेठ तमे शाहुकार ॥ मने कहे छे क
म भरथार ॥२४॥ ॥ सूरठ छाया ॥ ॥
नारी वळती एम कहे ॥ सुणो तमे दिलदार ॥ ठेठ अमा
रा शीर समो ॥ फेरा फरीए चार ॥२५॥ ॥चो
पाई॥ ॥ फरीए ते फेरा चार ॥ सुंदर जोल्यो मुज
थी विचार ॥ नहि आवे ऊत्तम अवतार ॥ ठठ मुकी दि
ए आवार ॥२६॥ चतुर नारी थई केम चूक ॥ म
ने जहार काढीने मूक ॥ दुर्लभ मनजो ऊत्तम अवता
र ॥ नहिं आवे वारोवार ॥२७॥ तुंतो आवडी शुं थ
ई आतुर ॥ कांई समजण राजने नीर ॥ नीचे साथे न
कीजे प्रीत ॥ नहिं ऊत्तम जनती रीत ॥२८॥ त्यारे
नारी जोली वचन ॥ तमे सांभळो मारा स्वामिन ॥ मा-

રા ભાણ તણા આધાર ॥ શું તર છોડો વારમવાર ॥૭૨૯
॥ ॥ પૂરવ છાયા ॥ ॥ મા આપે દીધી
સહી ॥ તેમાં નહિ કાંઈ દોષ ॥ શાસ્ત્ર સાક્ષ એવી વદે
॥ એશી નોએ એશ ॥૭૩૦॥ ત્યારે સુંદર બોલી એ
સાંભળ રે તું ભામ ॥ પુત્રી એ તુજ માતને ॥ કહે તેમ
કર તું કામ ॥૭૩૧॥ ॥ ચોપાઈ ॥ ॥
એવું સુણતાં ગઈ માતાની પાસ ॥ મુજે નાખે અતિ નિ
શ્વાસ ॥ સુણ માતા તું મારી વાત ॥ તેનો કીધો મેં ઉત
પાત ॥૭૩૨॥ શા માટે ઢેઢને તોતેં દીધ ॥ અણઘટતી
વાત બહુ કીધ ॥ હવે તું કહેને કરીએ ॥ કહેતો આંટા
ધારન કરીએ ॥૭૩૩॥ ગાણ બેસવાની હતી તે બેઠી ॥
તેની ચિંતા મારે મન પેઠી ॥ માતા બોલી તેણીવાર ॥
સુણ પુત્રી મારો વિચાર ॥૭૩૪॥ કેમ ઢેઢને આપ
ણ વારીએ ॥ પછે પૃથ્વીમાં કેમ ફરીએ ॥ માટે કાઢો
ને ઘરમાંથી એહ ॥ શરણે રાખ્યો હતો વણી તેહ ॥૭૩૫
॥ કાલ તારા વિવાહ કરશું ॥ મુજ ઉમંગું કરીને ફરશું
॥ એમાં લાંછન લાગે કુળમાં ॥ પ્રતિષ્ઠા જાએ એક
પલમાં ॥૭૩૬॥ માટે ઢેઢને કાઢી મુક ॥ તુંતો ચતુર
થઈ કેમ ચૂક ॥ એવાં માતાએં કહ્યાં વચન ॥ તોએ
કુંવરીનું ન માન્યું મન ॥૭૩૭॥ ॥ પૂરવછા
યા ॥ ॥ કાહાડ બાહાર આણી ઘડી ॥ ન
વ કીને કાંઈ વાર ॥ એવું સુણતાં ઓચરી ॥ રીસ ક
રી અપાર ॥૭૩૮॥ પ્રથમ વિચાર્યું નહિ રતી ॥ તે અ
ણઘટતી વાત ॥ ચૂક મોટી એ તમ તણી ॥ સુણો મા
તને તાત ॥૭૩૯॥ થવાનું તે થઈ ગયું ॥ છતી કેરા
તેજ ॥ હવે કહ્યું માનું નહિં ॥ પાણું મારી દેક ॥૭૪૦॥
॥ ॥ ચોપાઈ ॥ ॥ ત્યારે મુજથી બોલી

मान ॥ जाई संभळाव तारी तान ॥ मोतीचंद आव्यो
ते घरे ॥ त्यारे जोयां पुत्रीनां चावडी ॥४१॥ मोतीचं
द कहे वचन ॥ शुं कळश्यो करो कामन ॥ तव जोती पुत्री
नी माल ॥ सादर जाई जोती जनपात ॥४२॥ चोर
जणो आव्यो नो नेह ॥ ढेद जतीनो हतो तेह ॥ पुत्री कहे
तेने कहीं भरथार ॥ माटे कस्युं न मानें लगार ॥४३॥ मो
तीचंद कहे सुनर्थी [illegible] पुत्रीतें चतुर सुजाण ॥
आपणा वणिक तणो अवतार ॥ केम ढेड थाय भरथार ॥
॥४४॥ कुळ लांछन लागे जाई ॥ कोई सांभळे जेहने
लाई ॥ त्यारे जोशी साकर जाई वात ॥ तमे सांभळो म
ात तात ॥४५॥ पेहेलो विचार मनमां न कीध ॥ मने दे
कत सोंपी दीध ॥ ते माटे ए मारो भरथार ॥ नव पर
णुं ते जीजवार ॥४६॥ ॥ पूरव छाया ॥
॥ ॥ स्वामी ए साचो सही ॥ नहिंतर पाडु-
काय ॥ हवे सत्य ने चुडीए ॥ नो कोपे रघुराय ॥४७
॥ एम कहीने संचरी ॥ आवी मेहेल मोझार ॥ द्वार बंध
कीधां सही ॥ जगाड्यो भरथार ॥४८॥ ॥
चोपाई ॥ ॥ आवो आवो मारा भरथार ॥ त
मे बीक न करशो लगार ॥ मात पिताने पुछी वात ॥ के
म मुजने करे छे नाथ ॥४९॥ नारी कहे मुजने शुं काम
॥ आपणी वात न कीजीए श्याम ॥ त्यारे सुंदर कहे तेणी
वार ॥ ताहारे गमे ते कर तुं नार ॥५०॥ ॥ पू
रव छाया ॥ ॥ चार कळश ते मांडीआ ॥ हो-
मी घृतनी धार ॥ चरी लक्ष करीने जीतीआ ॥ मंगळव
रत्यां चार ॥५१॥ ॥ चोपाई ॥ ॥
पछे मंगळ वरत्यां चार ॥ त्यांतो आरोग्या कंसार ॥ परण्
जीत्यां रूडी रीत ॥ मांहो मांहे वाधी घणी प्रीत ॥५२॥

विष्णोदकें कीधां पछे स्नान ।। अंगें पेहेर्यां वस्त्र निधा-
न ।। भोजन पंचामृत पकवान ।। जीडी करी जवराव्यां पा-
न ।।५३।। उपमा जकु स्वामिने दीध ।। पछे मंगलआ-
रती कीध ।। रुडी पुष्पनी सज्यातईआर ।। आवां पे ढो-
मारा भरथार ।।५४।। भोग विलास करीजे नार ।। ह-
रज पामी घणुं मन मोजार ।। पान सोपारी अेलची सार
।। दे के स्वामीने निरधार ।।५५।। ।। पूरव छा-
या ।। ।। ते रजनी अेम वही गई ।। थयो प्रातःका-
ळ ।। मुज भार्जन कीधुं सही ।। सेवा करनी नार ।।५६।।
चंदन रेडुं चरचीउं ।। पुष्प समरप्या हार ।। राज अ-
ति हर्षक चित्ते ।। रूप तणो अवतार ।।५७।। ।।
चोपाई ।। ।। अेवी पूजा कीधी ते नार ।। भो-
होलेथी गतनी तेणी वार ।। मातम पासे आवी ज्यारे ।।
रीस करी बोली अेम त्यारे ।।५८।। मारा घरमां तुं मा-
आवीश ।। मारुं घर तुं अलकावीश ।। तुंनो ढेड कर्यो भर-
थार ।। तुंनो छेटे गेल्ली नहे जाहार ।।५९।। मात पुत्री
करे छे वात ।। अेटले घरमां आव्यो नात ।। मोतीचंद क-
हे सुण जाई ।। तेंनो ढेड शुं करी सगाई ।।६०।। जे
वात कई पेरे संताडुं ।। लोकने मुज शुं हेजाडुं ।। मारुं मृ-
त्यु आव्युं आणी वार ।। नहिंतर मारुं पट करार ।।६१
।। अेम कळकळे शाहुकार ।। तव बोली मोतीचंदनी ना-
र ।। स्वामी चडी जुओ अवास ।। वेगे ल्यओनी ढेडनी-
पास ।।६२।। कपटी रूप वशी करण होय ।। तेणे पुत्री
भोलवी जोय ।। कांई कारण अेमां होय ।। नईने जुवो-
स्यांहां ल्येय ।।६३।। ।। पूरव छाया ।। ।।
शेठ ततक्षण उठीओ ।। आव्यो तेणे ठाम ।। सुंदर दीठो
मलपतो ।। ज्नेतां पोहोती हाम ।।६४।। मेंनो कांई भ-

એવું નહિં ॥ આ સુંદર પરધાન ॥ લાય કરી લેખ્યા સહી ॥ દીધાં આદર માન ॥૬૫॥

॥ચોપાઈ॥

॥ લઈ આવ્યા તમે કામદાર ॥ તમે કીધી અમારી સાર ॥ મોતીચંદ પામ્યો ખીલ્લાસ ॥ મારા મનડાની પોહોતી આશ ॥૬૬॥ ભોજન કરાવ્યાં તેણી વાર ॥ વળી બોલી મુજથી નાર ॥ સુણો વાત મારી તમે સ્વામ ॥ મારી પોહોની મનની હામ ॥૬૭॥ મોતીચંદ બોલ્યો તેણી વાર ॥ સમજાવી પોતાની કુમાર ॥ જજર રાજાને કીધી પેર ॥ અલુજ્જે કરી ઘણી મેહેર ॥૬૮॥ તેડી પાસે પોતાની નાર ॥ આપણને બુઠ્યા વિશ્વાધાર ॥ એતો છે સુંદર કામદાર ॥ તાજદાર થઈ કુમાર ॥૬૯॥ હવે બીગર રાજાન ॥ તેણે જઈ લીધું અનુદન ॥ તે દિવસ એમ પુરો થાય ॥ તો હે જજર થઈ નહિં રાય ॥૭૦॥ જે દિવસ રહ્યા નિરધાર ॥ રાજા મરવા થયો તઈઆર ॥ સુંદર કેમન આવ્યો ઘેર ॥ કળકળે તિહાં આખું શેહેર ॥૭૧॥

॥ ॥પૂરવ છાયા॥

॥ જે દિવસ નિશ્ચે રહ્યા ॥ સુંદર જોસ્યો નવસાર ॥ મરણ આવ્યું ટૂંકડું ॥ રાજા કરે વિચાર ॥૭૨॥ સુંદર જેઠો મોહોલમાં ॥ ચોપટ રમે અપાર ॥ સ્કડ લાગી પાસા તણી ॥ નાજ્યાત્યાં પોજાર ॥૭૩॥

॥ચોપાઈ॥

॥ રમત રમે છે નરને નાર ॥ બહુવિધ એ નાજે પોજાર ॥ રજની ગઈ જડઘી ત્યારે ॥ સુંદર પોહોડ્યો પલંગ પર ત્યારે ॥ ॥૭૪॥ પ્રાતઃકાળ થયો નિરધાર ॥ મુજ માર્જન કીધું કામદાર ॥ પછે તેડી પોતાની નાર ॥ તું તો સાંભળ મારો વિચાર ॥ ॥૭૫॥ રાજાએં પાણી લીધું છે સોય ॥ ષટ દિવસ ત્યાં પુરા હોય ॥ સાતમો દિવસ થયો સાર ॥ મને આજ્ઞા દેજો તું નાર ॥૭૬॥

॥ પૂરવ છાયા॥

॥ તેદિ

कस जेम वही गयो ॥ थयो ते प्रातःकाळ ॥ आज्ञा देतुं
मुजने ॥ राजा आपे काळ ॥८७७॥ फेर जवा दे मुजने ॥
चाट जुवे राजन ॥ वचन एवां सांभळी ॥ बोली त्यां का
मन ॥८७८॥ ॥चोपाई॥ ॥
मुजथी बोली त्यां कामन ॥ तमे सांभळो मुज स्वामिन ॥ थ
नार हशे ते देशुं थवा ॥ पण नहिं देउं तमने जवा ॥८७९॥
तमो विना तो नव रहेवाय ॥ घडी एक सो वरसनी थाय ॥
माटे जवा दैने लाभन ॥ एम कवे छे राजन ॥८८०॥ का
लावाला करे ने अपार ॥ तो ए नव माने नार ॥ ते कहे न
ते जोटी [illegible] ॥ जाओ तो करूं महा उतपात ॥८८१॥ सुं
दर कहे तुं थईश जुवार ॥ एम कहीने उठ्यो तेणीवार
॥ त्यारे छेडे वळगी नार ॥ तेने वार न लागी अपार ॥८८२॥
॥ त्यारे पाछु मारी कामदार ॥ पण नव मुके निरधार ॥ त
मे जीव मारो मारा स्वाम ॥ पण जवानुं नव लेशो नाम
॥८८३॥ त्यारे धो[illegible] मारी कामदार ॥ मोहोलमांथी
आव्यो बाहार ॥ परशाणे बेठो सोय ॥ जतां आवतां
माणस जोय ॥८८४॥ ॥पूरवछाया॥ ॥
माणस सघळां बेई रह्यां ॥ आ सुंदर कामदार ॥ तत
क्षण तेतो घोडीया ॥ आव्या राजदुवार ॥८८५॥ वचा
मणी जे जमतणी ॥ देजाडुं कामदार ॥ वचन एवां सां
भळी ॥ हरख पाम्यो तेवार ॥८८६॥ ते घडी राजा उठी
यो ॥ तेडवा पोते जाय ॥ महाराजन सर्वे लेवुं थयुं ॥ भी
तर अंग न माय ॥८८७॥ ॥चोपाई॥ ॥
तेने भीतर अंग न माय ॥ आव्यो मोतीचंदने त्यांय ॥ आ
व्या आव्या त्यां राजन ॥ मोतीचंदनुं मान्युं मन ॥८८८॥
राजा मुजथी बोल्यो सोय ॥ मुजने सुंदर देजाडो को
य ॥ मोतीचंद गयो घरमांय ॥ सुंदर बोलो छे वणी-

त्यांय ॥૭૮૯॥ छेडे वळगी छे कामन ॥ जव नहि के
डो स्वामिन ॥ सुंदर घणो करे छे उपाय ॥ कामिनी क
हे नजी नाखे ॥૭૯૦॥ मोतीचंद आव्यो तेणी वार ॥
दीठी छेडे वळगी नार ॥ सुंदर चालो तेडे राजन ॥ त्यारे न
मुखथी बोली कामन ॥૭૯૧॥ माहारो स्वामी जो जा
हारे जाय ॥ नहीं पाछा नव मुके राय ॥ त्यारे शो रहे अ
मारो तोल ॥ जतां रहे पण बोल्या बोल ॥૭૯૨॥ मो
तीचंद समजावे जाण ॥ पण राखे नहिं कांठे ताण ॥ वि
चारीने मनमां रह्यो ॥ राजा प्रत्यें बोलन कह्यो ॥૭૯૩
॥ तमने तेडे छे कामदार ॥ राजाने मेलो तेणे ठार ॥ तो
जे पण नव मुके जान ॥ मुख कहेती ते नाकार ॥૭૯૪
॥ ॥ पूरव छाया ॥ ॥ ततक्षण रा
जा उठीयो ॥ आव्या मोहोल मोझार ॥ सुंदर दीठो ने
टले ॥ छुटी आंसुनी धार ॥૭૯૫॥ जुज लीडीने
लंटीआ ॥ जलो जलो कामदार ॥ दरबार चालो आ
पणे ॥ तव मुखथी बोली नार ॥૭૯૬॥
चोपाइ ॥ ॥ त्यारे मुखथी बोली ते नार
॥ तमे मारा पिता केरे ठार ॥ जेने हुं परणी राजन ॥ ए
तो मारो छे स्वामिन ॥૭૯૭॥ अहिं थकी जो अलगो
जाय ॥ पाछो ए नव आवे राय ॥ कांठे जोर न चाले
लगार ॥ अमे रांक चरणथी अठार ॥૭૯૮॥ त्यारे
जे राजा बोल्या वाण ॥ मारी पुत्री तुं परमाण ॥ तुं तो
मोकल कैडी पेर ॥ एतो आवशे ताहारे घेर ॥૭૯૯॥
नारी कहे तमे पाळो बोल ॥ सत्य वचननो आपो-
कोल ॥ तो मुजने आवे विश्वास ॥ त्यारे मुकुं तमारी
पास ॥૮૦૦॥ तव राजा बोल्यो मुख बोल ॥ आले मा
हारा बापनो कोल ॥ तमे धीरज धरो लगार ॥ एवी ह

કનકીને નાર ॥૧૦૦૧॥ ॥પૂરવછાયા॥ ॥
ડોલ દઈ પાછા વલ્યા ॥ સુંદર લેણી જાય ॥ બારણે આ
વી ઊભા રહ્યા ॥ ગુણીજન ગુણ બહુ ગાય ॥૧૦૦૨॥ ભાટ
ચારણ ગુણ ગાંધર્વ ॥ જોતે જય જયકાર ॥ બોલે ફર
તા તે સહી ॥ ભલો સુંદર કામદાર ॥૧૦૦૩॥ ॥
ચોપાઈ॥ ॥ એવા મળ્યા વરણ અઢાર ॥ મન
માં સહુને હરખ અપાર ॥ ભલે ભલે આવ્યા પ્રધાન ॥ ઘ
ણું હરખ પામ્યા રાજન ॥૧૦૦૪॥ ॥પૂરવ-
છાયા॥ ॥ હરખ રાજા પામીઓ ॥ ઘરસ્યો જય
જયકાર ॥ ખબર લઈ પછી ત્યાંહુને ॥ ન્યાં બેઠી કુલવંતી
નાર ॥૧૦૦૫ ॥ તતક્ષણ વેહેલ ઉતરી ॥ ભેલી છે રતુકા
ર ॥ વેગે વહીને આવિયા ॥ મોતીચંદને દુવાર ॥૧૦૦૬॥
॥ ॥ચોપાઈ॥ ॥ આવી આવી કુલવ
તી નાર ॥ સાથે દાસી છે રતુકાર ॥ છેડી ઘાંચા કેરી-
જાલ ॥ તે પણ આવી ત્યાં તતકાલ ॥૧૦૦૭॥ પ્રભાવ
તીને ખબર હોય ॥ વેહેલે બેશીને આવી ત્યાંય ॥
સરવે આવી મોતીચંદને ઘેર ॥ હવે નીપને કેવી પેર
॥૧૦૦૮॥ પછે છોડી મોતીચંદની તન ॥ આવી ન્યાં પો
તાને સ્વામિન ॥ પાસે આવીને ઊભી નાર ॥ જીબ ત્ર
ણ નારી તેણે ઠાર ॥૧૦૦૯॥ ત્રણ દિઠી ન્યારે કામિની
॥ રીસ ચઢી ઘણી ભામિની ॥ સાકરજોઈ બોલી વ-
ચન ॥ તમે ઘરમાં ચાલો સ્વામિન ॥૧૦૧૦॥ એવાં વચ-
ન સાકરજાઈએ કહ્યાં ॥ કુલવતીથી નવ જાએ સહ્યાં ॥
ચાલો ચાલો સ્વામી ઘરમાંહ્ય ॥ તમે શું રે બેઠા છો રે ઈહાં
યે ॥૧૦૧૧॥ એવો કેમ કહે ભરથાર ॥ એમ કહીને કાકુ
આસ્યું નાર ॥ ચાલો ચાલો મારા સ્વામિન ॥ આતો ઘેલી
દીસે છે ભામન ॥૧૦૧૨॥ ત્યારે પ્રભાવતી બોલી સોય ॥

आतो कोणन नारी होय ॥ आंवी छेडे वळगी नार ॥
जानो मानो जेहो कामदार ॥१०१३॥ धांधा केरी पुत्री
जेह ॥ आंवी छेडे वळगी तेह ॥ थारे नारी दीजे जकु
मान ॥ जेम धणी गोपी नांहे कहान ॥१०१४॥ ॥
॥ पूरव छाया ॥ ॥ सुंदर शरम पाम्यो घ
णुं ॥ चार वळगी कामन ॥ त्यारे वळतो बोलीओ ॥
लखसेन राजन ॥१०१५॥ आतो कौतीक छे जई ॥ दी
ठी निज कुमार ॥ हळवे रहीने पुछीयुं ॥ कहो आशुं का
मदार ॥१०१६॥ ॥ चोपाई ॥ ॥ बो
ल्या लखसेन राजन ॥ पासे दीठी पोतानी तन ॥ आवा
तनीपनी कामदार ॥ असने समजवो आणे ठार ॥
॥१०१७॥ सुंदर बोल्यो मुजथी वचन ॥ चारेने पुछो
तमे राजन ॥ त्यारे पुछे धांचेणने ते ठार ॥ तारो केम
थयो भरथार ॥१०१८॥ त्यारे मुजथी बोली नार ॥
जीवतदान दीधुं कामदार ॥ ते माटे अमारो भरथार ॥
साचुं कह्युं में आणे ठार ॥१०१९॥ कुलवतीने कह्युं वच
न ॥ एने हाथे कीधुं भोजन ॥ पछे पुछ्युं पोतानी कुमा
र ॥ तारो केम थयो भरथार ॥१०२०॥ त्यारे बोली प्रे-
मावती नार ॥ पोपट थई आव्यो कामदार ॥ ते माटे-
मारो ए भरथार ॥ एमां जुठुं नहिं रे लगार ॥१०२१॥
पछी पुछ्युं वणिकनी कुमार ॥ ताहारो केम थयो भर
थार ॥ साकर जाई बोली वचन ॥ सांभळो पिताजी
मारूं वचन ॥१०२२॥ चोर थईने आव्यो प्रधान ॥ ते
ने आप्युं में जीवतदान ॥ सिपाई मारता हुता एने
ठार ॥ त्यारे रात गई ती जे पोहोर ॥१०२३॥ अमे जी
वाड्यो तेणी वार ॥ पिताए सोंप्यो ए भरथार ॥ ते
माटे मारो ए स्वाम ॥ तमे करोने मारूं काम ॥१०२४॥

॥ ॥ पूरव छाया ॥ ॥ वचन एवां सां
भळी ॥ विस्मय पाम्यो राय ॥ भलां नथीज सुंदर त-
णा ॥ ए वात सत्य कहेवाय ॥१०२५॥ वछेताण कहे राय
सांभळो ॥ राजा वीर सुजाण ॥ पेहेली कन्या कोई वरेण
ते सांभळजो राजन ॥१०२६॥ कुळवती वरे नहीं ॥ ए
हुं पीरछुं अन्न ॥ सुख एलो पामे नहीं ॥ दुःख पा-
म्यो राजन ॥१०२७॥ पांच्यां केरी तीकरी ॥ ते केम वरे
निरधार ॥ पोपट एणे कीधो सही ॥ पांजरे घाल्यो का
मदार ॥१०२८॥ भलावती परणे नहीं ॥ कोडीआमां
घाल्यो नेह ॥ कह्युं तेणे मान्युं नहीं ॥ पीठी लागी
तेह ॥१०२९॥ ॥ चोपाई ॥ ॥ पर
णे परणे वणिकनी कुमार ॥ तेणें ठेक कर्यो नरधार ॥
एवां वछेताणे कह्यां वचन ॥ वीर आजो थयो ते म
न ॥१०३०॥ पछे वछेताण कहे सुणो राय ॥ मोती थं
दे कीधो वीहीवाय ॥ मंडप रोप्यो कनकनी गार ॥
शोभे काम ते मीनाकार ॥१०३१॥ ॥ पूरव
छाया ॥ ॥ माणेक आव्युं भलपतुं ॥ मोती
थंदने कुवार ॥ आनंद सहुने अती घणो ॥ मंगळ
गाए नार ॥१०३२॥ वैशाक शुदी एकादशी ॥ उत्त
म मंगळवार ॥ शुभ मुहूर्त्तमां आविया ॥ पोते त्यां
कामदार ॥१०३३॥ ॥ चोपाई ॥ ॥
सुंदर परणवा आव्यो त्यां सार ॥ हरख पाम्या छे न
रने नार ॥ पछे तोरणपासें आवियो ॥ सासुए मो
ती लईने वधावियो ॥१०३४॥ सासु पोंखवा आवी ए-
सार ॥ हाथमां लीधो सुवर्णनो थाळ ॥ पछे पुंखवा-
मांड्युं कामन ॥ हरख वाध्यो पोताने मन ॥१०३५॥ धुं
सरं मुसळने रवाई नेत्र ॥ पोंखी ताण्युं को आवरनुं

नाक ॥ गजे घाट घाली नाएयो ॥ पछे हाथे वाळो मेढु-
लाएो ॥ १०३ ॥ ॥ मानुनी मंगल गाय ॥ त्यां ना
दा रंग जकु थाय ॥ मानी थेंदे आप्यां कंन्या दान ॥
हरज पाम्यो चाते म न ॥ १०उ७ ॥ त्यां तो मंगलव
रत्यां चार ॥ हे ते भीये न्न्या कंसार ॥ परएी ओब्या
रुडी रीत ॥ मांहो मांहे जंचाएी प्रीत ॥ १०उ८ ॥ मो-
ती थेंदे न्म डी नन न ने आप्यां श्रीफळ पान ॥ प छे
पेरामएी आपी सार ॥ आप्या उनक तएा लंडार ॥
॥ १०उ९ ॥ सुंदर परएीने घेर जाय ॥ हरज पाम्यो लक्
सेन राय ॥ मोती थेंदे आप्यां पसाय ॥ तेने ओलट अंग
न माय ॥ १०४० ॥ ॥ पूरव छाया ॥ ॥ रा
चाएी जोलीया ॥ सांलल तुं कामघर ॥ हवे वेह्रे आथ्या
ओ सही ॥ परएावुं मुज जाए ॥ १०४१ ॥ पछे विवाह
कीधो सही ॥ परएाव्यो परधान ॥ राजपाट सोंप्युं स
ही ॥ दीधां आआं मान ॥ १०४२ ॥ पछे घंथानी परएयो
सही ॥ परएयो कुलवती नार ॥ सुंदर तो सुज पामी
ओ ॥ लाग्य तएा नहिं पार ॥ १०४३ ॥ उविजन तो
चरिा जेम कहे ॥ करम मन मोटा होय ॥ मान पामे पर
देशमां ॥ ओळ न शाके कोय ॥ १०४४ ॥ करम जेना-
पाघरां ॥ तेने वश सकु लोक ॥ कविता चाएी जेम क
हे ॥ कर्म विना सकु फोक ॥ १०४५ ॥ कर्म विना रे नरज
दां करे ॥ कीहां न पामे मान ॥ ने नर छे अलागियो ॥
तेने शुध बुध नहिं सान ॥ १०४६ ॥ ॥ चोपाई
॥ ॥ सुंदर परएयो ते रुडी पेर ॥ सुज लोगवे ज
एो स्वर्ग घेर ॥ काम काज पुछी सकु करे ॥ देशे आए सुं
दरनी फरे ॥ १०४७ ॥ ओक दिवस थयो संध्याकाल ॥ मो
होलमां जेठी चारे नार ॥ मोहोल मध्ये आव्यो परधा

न ।। राणीए घणां दीधां मान ।। १०४८ ।। प्रभावती जो
ली वचन ।। वात करुं सांभळने राजन ।। तमो छो च
तुर सुजाण ।। तम आगळ अमे अजाण ।।१०४९।। त
मे चतुर शिरोमणि महाराज ।। एक मारुं करोने काज ।।
तमो आगळ वात कीधीए ।। तेनो उत्तर अमने दीजी
ए ।।१०५०।। समश्या ए अमे कहेशुं सार ।। एम जो
ली प्रभावती नार ।। च्यारे पासे बेठी छ कामन ।। हे तेच
र. करे लामंन ।।१०५१।। चतुराईनी वातो कीजे ।।
आपो उत्तर ते सांभळीए ।। पछे राणीए समश्य
कही ।। तेतो राज सांभळे सही ।।१०५२।। ण
पूरव छाया ।। ।। नारी जोती रीजवुं ।। सांभ
ळो चतुर सुजाण ।। पांथि पण्या वाहाला पुरुषने ।। ते ज
तावो निरवाण ।।१०५३।। पान पाघने पदमनी ।। प्रे
मतने पोशाय ।। आईक पुछो अलिनवुं ।। ने कहो ते
चपाय ।।१०५४।। धन धन नारी तुजने ।। धन धन रा
जकुमार ।। पांथि कडुआ वाहाला कामनी ।। ते कहोने अ
विच्यार ।।१०५५।। कानत कुंकुमने कंचूकी ।। कुसुं जो
ते कंथ ।। एवां ए वाहालां कामनी ।। वळी भुजने कु
पुछत ।।१०५६।। सुंदर वाणी जोतीयो ।। सांभळ
रे तुं नार ।। तममां जोरन पांचि छे ।। ते अमने देज
ड ।।१०५७।। कुड कुरूप कुलक्षणी ।। कुडी नार कनार ।।
ए पांचि नथी भारीकने ।। सुणो तमे अविचार ।।
।।१०५८।। तमे कही छो अमे एकलां ।। पण तमसा
थे छे सात ।। ते प्रत्यक्ष देजुं सही ।। जतावोने नाथ
।।१०५९।। तीर तरकसने तरवारडी ।। भालो नेतो जा
र ।। जांबु दुजे चाबजो ।। ए साते भुजकने नार ।। -
।।१०६०।। ।। चोपाई ।। ।। प्रभावतीए

वचनन कह्यां ॥ तेतो सुंदरे सरवे लह्यां ॥ वळी कुलवं
ती जोसी नार ॥ सांभळोने मारा भरथार ॥१०८१॥ मैं
तो दुःज दीधुं तमने कथी ॥ तेथी कल पडती नथी ॥
तमो छोज्ञ चतुर सुजाण ॥ पुछु तेनुं कहो परमाण ॥
॥१०८२॥ ॥पूरव छाया॥ ॥जे मध्ये गं
गाजल वसे ॥ जटाजिराजे शीश ॥ नेत्र त्रण कहोते मुने ॥
नहि ऊमया पती ईश ॥१०८३॥ त्यारे सुंदर वाणी जोतीयो
प सांभळ रे तुं नार ॥ श्री कृष्ण नाम छे तेहनुं ॥ सांभळ तुं
निःसधार ॥१०८४॥ जेक नरे नरने गळ्यो ॥ तेने दिसे
शोभावंत ॥ ते हमणां छे तम कने ॥ ते जतावो राजन ॥
॥१०८५॥ सुंदर वणतुं जोतीओ ॥ सांभळ तुं कामन ॥
लमो नाम छे तेहनुं ॥ कहुं तुजने वचन ॥१०८६॥ जेक
पंजी ऊडे जव विना ॥ जेसे जेणे ठाम ॥ मृत्यु पामे देखं
तां ॥ ते कहो मुजने स्वाम ॥१०८७॥ त्यारे सुंदर वणतो
जोतीयो ॥ मनमां राजी थीर ॥ तें पुछ्युं जे कामनी ॥
तेनुं नाम जे तीर ॥१०८८॥ जे राणीने सुंदर कहे ॥ तमे
छो चतुर सुजाण ॥ अमने ऊत्तर आपीओ ॥ हुं जोलुं
ते परमाण ॥१०८९॥ ॥चोपाई॥ ॥
तुं तो सांभळ गुणवती नार ॥ वळी रतनसेननी जाण ॥ मूं
रजो हुतो माईं नाम ॥ हुं गुं जाणुं चतुराईना काम ॥१०९०॥
जेक वातनो अरथ कीजीओ ॥ पछे अमने ऊत्तर दीजीओ
॥ समजयामां कहुं छुं सार ॥ तमे सांभळजो ते नार ॥१०९१॥
॥ ॥पूरव छाया॥ ॥नर जे गळ्याना
रीओ ॥ जगत जवाडण नेह ॥ ते वाहाली नारी नरने ॥ मु
जने जतावो तेह ॥१०९२॥ कुलवती जेम ओचरी ॥ सांभ
ळो मारा स्वाम ॥ तमे अमने जे पुछीयुं ॥ ते मां कंचुकीमां
छे काम ॥१०९३॥ नर जे रूपें आगळा ॥ स्त्रीने वहालाओ

पार ॥ गळस्थळ थुंकन करे ॥ ते जताव्यो निरधार ॥
॥१०७४॥ नेत्र निहाळे सरवनां ॥ सामुं न जोवाय ॥ तेमां
तेअे नर रह्यो ॥ अष्टशत नर जाणाय ॥१०७५॥ सम
श्या कही ते सांभळो ॥ जांघ्यो जंघन अेक ॥ ते नर तो
पासेज छे ॥ वाहालो तुज विशेक ॥१०७६॥ स तारी जनु-
नीअेने वर्यो ॥ ते थाशे तारो कंथ ॥ ते जताव्यो सुंदरी
॥ वात अेम पुछंत ॥१०७७॥ कुळवती वणती अेम कहे
॥ सांभळो जावन चीर ॥ अे ब्हलो नाम छे तेह्नुं ॥ त-
मे मन राखो धीर ॥१०७८॥ ॥ चोपाई ॥ ॥
जोवी जोवी वणीकनी जात ॥ अमे रांक वरणथी अ-
धार ॥ नेक वेंथीने पेटन भरीअे ॥ तेनी वात आगळी शी
करीअे ॥१०७९॥ अमे गरीब माणस जेह ॥ अेतो रा-
जपुत्री कहीअे तेह ॥ अेक वात कहुं छुं तमने ॥ तमे रीस
मा करशो अमने ॥१०८०॥ अेक अमे पुछुं छुं वात ॥ त-
मे सांभळो मारा नाथ ॥ समश्या जे अमे कहीअे अ-
जाण ॥ ते तमे साचुं जोवो परमाण ॥१०८१॥ ॥
पूरव छाया ॥ ॥ साचुं जोवजो मुज थकी ॥ री
स मां करशो लगार ॥ वातनो अरथ कीजअे ॥ साचुं क
हुं अविचार ॥१०८२॥ पीळो पण पोपट नहीं ॥ काळो
पण नहिं नाग ॥ पांजो पण पंजी नहीं ॥ ओडे पण न
हिं काग ॥१०८३॥ कुसुम भ्रमर वाहालो घणो ॥ दा
मणीपर रहे नेह ॥ पुछ्युं तमे ने भेमदा ॥ समजो ना
मज तेह ॥१०८४॥ नारी पण निरजळ नहीं ॥ काळी
पण नहिं कोल ॥ दर रहे पण नागण नहीं ॥ राज-
साचुं जोव ॥१०८५॥ ने जांघे जण जकु पडे ॥ शोभे
सुरने सार ॥ मृत्यु पामे जेसतां ॥ तेनुं नाम तरवार ॥
॥१०८६॥ ॥ चोपाई ॥ ॥ शामकुंवर

ઘાંથાની જાણ ॥ તેતો વર્ણન બોલી રસાળ ॥ એતો-
નારી ચતુરા સોય ॥ તે પર મન તમારૂં મોહ્યું ॥૧૦૮૭
॥ એમ કહીને બોલી તે નાર ॥ મારી વાત સુણોને લગાર
॥ સાચું કહો તમે મારા સ્વામ ॥ મારા મનની તે પુરો હા
મ ॥૧૦૮૮॥ એક વાતનો અરથ કીજીએ ॥ અમને તે
નો ઉત્તર દીજીએ ॥ કુંતો સમશ્યા કહું સાર ॥ તમે સુ
ણો મારા ભરથાર ॥૧૦૮૯॥ ॥ સૂરવછયા ॥
॥ ॥ નર એક નામાંકિત સદા ॥ સુત છે તેના-
જાર ॥ ચાલે એક પછી બીજો ॥ સ્થિર નહી લગાર ॥૧૦૯૦
॥ ત્યારે સુંદર બોલીઓ ॥ સુણ તું ચતુરા નાર ॥ પુરૂષ સં
વતસર ભલો ॥ સુત તે માસન જાર ॥૧૦૯૧॥ આઠ કટ
કે નર નીપજે ॥ જે નારી નર ચાર ॥ જે માંહે ખંડણ વ-
સે ॥ તે જતાવો ભરથાર ॥૧૦૯૨॥ ત્યારે સુંદર બોલિ
ઓ ॥ સાંભળ તું કામન ॥ પલંગ નામ તે તેહનું ॥ જે પર
કીજે શયન ॥૧૦૯૩॥ મુજનું માંડણ સરવનું ॥ તેને
વાધે કામ ॥ તે વાહાલું ઘણું તમ કને ॥ જતાવો તે શ્યામ
॥૧૦૯૪॥ અમુલજ તે કામની ॥ વણ તોલે વેચાય ॥ તે
મ તેમ આધે સંચરે ॥ મૂલ મોંઘેરાં થાય ॥૧૦૯૫॥ સુંદ
ર કહે નારી સુણો ॥ સમશ્યા પુછું નામ ॥ જુગતેથી જા
ણીયે ॥ પ્રેમદા તે તો પાન ॥૧૦૯૬॥ શોભ સાહેલી માં
રમે ॥ જેલે ત્રણ કુમાર ॥ તમ ઘર તે અમે દેખતાં ॥ તે
જતાવો ભરથાર ॥૧૦૯૭॥ રાજ લે તોરી ॥ દેખતા માં
તો તેહ ॥ હારે જીતે હોડન કરે ॥ શામા સોગટાં તેહ ॥
॥૧૦૯૮॥ ॥ ચોપાઈ ॥ ॥ એમ માંહી
માંહી અરથન કહ્યા ॥ તે સમજીને રાજી થયા ॥ એમ
કરતાં થયો પરભાત ॥ આનંદમાં તે વિતી રાત ॥૧૦૯૯
॥ મુજ માર્જન કીધું પ્રધાન ॥ પછે સમસ્યા મીલન-

थाल ॥ जीना पाणी थयां तइंआर ॥ सुंदर नाह्यो तेणी
वार ॥११००॥ भोजन कीधुं रूडी पेर ॥ सुख पाम्यो पो
ताने घेर ॥ सुंदर घोडे थयो असवार ॥ वेगे आव्यो
राज दुवार ॥११०१॥ सुंदर आव्यो सभा मोझार ॥ आवी
राजने कीधो जुहार ॥ राजाए घणा दीधो मान ॥ आ
वो आवो दीवान ॥११०२॥ सुंदर विना नव चाले
घडी ॥ घणी प्रीत जव साथे जडी ॥ सुंदर जे करे ते था
य ॥ सुंदर विना घडी न रहेवाय ॥११०३॥ सुंदर प्राण
तणो आधार ॥ सुंदर आप्यो कंरे हार ॥ तेसां जेथीने
कर्यां भोजन ॥ घणुं सुंदरनुं जाण्युं मन ॥११०४॥ राजा
नी राणी छे पचास ॥ घणुं करती सुंदर सुवास ॥ सुंदर-
आपो कहीजे पंथ ॥ चार राणी केरा कंथ ॥११०५॥ जेसे
कचेरी मोझार ॥ आवे सुंदरनो दरबार ॥ सुंदर आपे
ते राजा जाय ॥ लेतां मृगीया रमवाने जाय ॥११०६॥
सुंदरने कहे राजा जोल ॥ आज नहि कोई तारे तोल ॥
लाडको राजानो कहेवाय ॥ सुंदर जे करे ते थाय ॥
॥११०७॥ ॥ पूरव छाया ॥ ॥ घणा
दिवस एम वही गया ॥ सुखमां अपरंपार ॥ सुंदर
सुतो मोहोलमां ॥ पासे कुलवती नार ॥११०८॥ घर पोता
नुं सांभर्युं ॥ मात तातने भ्रात ॥ भणिये वेगे तेहने ॥ सु
ख दुःख कहीए वात ॥११०९॥ ॥ चोपाई ॥ ॥
एम संसारे मातने तात ॥ जीभ सांभरे छे निज भ्रात
॥ तेथी सुंदर करे आंसु पात ॥ वारंवार संभारे छे मात
॥१११०॥ जेणे दीधी मुजने आशीश ॥ जवो पुत्र करो
ड वरीश ॥ अंतरमां वीमासण करे ॥ हृदयमां मात
सांभरे ॥११११॥ मारी पुत्री रूडी हती सार ॥ तेनो विजो
ग छे अपरंपार ॥ किनपा करजो देव मोरार ॥ जईने म

ણુ આણીવાર ॥૧૧૨॥ ॥પૂરવછાયા॥ ॥
એમ અણી રેવે સહી ॥ ચિંતા કરે અપાર ॥ વળતી જોશી
ત્યાંસહી ॥ ને કુલવંતી નાર ॥૧૧૩॥ જમા જમા મુજ કું
થજ ॥ શું ઉપજ્યું કુમ જ ॥ વાત કરો મુજ આગળે ॥ તેમ
તમને થાય સુજ ॥૧૧૪॥ કોણે તમને દુભીયાં ॥ શું જો
ની મલાવતી નાર ॥ મુજ ની ચણિકની દિકરી ॥ દુઃખ્યા
કંઈ લગાર ॥૧૧૫॥ કહેણ કેની દિકરી ॥ જોરતી છે કે
ઈ વાણ ॥ સાચું જોસો કંઈ ॥ કહો મુજ નિરવાણ ॥૧૧૬
॥ રાજ્યમાં કંઈ દુભીઆ ॥ એમ નયને આવ્યાં નીર ॥ તે
માટે મુજને કહો ॥ કે સુજ નથી શરીર ॥૧૧૭॥ ॥
ચોપાઈ ॥ ॥ સાચું કહોને મારા સ્વામ ॥ શું ન
થી તમને આરામ ॥ હું આઉં તમને જાનિહાર ॥ તમને જ
મા જમા લગાર ॥૧૧૮॥ સુંદર જોવ્યો મુજથી ચે
ન ॥ સાંભળ વાત મારી કામન ॥ મુને વરસ થયાં છે-
ઝાર ॥ દેશ મુકયોને આવ્યો આ ઠાર ॥૧૧૯॥ હવે જ
ણી મારે તીહાં ॥ મલાવતીને તું સમજાવ ॥ તારી ઉપ
રાજે છે ભાવ ॥૧૨૦॥ ત્યારે જોશી કુલવતી નાર ॥ તમે
સુણોને મારા ભરથાર ॥ મુને પણ સાંભરી મારી માય
દશ વરશ વહીને જાય ॥૧૨૧॥ પછી રજની વીતી ત
તકાલ ॥ એટલે થયો પ્રાતઃકાળ ॥ ત્યાં આવી મલાવ
તીનાર ॥ જીકે આવી ચાંપાની કુમાર ॥૧૨૨॥ કુલવ-
તી જોસીરે વચન ॥ સાંભળો મલાવતી કામન ॥ સાંભળ
તું ચાંપાની કુમાર ॥ એક ઉપન્યો છે મનમાં વિચાર ॥
૧૨૩॥ આપણ કહીએ ને હાસ્યવચન ॥ દુઃખ ઉપન્યું તે
નું મન ॥ સ્વામી ચિંતા કરે છે અપાર ॥ આંજે ભરે આંસુની
ધાર ॥૧૨૪॥ તેને સાંભરે છે માત તાત ॥ પછે સરવે માની
વાત ॥ મલાવતી સાંભળ તું વચન ॥ તું તો સુણ લક્ષ્મસેનની

तन ॥१२२४॥ समजवो तमारो जाप ॥ मुज थाश्ये ने
टले संताप ॥ आपणे जवुं सासरे जाण ॥ त्यारे प्रेमा
वती जोशी वाण ॥१२२५॥ सासरे जश्ये छे सहु नारा॥
जेम थाश्यो जश्ये छे संसार ॥ समजवुं पीताने सोय ॥
तेनो नाकार करे न कोय ॥१२२६॥ ॥ पूरवछाया॥
॥ ॥ ते दिवस जेम चहिगये ॥ संध्या समे निर
धार ॥ दंपतिरेथी आविया ॥ सुंदर ने कामदार ॥१२२७॥
आवीने भोजन कर्यां ॥ सुवा गयो कामदार ॥ प्रेमावती
ना मोहोलमां ॥ आव्यो तेणे ठार ॥१२२८॥ पुष्प सज्या
पाथरी ॥ ते ऊपर पोढ्यो जाण ॥ मुज आंखुं त्यां देखी
ने ॥ जोशी मुजथी वाण ॥१२२९॥ शा माटे तमे जाण-
जश्या ॥ कहोते मुजने वात ॥ जेम कहो तेम हुं करुं ॥ चिं
ता टाळो नाथ ॥१२३०॥ त्यारे सुंदर जोशीओ ॥ तुं सां
भळ राजकुमार ॥ देश मुने जकु सांभरे ॥ वरश थयां
छे चार ॥१२३१॥ ते माटे जश्युं सही ॥ पिता देश मो
जार ॥ मन गमे तो आवजे ॥ थारे लेशां नार ॥१२३२
॥ ॥ चोपाई ॥ ॥ तमे थारे छो गम
न ॥ वात आवे तमारे मन ॥ अमे जश्युं अमारे घेर
॥ दिवस थया घणा जकु पेर ॥१२३३॥ नव जोशी प्रे
मावती नार ॥ तमे सांभळो मारा भरथार ॥ जेम कहो
तेम अमो करीश्ये ॥ वात तमारी चित्तें धरीश्ये ॥१२३४
॥ एक वातनो कहिश्ये विचार ॥ तमे सांभळो मारा भ
रथार ॥ कयो देशने कीयुं गांम ॥ कोण मात तात शीयो
नाम ॥१२३५॥ केम निसर्यां छो परदेश ॥ हजु छो त-
मे जाळे वेश ॥ तेतो वात कहोने जरी ॥ अमे सांभळी
ये चित्तें धरी ॥१२३६॥ ॥ पूरवछाया॥ ॥
नव सुंदर वळतो जोशीओ ॥ सांभळरे तुं नार ॥ वात मा

डी कहुं तुजने ॥ तेह तणो विचार ॥ ११३७॥ कनकवती
नगरी सही ॥ त्यां कनकसेन राजन ॥ धार लाई अभोज
रा॥ मानो सत्यवचन ॥ ११३८॥ ॥ चोपाई॥
॥ ॥ चीताऐं कह्युं चारने वचन ॥ केने नशीजे
जमो छो अन्न ॥ तेतो कहोने सत्यवचन ॥ नहिंतो का
हुं ततक्षण वंन ॥ ११३९॥ आण लाई जोल्या वचन ॥ त
मारे नशीजे जमीऐ अन्न ॥ पछे मुजने पुछ्युं राजन
॥ केने नशीजे जमे तुं अन्न ॥ ११४०॥ त्यारे मनमां क-
र्यो विचार॥ जुठुं न जोलुं लगार ॥ त्यारे जोल्यो वचि
न साक्षात ॥ नशीज करे ते साची वात ॥ ११४१॥ ओम
जोल्यो हुं निरधार ॥ तेणे जनम दीधो संसार ॥ चिचल
रपुरे सरवेने जंन ॥ चीता मानोने मुज वचन ॥ ११४२॥
॥ ॥ पूरवछाया॥ ॥ वात ओवी सांभ
णी ॥ राजने चडी रीस ॥ काहाडो ओने वन विषे ॥ न
हिंतर छेदीश शीश ॥ ११४३॥ माटे त्यांथी निसर्यो ॥
आव्यो रतननगरी मांहाय ॥ रतनसेन राजा जरो ॥ पी
ता कुलवतीनो त्यांहाय ॥ ११४४॥ घणा दिवस त्यांहा र
ह्या ॥ आव्या आणे ठाम ॥ ते पछी वजीर थयो ॥ कर्युं
राजनुं काम ॥ ११४५॥ जीजी वात जे नीपनी ॥ ते सर
वे जाणो जार ॥ जयुं अमारे देशके ॥ सत्य कहुं निरधा
र ॥ ११४६॥ ॥ चोपाई॥ ॥ ओम वात कही
कामन ॥ तव मुजथी जोली जामन ॥ तमे सांभळो मा
री वात ॥ जई समजावुं मारो तात ॥ ११४७॥ हास्य विनो
द कर्यो कामदार ॥ आव्या कुलवतीने द्वार ॥ कुलवती जो
ली मुज सार ॥ तमे भले आव्या भरथार ॥ ११४८॥ त
व जोली रतुकार ॥ विचार शुं कीधो नरने नार ॥ जम
आगळ कह्यो ते वात ॥ तमे सांभळो मारा भ्रात ॥ ११

॥ ॥ पूरव छाया ॥ ॥ सुंदर बलतो बोली
ओ ॥ सांभल तुं रतुकार ॥ देश आपणे मुकीयो ॥ थयां वर
स बार ॥ ११५० ॥ हवे सांभली सही ॥ कीधो ओ विचार ॥ व
चन ओवां सांभली ॥ राजा थई रतुकार ॥ ११५१ ॥ कुलवती
बण तुं कहे ॥ सांभलो मोरा स्वाम ॥ वेहेला थईने परवरो ॥
करवुं वेहेवुं काम ॥ ११५२ ॥ पछी भोजन करी नीसर्या ॥ आ
व्या राज दुवार ॥ भरसेन ओम बोलीआ ॥ भले आव्या का
मदार ॥ ११५३ ॥ जे घडी ओम जेठ सही ॥ तव दीठुं चंच
ल मन ॥ आंजु मुज देजी करी ॥ तव बोल्यो राजन ॥
॥ ११५४ ॥ ॥ चोपाई ॥ ॥ त्यारे मुजथी बोल्यो
राजन ॥ आंजु मुज देजी परधान ॥ ने वात होओ तम रेह
॥ ते साचुं तुं अमने वदे ॥ ११५५ ॥ त्यारे सुंदर बोल्यो तेणी
वार ॥ सांभलो राओ करुं कुं विचार ॥ अमे भर्युं अमारे
भोवन ॥ हवे जवानुं थयुं छे राजन ॥ ११५६ ॥ बार वरस
अमने वही गयां ॥ माटे हवे न जओ रह्यां ॥ साचुं तम
ने कहुं छुं राय ॥ हवे अमने करो विदाय ॥ ११५७ ॥ त्या
रे राजा बोल्यो मुजथी वाण ॥ सांभल तुं सुंदर चतुर सु
जाण ॥ तम विना अमने नव रे हवाय ॥ घडी ओक वर
स सोनी थाय ॥ ११५८ ॥ अहीं तमे भोगवो राज ॥ त्यां
गयानुं शुं छे काज ॥ थनार हशे ते देशुं थवा ॥ पण न
हिं देउं तमने जवा ॥ ११५९ ॥ त्यारे सुंदर बोल्यो सार
॥ अमने वरस थयां छे बार ॥ हवे शीज दियो राजन
॥ तमने छेल्लुं कहुं वचन ॥ ११६० ॥ ॥ पूरव छा
या ॥ ॥ राजा हशीने बोलीयो ॥ भेर तणुं नहिं
काम ॥ चार दिवस रहो तमो ॥ आपणा तमारे गाम ॥
॥ ११६१ ॥ तव जुहार करीने नीकल्यो ॥ सुंदर तेणीवार
॥ वेगे चाली आवीओ ॥ पोता केरे द्वार ॥ ११६२ ॥ ॥

॥ ॥चोपाई॥ ॥आव्यो सुंदर पोताने
द्वार ॥ त्यारे जोशी करे उचार ॥ कह्यो शुं जोया राजन ॥ तेतो
कह्यो जमने वचन ॥१६३॥ पछी जेठी च्यारे कामिनी ॥ जो
शी साकर जाई भामिनी ॥ तमो सांभळो मारा कंथ ॥ केम न
चाल्युं कह्यो छो पंथ ॥१६४॥ च्यारेनुं त्यारे मान्युं मन ॥ आप
णे देश जईए कामन ॥ तव जोशी वणिकनी जाण ॥ तमे ग
मे ते करो तत्काळ ॥१६५॥ [illegible]राई कीधी कामदारें ॥ च्यारे
नारी थई तईआर ॥ तेडुं आव्युं राजनुं सार ॥ मोहोले प
धारो तमे कामदार ॥१६६॥ तम विना न सुझे लगार ॥ तेतो
मानुं साच्चो निरधार ॥ करे सज्ज करीने घणी ॥ जरथी स्यो
रूपी आगणी ॥१६७॥ पेहेरामणी घणी कीधी राय ॥ सुंद
र चालवा तत्पर थाय ॥ साथे सैन्य तणो नहिं पार ॥ रथ तै
यार कराव्या सोच्यार ॥१६८॥ ॥पूरव छाया॥ ॥
दुंदुभी वाज्यां गडगड्यां ॥ नदी पोकारे ललकार ॥ सैन्य तई
यार थयुं ॥ राय आव्यो तेणी वार ॥१६९॥ सुंदर ऊठ्यो
तरतशुं ॥ राजनने देतो मान ॥ हुल हुल करीने भेटीयो ॥ अ
सवार थयो परधान ॥१७०॥ सैन्य सरवे निसर्युं ॥ नगर
जाकार तेवार ॥ पाछलथी वळी आवियां ॥ राजनने वळी का
मदार ॥१७१॥ हवे भणी पाछा वळ्या ॥ चाल्या माजनने रा
य ॥ त्यांथी जवा जे परवर्या ॥ हो हो मनले जाय ॥१७२॥
॥ ॥चोपाई॥ ॥दिन सात थया तेणी वार
॥ आव्या रत्नपुरीमां सार ॥ कुलवतीनो तात छे जिहां ॥ अ
वी तंबु दीधो तिहां ॥१७३॥ त्यारे जाण्युं कुलवती नार ॥ मा
हरे पीयर आव्या कामदार ॥ रतनसेने सांभळी वात ॥ को
ई आव्या पृथ्वीनो नाथ ॥१७४॥ जेने कटक तणो नहीं
पार ॥ हवे हुं शुं करशुं कामदार ॥ राजपुत्र बोल्या वचन
॥ मोटा भूपन भाव्या राजन ॥१७५॥ आपणे पण नमी

ओ राजन ॥ तेजपालें कह्यां वचन ॥ ओक अचंभ करी तमें आज
॥ तेणे शणगार्यो ते नगर ॥१७६॥ सुवर्ण थाल ते लीधो
त्यांय ॥ भर्या हिरा रतन तेमांय ॥ राजा पाळो थयो तेणी
वार ॥ लइ लेईने चाल्यो कामदार ॥१७७॥ आव्या साम
थाली राजन ॥ त्यारे सुंदरें विचार्युं मन ॥ ओने लईं हुं आ
नंद भेर ॥ पछे जणशे सघली पेर ॥१७८॥ ॥
पूरव छाया ॥ ॥ जे पिता कुलवती तणो ॥ तेने देईं
अें मान ॥ ओटले आवीने मळ्या ॥ रतनसेन राजन ॥१७९
॥ रतनसेन जणे नहिं ॥ सुंदर छे कामदार ॥ त्यारे जाहु
र नीशरी ॥ पोते रतुकार ॥१८०॥ पीताजी आवो अहीं
॥ तेडे तमारी जाण ॥ रतुकारने दीठी सही ॥ विस्मे थयो
नृपाल ॥१८१॥ बाप दीकरी बन्ने मळ्या ॥ हर्खे आ-
णंदते राय ॥ चोवट सघळी जोई रह्यो ॥ डगमग थ
ली थेय ॥१८२॥ ॥चोपाई॥ ॥
कुलवती बोली वचन ॥ जमात्रने मळो राजन ॥ पछे
मळ्या ससरो जमात्र ॥ जेम कुशलनी पुछी वात॥१८३
॥ पछे शेहेरमां आव्यो राय ॥ ससरो जमाई आगल
थाय ॥ तेन पाल चाल्यो परधान ॥ तेणे तो दीधां घणा
मान ॥१८४॥ आव्या नगर मोजार ॥ हरज पाम्या स
हु नर ने नार ॥ पछे भोजन कराव्यां राजन ॥ दिधां ल
शकरने भोजन ॥१८५॥ प्रधान करे छे नोतरे ॥ नगर
आखुं त्यां भोजन करे ॥ पछे थयो त्यां संध्याकाल ॥ ज
मी रह्यां सहु जाण गोपाळ ॥१८६॥ पछे दरबार कुंवे
री मले ॥ पासे चोसट दीवा बळे ॥ जंदीजन त्यां करे व
खाण ॥ लवो लवो सुंदर राजन ॥१८७॥ रतनसेन
आहुरांज थाय ॥ लले आव्या तमे सुंदरराय ॥ मानाल
य तणो नही पार ॥ आज सफल थयो अवतार ॥

॥११९॥ कुलवती सुती हिंडोले ॥ तेने दासी ओ चाळु
कोले ॥ प्रभावती सुती रे पलंग ॥ वणीक पुत्री लेती संग
॥१२०॥ सुती बांधी फेरी जाल ॥ अेम सुती स्त्री-
थाल ॥ पछे सुंदर सुतो पास ॥ सरवेने घणो उल्लास
॥१२१॥ पुछे राजा कनीपेर ॥ तमने प्रभुअे कीधी मे-
हेर ॥ केम परण्या चार कन्याय ॥ नेतो वात करोने राय ॥
॥१२२॥ सुंदर बोल्यो धरी ज्ञान ॥ जणुनां प्रभुअे की-
धुं दान ॥ आवी वात मा पुछो राय ॥ अेमां थनार होय
ते थाय ॥१२३॥ त्यारे राजा समजे मन ॥ पाछो बो-
ल्यो नहिं वचन ॥ राजा मुजथी अेमन बोले ॥ सुंदर
ने कोठे नावे तोले ॥१२४॥ ॥पूरवछाया॥ ॥
ते रजनी अेम वही गई ॥ थयो प्रातःकाळ ॥ मुजमार्जन कीधुं
रायजा ॥ समर्या श्रीगोपाळ ॥१२५॥ पछी सभामां आ-
वीआ ॥ सुंदर राजा जण ॥ बंदीजन त्यां आविया ॥ ते क-
रता बहु वखाण ॥१२६॥ भाट चारण गुण गांधर्व ॥
बोले जयजयकार ॥ तेने दान आपतां ॥ ते हरखे अ-
परंपार ॥१२७॥ ॥चोपाई॥ ॥बहु हर-
ख पाम्यो राय ॥ पछे भोजननी वेळा थाय ॥ आव्या भोज-
न करवा राय ॥ आरोगी मन राजी थाय ॥१२८॥ दीधां मु-
खवास अेलची पान ॥ पासे बेठा राजा प्रधान ॥ पछे
पंड्याने तेड्यो जाण ॥ सुंदरें दीठी कर्यो प्रणाम ॥१२९॥
॥आगता स्वागता कीधी जाण ॥ सुंदर बोल्यो त्यां निर-
वाण ॥ आपो मोहोर ते अेक हजार ॥ पंड्यो हरख पाम्यो
अपार ॥१३०॥ ॥पूरवछाया॥ ॥आशीर्वा-
वचन पंडे कह्युं ॥ चिरंजीवी तुं राय ॥ अेम कहीने संचर्यो
॥ पोताने मंदीर जाय ॥१३१॥ सुंदर आव्यो मोहोलमां ॥
कुळवती तेडी सार ॥ आपण हवे चालशुं ॥ थाओ तमे तै

आर ॥१२०२॥ एम कहीने पाछो चाल्यो ॥ आव्यो सला
मो जर ॥ रावत राव जेठा सहु ॥ तेणे कर्यो जुहार ॥१२०३
॥ ॥ चोपाई ॥ ॥ दिवस ते एम वहिने
जाय ॥ संध्याकालनी वेला थाय ॥ राय बोल्यो मुजथी
चाए ॥ ले पधारो चतुर सुजाण ॥१२०४॥ पछे आ
व्यो पोताने द्वार ॥ भोजन कीधां तेणी वार ॥ मली जेठ
पोते राजन ॥ त्यारे सुंदर बोल्यो वचन ॥१२०५॥ एम
ने सीख आपो तमे राय ॥ एमने दिवस ते घणा थाय
॥ राय बोल्या मुजथी चाय ॥ तमे सांभलो चतुर सु
जाण ॥१२०६॥ चार दिवस तमे रहो राय ॥ वन घडी व
न वेला कहेवाय ॥ त्यारे सुंदर बोल्यो वचन ॥ सेन घणुं
लेऊं छे राजन ॥१२०७॥ नहि रहेशुं अमे अध घडी ॥
त्यारे राजा बोल्यो वली ॥ एमां जेर तणुं नहिं काम ॥
सुखें पधारो तमे राजन ॥१२०८॥ ते पण रजनी वहीने
जाय ॥ सवारे सामग्री थाय ॥ जीरोकर मंगाव्या सा
र ॥ त्यां तो दोशीने तेड्या अपार ॥१२०९॥ घाट जंगा
ली सावकां जेह ॥ पेरामणी कीधी तेह ॥ कर्या रायजी
ते अपरंपार ॥ चर्छ रह्यो त्यां जयजयकार ॥१२१०॥ ॥
पूरव छाया ॥ ॥ पेरामणी कीधी जहु विधनी
॥ पांच शात आप्या तोखार ॥ गजरथ आपी पालखी
॥ आप्या गरथ लंगार ॥१२११॥ शोल शणगार आप्या कु
वीने ॥ हीरा रतन जडाव ॥ वस्त्र अनुपम आपीयां ॥ आ
प्या नवसर हार ॥१२१२॥ पुत्री वलावी प्रेमशुं ॥ सुंदर थ
यो असवार ॥ सैन्य अनगळ चालीयां ॥ तेह तणो नं-
हिं पार ॥१२१३॥ तुखार लेली संचरी ॥ जीजी दासी अ
नेक ॥ सुंदर चालतो बोलीयो ॥ राजा करोने छेक ॥१२१४
॥ ॥ चोपाई ॥ ॥ हवे राजा वधाववा जाय ॥

नीशान वाजां जो आगळ थाय ॥ तेजपाल भेलो काम-
दार ॥ वजावया अजे नर ने नार ॥१२१५॥ सहु आव्यां
अेक अेकन ॥ पडी रात त्यां कीधुं भोजन ॥ तंबु डीला
कीधा ते सार ॥ राते सुखी थयां नर ने नार ॥१२१६॥ वि-
ती रजनीने उग्यो दिन ॥ शीख मागी त्यारे राजन ॥ पाछं
वलायां कुटुंब परिवार ॥ सरवे सुंदर ने करे जुहार ॥१२१७
॥ शीख मागीने वळीया तेह ॥ हरख पामे सुंदर तेह ॥
वजडाव्यां ते ढोल नीशान ॥ मागण जन करे जस वखाण
॥१२१८॥ जेटला आवे आड देश ॥ धन आपी नमी नरे-
श ॥ घर मास अेम वहीने जाय ॥ कनकावतीअें पोहो-
च्या राय ॥१२१९॥ त्यां छे कनकसेन नरेश ॥ तेतो जोर्ठे जे-
ठछे देश ॥ गाम अेक रह्युं छे सार ॥ ते मांहे रहे छे जाळ गो-
पाळ ॥१२२०॥ जीत्या पोताना जे छे देश ॥ लुटी लीधा अ-
न्य नरेश ॥ जेना भाग्यमां हतुं राज ॥ सुंदर कहाडी मु-
क्यो महाराज ॥१२२१॥ दुरबुधि आवीने राजन ॥ तेणे की-
धुं घणुं अभिमान ॥ अभिमान जे प्राणी करे ॥ तेतो-
निश्चें भुजे मरे ॥१२२२॥ अभिमान रावणे कीधो ॥ रा-
मे मारीने लंका लीधो ॥ गर्व कीधो ते दुरजोधन ॥ तेतो
पाम्यो घणो विघन ॥१२२३॥ शतभाई तेने कहेवाय ॥ ते
तो मूळ सहीत जाय ॥ अरजुनें कीधो अभिमान ॥ तेने दु-
भव्या श्री भगवान ॥१२२४॥ राजपाट ते खोयुं राय ॥ बार व-
रस महा दुःखीयां थाय ॥ माटे न धरवुं अभिमान ॥ पछे वी-
गास्या भगवान ॥१२२५॥ अभिमान समुद्रें कीध ॥ अगस्तें
अंजलि मन करी लीध ॥ अेम जे करशे अभिमान ॥ तेमां-
दुभावे श्री भगवान ॥१२२६॥ ॥ पूरवछाया ॥
॥ ॥ अभिमान कीधुं रायजे ॥ तेणे गयुं जिननुं राज
॥ सुंदर जे आवे सही ॥ तो शुं थाये काज ॥१२२७॥

ल आव्या सीममां ॥ तप राजा कंप्यो मन ॥ एक गाम
छे माहरे ॥ ते जशे जगजीवन ॥१२२८॥ हवे तो हुं शुं क
रुं ॥ करुं कोण उपाय ॥ धन मुजने मले नहीं ॥ शुं आपी
लागुं पाय ॥१२२९॥ सुंदर पुत्र में काढीओ ॥ करमी हतो जे
ह ॥ त्रणे पुत्र अलागिया ॥ दुःख जकु पाम्यो तेह ॥१२३०
॥ ॥चोपाई॥सोरठ॥ ॥सुंदर पुत्र हतो हुशी
यार ॥ तेने काढ्यो वन मोजार ॥ जो होय तो दीजे कोणना
म ॥ करे मनंग केरी हाम ॥१२३१॥ राजा करे छे जकु रूद
न ॥ लोक रुवाये मारो तन ॥ ते तो वली में काढ्यो वन ॥ पुत्र
जोयो में हाथथी रे ॥१२३२॥ सुंदर पुत्र जो माहारे होय
॥ तो मुज गांजि न शके कोय ॥ एम कही रुवे राजन ॥ पु
त्र जोयो में हाथथी रे ॥१२३३॥ सुंदर मारो प्राण आधार
॥ हवे हुं कयुं नहीं लगार ॥ निश्चे मारे पेट कटार ॥ पुत्र
जोयो में हाथथी रे ॥१२३४॥ राजा मुजथी जोल्यो वाण ॥
हवे हुं काढुं मारा प्राण ॥ जीव्युं शुं आवे ओशाण ॥ पुत्र जो
यो में हाथशुं रे ॥१२३५॥ कटक आव्युं माहारे गाम ॥ तेनो
मारे लेवो नाम ॥ ते माटे मरुं आठाम ॥ पुत्र जोयो में हाथ-
थी रे ॥१२३६॥ एम कही काढ्यो कटार ॥ हवे मरुं छुं आणे
ठार ॥ हाथें जई वळग्यो कामदार ॥ धीरज धारो मन लगा
र ॥१२३७॥ ॥दूहा छंद॥ ॥प्रधान वाणी-
बोलीओ ॥ सांभळ रे राजन ॥ करो उपाय तमने कहुं ॥ धीर
ज राखी मन ॥१२३८॥ ॥चोपाई॥ ॥तमे धीरज रा
खो मन ॥ एक अश्व लीयो राजन ॥ तेने शणगारो रुडी पेर ॥
पूजा सामग्री लीजो घेर ॥१२३९॥ वाहाला थईने नीसरो
जहार ॥ साथे जोयवा नहीं हथी आरा ॥ कये सुतर जा
धो हाथ ॥ नहीं जोसे पृथ्वीनो नाथ ॥१२४०॥ पछे तेकरी उ
पाय ॥ एम राजा मलवा जाय ॥ तेना थाल्या राजा प्रधान ॥

आव्या लश्करने मुकाम ॥१२४१॥ आडणीला छे छडीदार
॥ तेणे झीला राजा तेणार ॥ जई रहे लाई तुं अही ॥ हुकम
नहीं जावनेंदा तही ॥१२४२॥ सुंदर पासे गयो छडीदार ॥ डो
ई आया हे तम जुहार ॥ तेणे कही मुजथी वात ॥ कोणे हे पृ
थ्वीका नाथ ॥१२४३॥ लेख्या जन्या हे अपार ॥ सुणे जेणा
हे तम जुहार ॥ नेत्ना कुंकुम भराया राय ॥ त्यारे सुंदर वि
स्मे थाय ॥१२४४॥ सुंदर बीडो [illegible] ॥ हाथ जोडी
छोड्यां हथीयार ॥ पीता दर्से [illegible] तन ॥ नीर वहे जे करे
छे रुदन ॥१२४५॥ राजा आव्यो तंबु मोझार ॥ आवी सुंद
रने कीधो जुहार ॥ सुंदर सामो आव्यो तांहे ॥ राजा विस्मे पा
म्यो मन मांहे ॥१२४६॥ ॥ पूरव छाया ॥ ॥
राजा त्यां विस्मे थयो ॥ आतो सुंदर तन ॥ जोतां आंसु आ
वियां ॥ लखो नुं नगर [illegible] ॥१२४७॥ सुंदर थतो जोली
यो ॥ [illegible] छो [illegible] ॥ हुं तो पुत्र तम तणो ॥ सां
भळो मारी वात ॥१२४८॥ ॥ चोपाई ॥ ॥ राजा
मन थी थयो रळियात ॥ लई जेणे पुत्रनी साथ ॥ हरख
आंसु आवे नेह ॥ बाथ करीने भेट्या तेह ॥१२४९॥ पछे
आव्यो ते नगर मोझार ॥ सरवे घोडे थया असवार ॥
त्यांथी चाली आव्या गाम मांहे ॥ माणस मळीयां जोवा
त्यांहे ॥१२५०॥ नगर तणी नारी सोय ॥ ते तो मळी सुंद
रने जोय ॥ लखे आव्या ते राजकुमार ॥ एम कहे सहु नर
ने नार ॥१२५१॥ सुंदर आव्यो राजदुवार ॥ आवी मा
ताने कीधो जुहार ॥ लाई लोजई जेणी जाण ॥ लेटी रु
दन करे प्रमाण ॥१२५२॥ माता रुदन करे छे अपार
॥ नयने आंसु वहे चोधार ॥ सुंदर तेने दिये छे धीर ॥
आपणे सहाय थया रघुवीर ॥१२५३॥ त्यारे वधुअर वा
गे थाय ॥ सासुने मन हरख न माय ॥ मध्यान काज थयो

जेटले ॥ भोजन कर्यां तेटले ॥ १२५४ ॥ लश्कर आगु भो
जन करे ॥ राजा हरख ते मनमां धरे ॥ भोजन कीधां सुंद
र राय ॥ आनंद ओछव त्यां बहु थाय ॥ १२५५ ॥ ॥
पूरव छाया ॥ ॥ घणा दिवस एम वही गया ॥
सुंदर बोल्यो वचन ॥ जे आपणा नगर हतां ॥ ते के
णे लीधां राजन ॥ १२५६ ॥ त्यारे राजा वळतो बोली-
यो ॥ सांभळ तुं मारी वात ॥ केटलाक घरेणे मुक्यां स
ही ॥ वर्ष थयां छे सात ॥ १२५७ ॥ केटलांक छुटी लई ग
या ॥ जाणिया हुता जेह ॥ हवे तमे तो आवीया ॥ क
हुं थाजे तेह ॥ १२५८ ॥ सुंदर वळतो बोलीयो ॥ घरे
णे मुक्यां सार ॥ धन आपीने तेहने ॥ पाछां ल्यो निर
धार ॥ १२५९ ॥ जेने पासे मुकीयां ॥ तेने तेड्या आण
॥ आवीने ऊभा रह्या ॥ बोल्या मुखथी वाण ॥ १२६०
॥ लेणुं होय ते लीजीए ॥ ल्यो ने तमारां गाम ॥ धन
अमारे आपीये ॥ एमां नहीं घणुं काम ॥ १२६१ ॥
तेणां कीधां त्यां सही ॥ धन आप्युं अपार ॥ जेना जेट
ला घोडा ॥ दीधा राजकुमार ॥ १२६२ ॥ ॥
चोपाई ॥ ॥ घोडा आप्या ते परधान
॥ धन्य धन्य सुंदर राजान ॥ सुंदरने आनंद मन-
माय ॥ धन आपीने लीधां ताय ॥ १२६३ ॥ जीत्यां गा
म गयां तां सार ॥ युध्ध करीने लीधां तेणी वार ॥ आ
ज सुंदर जेवो न कोय ॥ जेहने सहु राजा होय ॥ १२६४
॥ एम वर्णताण कहे सुणो राय ॥ एतो हरीपूजानां
फळ थाय ॥ जेणे विप्रने आप्यां अन्न ॥ जेणे ज्ञाति
ने कराव्यां भोजन ॥ १२६५ ॥ फळां तीरथ करे नर कोय
॥ एतो हरीपूजानां फळ होय ॥ घोडा हस्ती बांध्या
द्वार ॥ मोटा पुत्र करे वेपार ॥ १२६६ ॥ परिवार राजानो

सरव ॥ तेनो उतर्यो मननो गरव ॥ पछे सोंप्युं सुंदर
ने राज ॥ कनकसेन समरे जगराज ॥ १२६७ ॥ ॥
पूरव छाया ॥ ॥ राज सोंप्युं अति रीझथी ॥
सुंदरने तेवार ॥ सज्जन सहोदर हरजीयां ॥ मनमां अ
परंपार ॥ १२६८ ॥ सुंदर कथा रळिआमणी ॥ सुणजो
राजीलाय ॥ मनइच्छित फळ पामशो ॥ आ जगमांसु
ल लाव ॥ १२६९ ॥ श्रोता वक्ता सांभळशे ॥ कहे कविता
कर जोड ॥ रात दिवस मुजथी वधो ॥ जय जयश्री रण
छोड ॥ १२७० ॥ धीरज धारे मन विषे ॥ तेनो जेवो रा-
म ॥ मुजथकी जय मूकवुं ॥ उत्तम हरीनुं नाम ॥ १२७१
॥ सुंदरने सुख पामीयो ॥ परमेश्वर प्रताप ॥ सज्जन-
सरवे समरजो ॥ मुक्त थशो सहु पाप ॥ १२७२ ॥ ॥
इति सुंदर कामदारनी वारता संपूर्ण ॥ ॥

॥ समाप्त ॥

સમાપ્ત